302

श्रीः

# सप्तविंशति रहस्यम्

(गुरुमण्डल – आम्नायक्रमः)

प्रणेतारः
**श्री स्वामिनः**
सर्वतन्त्रस्वतन्त्राः निगमागमतन्त्रपारीणाः
परमहंसपरिव्राजकाचार्याः
श्री पीताम्बरापीठाधीश्वराः राष्ट्रगुरुवः

**श्री पीताम्बरापीठ संस्कृत परिषद**
बनखण्डेश्वर, दतिया

श्रीः

# सप्तविंशति रहस्यम्

## (गुरुमण्डल – आम्नायक्रमः)

Dr. B. N. Pandit, Shastri
M. A. M. O. L.
Ph. D. in Kashmir Saivism

प्रणेतारः
**श्री स्वामिनः**
सर्वतन्त्रस्वतन्त्राः निगमागमतन्त्रपारीणाः
परमहंसपरिव्राजकाचार्याः
श्री पीताम्बरापीठाधीश्वराः राष्ट्रगुरुवः

**श्री पीताम्बरापीठ संस्कृत परिषद**
बनखण्डेश्वर, दतिया

प्रकाशक :
श्री पीताम्बरापीठ संस्कृत परिषद्
श्री पीताम्बरापीठ
बनखण्डी, दतिया (म. प्र.)

मूल्य ७.०० रु.
प्रथम संस्करण – संवत् २०३३
१००० प्रतियाँ

मुद्रक :
स्वाती एण्टरप्राइज
२०, ग्रेट नाग रोड
नागपुर–९

# श्री सप्ततिंशति रहस्यस्य

## विषयानुक्रमणिका


| विषयः | | पृष्ठम् |
|---|---|---|
| १. | उपोद्घात ... | १-२० |
| २. | मङ्गलाचरणम् ... | १ |
| ३. | श्रीगुरु पादुका मन्त्र ... | १-२ |
| ४. | दिव्यौघ, सिद्धौघ, मानवौघ कादि परम्परा ... | २-४ |
| ५. | शुद्ध परम्परा ... | ५ |
| ६. | लोपामुद्रा परम्परा ... | ६ |
| ७. | कामराज परम्परा ... | ८ |
| ८. | गुरुत्रयम् ... | ९ |
| ९. | महागणपतिः ... | ९ |
| १०. | पीठत्रयम् ... | १० |
| ११. | भैरवः ... | ११ |
| १२. | सिद्धौघः ... | १२ |
| १३. | बटुकत्रयम् ... | १३ |
| १४. | पदयुगम् ... | १४ |
| १५. | दूतीक्रमम् ... | १५ |
| १६. | मण्डल त्रयम् ... | १६ |
| १७. | दशवीराः ... | १७ |

| विषयः | | पृष्ठम् |
|---|---|---|
| १८. चतुः षष्टि सिद्धाः | ... | १८-२३ |
| १९. मुद्रानवकम् | ... | २३ |
| २०. वीरावली पञ्चकम् | ... | २४ |
| २१. मालिनी तथा मन्त्रराजः | ... | २५ |
| २२. पूर्वाम्नायः | ... | २६-३४ |
| २३. दक्षिणाम्नायः | ... | ३५-४० |
| २४. पश्चिमाम्नायः | ... | ४०-४३ |
| २५. उत्तराम्नायः | ... | ४४-४७ |
| २६. ऊर्ध्वाम्नायः | ... | ४८-५० |
| २७. अनुत्तराम्नायः | ... | ५१-५२ |
| २८. चरणवासनाः | ... | ५३ |
| २९. पञ्चाम्बाः | ... | ५५ |
| ३०. नवनाथाः | ... | ५५ |
| ३१. षोडशाधार विद्या | ... | ५६ |
| ३२. षडाधार विद्या | ... | ५७ |
| ३३. षड् दर्शनम् | ... | ५८ |
| ३४. वाग्देवताष्टकम् | ... | ५८-५९ |

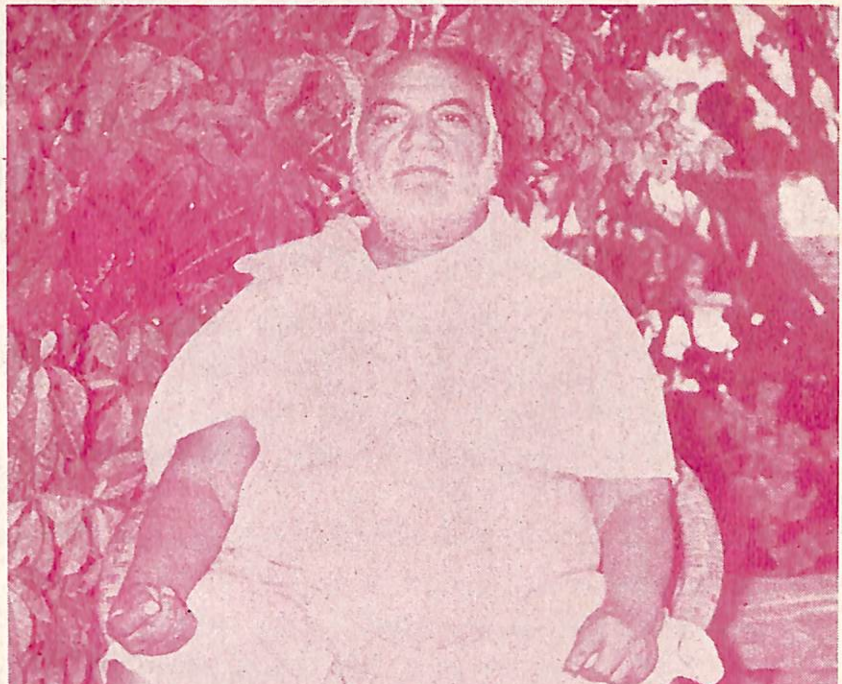

परमहंस
श्री पीताम्बरा पीठाधीश्वर राष्ट्रगुरु परमपूज्य
श्री १००८ श्री स्वामी जी महाराज, वनखण्डेश्वर, दतिया

# उपोद्घात

चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादाः ।
द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य ।।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति ।
महोदेवो मर्त्यॉ आविवेश ।।

वैदिक, पौराणिक, तान्त्रिक, एवं सावर चार प्रकार के मन्त्र जिसके चार सींग हैं, कादि, सादि, हादि उपासना पद्धतियां ही तीन पाद हैं, सोऽहं हंसः अथवा प्रकाश (शिव), विमर्श (शक्ति) जिसके दो मस्तक हैं, वैदिक, शैव, वैष्णव, दक्षिण, वीर, वाम, कौल, ये सात आचार ही जिसके सात हाथ हैं, सूर्य, चन्द्र, अग्नि इन तीन मण्डलों में जो बद्ध है, कामनाओं की वर्षा करनेवाला वृषभ परतत्व ही शब्द ब्रह्म का रूप ग्रहण करता है। यह महादेव ही परा, पश्यन्ती, मध्यमा एवं वैखरी भेदों से जीव मात्र में प्रविष्ट है।

मन्त्र की उपरिवर्णित व्याख्या पूज्यपाद श्री पीताम्बरा पीठ के संस्थापक देशिक प्रवर श्री स्वामीजी की है। उब्बट एवं महीधर आदि आचार्यों ने इस मन्त्र का भाष्य यज्ञ एवं व्याकरण परक किया है। यज्ञ के प्रसङ्ग में कर्मकाण्ड परक ही अर्थ सङ्गत है, व्याकरण परक अर्थ तो केवल भगवान पतञ्जलि के भाष्य का अनुसरण मात्र है। महर्षि यास्क ने निरुक्त परिशिष्ट में इस मन्त्र का अभिप्राय कर्मकाण्ड में ही किया है। मन्त्र में अनाम रूपक है। तप से मन्त्रों के अनेक अर्थ होते ही हैं। पर मन्त्र में 'रोरवीति', क्रियापद होने से व्याकरण परक एवं आगमीय अर्थ ही अधिक संगत है। व्याकरण केवल वैखरी वाणी के ही स्वरूप को बताता है।

जबकि आगम शास्त्र शब्द के परा, पश्यन्ती, मध्यमा इन तीन आन्तरिक स्वरूपों का स्पष्टीकरण करता है, व्याकरण वाचारम्भण मात्र है। जबकि आगमशास्त्र साधना द्वारा शब्द की प्रत्येक वृत्ति की आन्तरिक अनुभूति कराता है, परतत्व का साक्षात्कार भी इसी से होता है। अनादि निधन अक्षर तत्व का परिपूर्ण एवं सर्वाङ्गीण निरूपण एवं शब्द का परब्रह्म रूप में साधन और अनुभव द्वारा उसका साक्षात्कार करना ही आगम का प्रधान लक्ष्य है। अतएव आगमपरक अर्थ ही मन्त्राक्षरों का सही भाव होगा।

शब्द का इतिहास है कि वह बिन्दु से उत्पन्न है। यह बिन्दु क्या है? श्री चक्र का नवमा वरण ही विन्दु चक्र है। इसी का नाम सर्वानन्दमय चक्र है। यह बिन्दु ही सर्वातिशायी है। निर्गुण, निराकार, निरञ्जन ब्रह्म जिसके पर्यायवाची पर शिव अथवा परा श्री त्रिपुर सुन्दरी हैं, उस तत्व का जगत् के निर्माण की दिशा में प्रथम पग है। उसने इच्छा की कि 'एकोऽहं बहु स्याम्' इतने ही में बिन्दु का अवतार हो गया। यह बिन्दु ही भगवान् कामेश्वर एवं भगवती कामेश्वरी का स्वारसिक सामरस्य स्वरूप है। यह बिन्दु ही सर्वोच्च सत्ता है। इसी के अन्तर्गत समस्त विश्व बीज के रूप में समाहित है। यह विश्वोत्तीर्ण है, अनुत्तर शक्तिशाली है, समस्त रचना शक्तियाँ एकत्रित होकर इसमें निवास करतीं हैं। इस घनीभूत तेज के पुञ्ज को चिद्घन अथवा परा संवित् कहते हैं। इसका दूसरा नाम अनुस्वार है जो समस्त वाङमय को जन्म देता है। मातृका सर्वातिशायी महामन्त्र है, उसका जप भी बिन्दु से युक्त करके ही किया जाता है। इसीलिये मातृका मन्त्र के जप के समय अं, आं इत्यादि ही जपते हैं। अनुस्वार रहित नहीं।

कार्यावस्था में कारण की उपस्थिति का यह सर्वोच्च उदाहरण है। अहं शब्द में अकार शिव एवं हकार शक्ति का प्रतीक है। इन दोनों तत्वों की एकात्मता का सम्पादन बिन्दु ही करता है।

अथवा अकार से लेकर हकार तक सभी व्यञ्जनों का अभिव्यञ्जक तत्व ही बिन्दु के रूप में अहं शब्द में विद्यमान हैं। तन्त्रशास्त्र के मर्मज्ञ सर जोन उड्रफ ने अपने ग्रन्थ Introduction to Tantrashastra में

इस प्रकार कहा है:– 'Bindu is the nature of nada of shiva and Bija of shakti and has been said to be the relation of these to be those who are versed in all the Aagamas'.

ललिता सहस्रनाम के सौभाग्य भास्कर भाष्य में देशिक-शिरोमणि भास्कराचार्य ने 'परा प्रत्यक् चिती रूपा' के अर्थ में कहा है कि :–– **"प्रलये सृज्यमानप्राणिकर्मणाम् परिपाकदशायां तादृशकर्माभिन्नमायावच्छिन्नं ब्रह्म घनीभूतमित्युच्यते। स एव जगदङ्कुरः कन्दरूपत्वाद्बिन्दुपदेन व्यवह्रियते"** । प्रपञ्चसार में भी ऐसा ही वाक्य है।

**'विचिकीर्षुर्घनीभूता सा चिदभ्येति बिन्दुताम्'।**

अस्तु, समस्त आगम का प्रधान लक्ष्य बिन्दु ही है और यह समस्त जगत् का आधार भी। अब विश्व-विकास का दूसरा चरण प्रारम्भ करने के लिये शक्ति बिन्दु से पृथक होकर नाद को जन्म देती है। यह बिन्दु की ही शब्दात्मिका वृत्ति है जिसके परा, पश्यन्ती, मध्यमा, वैखरी चार रूप हैं। सृजनोन्मुखी शक्ति के स्पन्दन मात्र से ही सत्व, रज, तम इन तीनों गुणों में कम्पन होने लगता है। गुण विक्षुब्ध हो जाते हैं, जागने के लिए उत्सुक होते हैं, जिसके फलस्वरूप शब्द ब्रह्म का आविर्भाव होता है।

यह नाद दो प्रकार का है ध्वन्यात्मक और वर्णात्मक। ध्वनि तो केवल अनुभूति का विषय है। परन्तु वह नाद वर्णात्मना गद्य-पद्यादि भेद से आविर्भूत होता है। इन वाणिओं के विषय में सर्वप्रथम मूलाधार चक्रस्थित चतुर्दल कमल में शक्ति परा वाक् के रूप में प्रकट होती है जैसा कि आचार्यों ने कहा है:––

**मूलाधारात्प्रथममुदितो यश्च भावः पराख्यः।**
**पश्चात्पश्यन्त्यथ हृदयगो बुद्धियुङमध्यमाख्यः॥**
**व्यक्ते वैखर्यथ रुरुदिषोरस्य जन्तोः सुषुम्णा।**
**बद्धस्तस्माद्भवति पवने प्रेरिता वर्णसंज्ञा॥**

अर्थात् मूलाधार में परावाक् शक्ति का प्रथम अवतार है। यहीं से विश्वजनन-व्यापार प्रारम्भ होता है। इसी को कुण्डलिनी भी कहते हैं।

**"शक्तिः कुण्डलिनीति विश्वजननव्यापारबद्धोद्यमा"** ।
वही परावाक् जब ऊपर को जाती है तब स्वाधिष्ठान में उसका पश्यन्ती नाम होता है और इसके ऊपर हृदयस्थित अनाहत चक्र में मध्यमा रूप धारण करती है। वहाँ उस वाणी में बुद्धि तत्व भी प्राप्त हो जाता है। यही मध्यमा मुखगत निश्चित स्थानों से कण्ठदेश में प्रविष्ट होती है। पर श्रवण गोचर वर्णों के उच्चारण करने वाली वाणी ही वैखरी कहलाती है। अतएव वैखरी द्वारा उच्चार्यमाण वर्ण को ही पढ़ा-सुना जा सकता है। शेष तीन वाणियाँ अनुभूति के विषय हैं। यह नाद के विकास का क्रम स्फोटवाद पर आधारित है। इस विषय में महर्षि पतञ्जलि एवं आगम शास्त्र इसी सिद्धान्त को मानते हैं। समस्त ज्ञान एवं समस्त जगद्व्यवहार शब्द के अधीन है। वाक्यपदीय में भर्तृहरि ने कहा है:—

**न सोऽस्ति प्रत्ययो लोके यः शब्दानुगमादृते ।**
**अनुविद्धमिव ज्ञानं सर्वं शब्देन भासते ॥**

अस्तु, समस्त ज्ञान शब्द तत्व से भासित है। जगद्-व्यापार एवं व्यवहार के अतिरिक्त चेतन ब्रह्म भी जब शब्द से अनुविद्ध होता है तभी सविकल्पक भूमिका ग्रहण करता है।

**"सविकल्पकविज्ञानं चितेः शब्दानुधावतः"** ।

अतएव उस अनन्त भूमा परतत्व के विज्ञान में भी शब्द का ही साम्राज्य है। यह भगवती राजराजेश्वरी का ही परिणमित रूप है।

**"शब्दात्मिका सुविमलर्ग्यजुषां निधान-**
**मुद्गीथरम्यपदपाठवतां च साम्नाम्"** ।

**"चत्वारि वाक्परिमिता पदानि"** श्रुति भी वाणी के उक्त चारों भेदों का यशोगान करती है। शक्ति का प्राथमिक उन्मेष होने के कारण शब्द ही परतत्व साधना के अधिक निकट है एवं सरल भी है। इसीलिए सन्त कबीरदास ने शब्द का सर्वाधिक समर्थन किया है।

**"साधो शब्द साधना की जै-जै"**। वही शब्द वर्ण के रूप में अभिव्यक्त होता है तब उसका प्रथम स्वरूप ओंकार है जिसे तन्त्र गणेश के रूप में मानता है, जैसा कि स्वामी प्रत्यगानन्द ने कहा है:—

**"ऊर्ध्वशुण्डमधः शुण्डं द्विधा व्यावृत्य शुण्डकम् ।**
**सर्गविसर्गसन्धीशं नौम्योंकारं विनायकम्"** ॥

अर्थात् ओंकाररूपी गणेश की नीचे और ऊपर दोनों शुण्ड ब्रह्म और जगत् दोनों की सन्धि के प्रतीक हैं।

ओंकार की महिमा सभी उपनिषदों में है। माण्डूक्योपनिषद् में अधिक विस्तार से वर्णित है। प्रश्नोपनिषद् में विभिन्न मात्रा विशिष्ट ओंकार के जप से विभिन्न फलों की प्राप्ति का वर्णन है। अन्त त्रिमात्रिक ओंकार के जप से ब्रह्मलोक प्राप्ति एवं परतत्व का साक्षात्कार इसका फल है।

इस औपनिषद् साक्ष्य से शब्दब्रह्म की उपासना ही सर्वोत्कृष्ट साधना है। श्रीमद्भगवद्गीता आदि ग्रन्थों में ओंकार के जप की महिमा भरी पड़ी है। इस औपनिषद् साधना में इस परावाणी की उपलब्धि हेतु ऋषियों ने विशिष्ट साधना पद्धतियों का आविष्कार किया है।

जो क्रमबद्ध साधन प्रणाली थी—वह सभी संभवतः गोपनीय ही रही। अतएव आगम के मन्त्रद्रष्टा महर्षियों के तपःपूत हृदय में मन्त्र-समूहात्मक क्रमबद्धपद्धति प्रतिभात हुई। यह मानवमात्रहिताय और मानवमात्रसुखाय ही आविर्भूत हुआ। यही तन्त्र शास्त्र है। इसके आविष्कर्ता भगवान् शङ्कर हैं।

जगदीश्वरी पराम्बा ने वेद के लिये विष्णु और आगम के लिये शिव की नियुक्ति की है, जैसा कि उनका कथन है :—

**"आगमस्य भवान् कर्त्ता वेदकर्त्ता हरिः स्वयम्"**।

अस्तु, जिस प्रकार हर और हरि वस्तुतः एक ही हैं उसी प्रकार निगम और आगम दोनों ही अपौरुषेय और अनादि हैं। आगमशास्त्र आर्यों की सशक्त साधना है। यद्यपि भारतीय साधना एवं संस्कृति का मूल

स्रोत वेद है, इसी पर समस्त धर्म साधना एवं संस्कृति आश्रित है। उसी प्रकार आगम पर भी आश्रित है। वेद में प्रधानतः कर्म, उपासना एवं ज्ञान का निरूपण है। परन्तु इनके साधनभूत उपायों की पद्धति तन्त्र से ही प्राप्त होती है। यह इतनी ही उदात्त एवं प्राञ्जल है जितनी कि वेदों की। वेद केवल त्रिवर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, और वैश्य के लिये ही अपने क्रिया कलापों एवं सिद्धान्तों को सीमित रखता है।

जबकि आगम ने अपना द्वार स्त्री शूद्र आदि मानव मात्र के लिये उन्मुक्त कर दिया है, आगम की मूलाधार भित्ति निगम ही है। इस प्रकार आगम और निगम का पारस्परिक सम्बन्ध है और इनके द्वारा ही समस्त लौकिक एवं पारलौकिक कार्य सम्पन्न होते हैं।

**आगमश्चैव वेदश्च, द्वौ बाहू मम पुष्कलौ।**
**द्वाभ्यामेव धृतं सर्वं त्रैलोक्यं भूर्भुवादिकम्॥**

भगवती के इस कथन के अनुसार निगमागम की एकता अभिव्यक्त होती है।

परन्तु मानव मात्र के कल्याणार्थ सर्वाधिक सरल और सुलभ आगम की ही साधना है। इसी प्रकार वैदिक अद्वैत सिद्धान्त अद्वैत तत्व को प्रतिपादित करता है किन्तु व्यावहारिक रूप से प्राप्त करने में असफल रहता है, जब शाक्तागम अपनी सफल प्रणाली द्वारा अद्वैत स्थिति को प्राप्त करने की घोषणा करता है।

**अहं देवो न चान्योऽस्मि ब्रह्मैवाहं न शोकभाक्।**
**सच्चिदानन्दरूपोऽहं नित्यमुक्तस्वभाववान्॥**

अस्तु, अब हमें आगम की इस परिभाषा पर भी ध्यान देना है। **'आगच्छन्ति बुद्धिमारोहन्ति यस्मादभ्युदयनिःश्रयसोपायाः स आगमः'**। अर्थात् आगम वह शास्त्र है जिसके द्वारा ऐहिक एवं पारलौकिक कल्याण के लिये बुद्धि प्राप्त हो। आगम वह कल्पतरु है जिसमें भारतीयों की सभी आकांक्षायें समाहित हैं। जो लोग इस शास्त्र की उदात्त भावना एवं विशुद्ध आचार पद्धति से अनभिज्ञ हैं, वे भ्रान्त

धारणाओं के वशीभूत होकर वास्तविक तत्वज्ञान में असमर्थ रहते हैं। शैव, वैष्णव, आदि सभी आगमों में शाक्त आगम ही प्रधान है जिसमें परतत्व को माता के रूप में माना है। शक्तियां अनन्त हैं पर प्राधान्य दस महाविद्याओं का है, तथा उन दस महाविद्याओं में राजराजेश्वरी भगवती त्रिपुरसुन्दरी श्री विद्या ही प्रधान है। इनके द्वादश उपासक प्रसिद्ध हैं।

मनु, चन्द्र, कुबेर, लोपामुद्रा, कामदेव, अगस्त्य, अग्नि, सूर्य, इन्द्र, स्कन्द, शिव, और दुर्वासा।

नटनानन्द कृत कामकलाविलास की चिद्वल्ली टीका के अनुसार श्री विद्या की केवल दो ही सन्तानें प्रसिद्ध हैं।

(१) कामराज सन्तान एवं,

(२) लोपामुद्रा सन्तान।

परन्तु कामराज विद्या का समर्थन वेद भी **'चत्वारि ईं बिभूति'** के द्वारा करता है। ललितासहस्रनाम **'तत्र कादिर्यथा परा'**। अस्तु, इत्यादि प्रमाणों से आगम की सारभूत उपासना कामेश्वरी विद्या ही है।

आगम का मुख्य भाग मन्त्रात्मक है, अतएव प्रस्तुत ग्रन्थ में कामराज क्रम से श्री विद्या के समस्त उपास्य मन्त्रों का न्यास, ध्यान, विनियोग आदि संगृहीत कर साधना मार्ग को प्रशस्त किया है। इसमें अनन्त गोपनीय मन्त्रों के २७ समूह हैं। अतः, इस ग्रन्थ का नाम सप्तविंशति-रहस्य है। इन मन्त्रों का क्रमिक उपदेश सर्वाङ्ग-परिपूर्ण है। मन्त्र का अर्थ जप से ही व्यक्त होता है **'तज्जपस्तदर्थ भावनम्'**। परन्तु शास्त्रों में मन्त्र की इस प्रकार परिभाषा है :—

**मकारं मानसं प्रोक्तं त्रकारं बुद्धिलक्षणम्।**
**बुद्धिमानससंयोगे मन्त्र इत्यभिधीयते॥**

मकार का अर्थ मनन है एवं त्रकार का बुद्धि। अतएव बुद्धिपूर्वक मानसिक व्यापार की ही मंत्र संज्ञा है। बौद्धिक एवं मानसिक बलपर ही दूसरे प्रकार की परिभाषा में मकार जीव एवं त्रकार आत्मा का

ऐक्य संपादन ही मंत्र है। इन दोनों की एकता का अनुसंधान ही अध्यात्मशास्त्र का चरम लक्ष्य है। इसी में सम्पूर्ण साधनाओं की परिपूर्णता है। इसके अतिरिक्त **"मननात् त्रायते इति मन्त्रः"** जिसके मनन मात्र से दैहिक, दैविक, भौतिक आघातों से रक्षा होती है वही मंत्र है।

आगमशास्त्र और निगम में मंत्र का वही स्थान है जो शरीर में प्राण का है। देवता मन्त्र के अधीन रहते हैं:—**'मन्त्र परमलघु जासु वश विधि हरि हर सुर सर्व'**। अध्यात्म एवं व्यवहार दोनों प्रकार की सफलता का रहस्य मन्त्र ही है और यह मन्त्रयोग योगों में सर्वश्रेष्ठ और प्रथम है। सरलता भी अन्य साधनों की अपेक्षा अत्यधिक है। पद्माक्ष, अथवा रुद्राक्ष, आदि की माला से गुरूपदिष्ट मन्त्रों के क्रम का विधिपूर्वक जप करने से ही ब्रह्म-साक्षात्कार हो जाता है। जप ही इस योग में प्रधान है।

**"जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्जपात्सिद्धिर्न संशयः"**।

इसी का दूसरा नाम भक्ति योग है। भक्त भी उन सभी वस्तुओं को प्राप्त कर लेता है जो योग द्वारा प्राप्त होती हैं।

भक्त यम, नियम, आदि के बिना ही परतत्व के साथ तादात्म्य का अनुभव करता है। जप से ही बहिर्मुखी वृत्ति अन्तर्मुखी हो जाती है। पृथक् से नादाभ्यास आदि की उसे आवश्यकता नहीं है। इसी के द्वारा जीवन्मुक्ति की स्थिति प्राप्त हो जाती है।

**सप्ताङ्ग सहित मन्त्र**

पुरुष देवता अर्थात् शिव, गणेश, भैरव आदि के मन्त्रों को मन्त्र कहते हैं तथा शक्ति के मन्त्रों की संज्ञा विद्या है। मन्त्र मात्र के पाँच भेद होते हैं:— १ पिण्ड, २ कर्तरी, ३ बीज, ४ मन्त्र, पाँचवा माला मन्त्र कहलाता है, जो क्रमशः एकाक्षर दो अक्षर, तीन से लेकर ९ अक्षर, १० से २० तक, एवं २१ के उपरान्त होते हैं। द्वितीय मतानुसार तीन ही भेद हैं बीज, मन्त्र एवं माला मन्त्र। फट् जिन मन्त्रों में होता है वे पुल्लिङ्ग, स्वाहान्त स्त्रीलिङ्ग, नमः वाले नपुंसक संज्ञक हैं।

मंत्र का जप सप्ताङ्ग सहित करना चाहिये ।

**ऋषिश्छन्दश्च बीजं च कीलकं शक्तिरेव च ।**
**अङ्गन्यासस्तथा ध्यानं मंत्राङ्गानां च सप्तकम् ।।**

सर्वप्रथम मंत्र का सांक्षात्कार दिव्य तपोनुभूति द्वारा ऋषियों को हुआ है, अतएव इनका न्यास शरीर के सर्वोच्च भाग मस्तक पर होता है। ऋकार का अर्थ है सृष्टि । एवं षि स्थिति का पर्यायवाची है। अस्तु, ऋषि ही सृजन पालन के अधिष्ठाता हैं । मन्त्राक्षरों का नियमित रूप ही छन्द है। यही देवता का आच्छादक है। मुख द्वारा अभिव्यक्त होने से मुख में ही छन्द का न्यास विधान है । छकार का पद एवं दकार का अभिलाषा ही अभिप्राय है । अत: अभिलषित पद की प्राप्ति इसी से सम्पन्न होती है। बीज में जगत् के निर्माण की शक्ति समाहित है इसे गोपनीय स्थान पर सुरक्षित रखना पड़ता है । अत: इसका न्यास गुह्य स्थान पर किया जाता है । मन्त्र का सम्पूर्ण ओज एवं वर्चस्व तथा तेज ही शक्ति है । साधना प्रगतिशील हो निरन्तर आगे बढ़ती चली जाय इसी से गति के प्रधान प्रतीक चरणों में शक्ति न्यास का विधान है । कील अर्थात् धुरी के बल पर ही चक्र घूमता है । इसका सम्बन्ध सर्वाङ्ग से है। अतएव, इसका न्यास स्थल सम्पूर्ण शरीर है । ये पाँच अंग विनियोग में विद्यमान हैं। इसके पश्चात् षडङ्ग न्यास का विधान है। मांस, मज्जा, शोणित आदि से परिपूर्ण यह अपवित्र शरीर देवकार्य के सर्वथा अयोग्य रहता है, अत: न्यास द्वारा देवत्व प्राप्त करके ही देवकार्य का अधिकारी होता है । **'देवो भूत्वा यजेद्देवम्'** । अतएव न्यास द्वारा अपवित्रता एवं समस्त दुरित दूर होकर मन्त्र जप का अधिकार प्राप्त होता है । मन्त्र का सातवाँ अङ्ग ध्यान है जिसके विना किसी भी ध्येय इष्ट देवता की कल्पना ही नहीं की जा सकती । किसी भी सगुण आराध्य के एक निश्चित रूप का ध्यान अनिवार्य है । **"ध्यानं विना भवेन्मूक: सिद्धमन्त्रोपि साधक:"** । इस प्रकार इन सप्त अङ्गों से परिपूर्ण मन्त्र का जप वैधानिक है । प्रस्तुत ग्रन्थ में उपदिष्ट सभी मन्त्रों के न्यास ध्यान सहित विनियोग विद्यमान हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ में मन्त्रों के २७ समूह हैं, अतएव इसका नाम सप्तविंशति रहस्य है ।

प्रथम रहस्य में स्वगुरु, परमगुरु, परमेष्ठि गुरु, एवं दिव्यौघ, सिद्धौघ, मानवौघ गुरुओं के मन्त्र कामराजोपासित श्रीविद्या के क्रम से उपदिष्ट हैं। श्री गुरु की महिमा का स्वरूप इतना स्पष्ट है कि जिसके स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं है। इनके बिना जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता संभव नहीं है। समस्त ज्ञानोपलब्धि एवं साधना की सिद्धि श्रीनाथ के चरणारविन्दों की कृपा पर ही निर्भर है, पुस्तक राशि पर नहीं। **"सिद्धिदा गुरुवागेका सर्वे ग्रन्थाः विडम्बकाः"**। परब्रह्म भी इनसे महान् नहीं है और न समकक्ष ही। यही सर्व प्रथम आराधनीय हैं, प्रातःस्मरणीय हैं। इष्टदेवता की केवल कृपा ही गुरुरूप में अवस्थित है। इनकी दयामयी मूर्ति की महिमा का ज्ञान सभी धर्मवाले समान रूप से करते हैं। ब्रह्म के रूप में भिन्न मत हैं। इनके विषय में नहीं। भगवान शंकर ने अपने पाँचों मुखों से पादुका पंचक स्तोत्र द्वारा स्तवन किया है। इनके वचनों में सम्पूर्ण वेदों का, चरणों में समस्त तीर्थों का एवं दृष्टि में मुक्ति का निवास है:—

**वचने वचने वेदास्तीर्थानि च पदे पदे।**
**दृष्टौ दृष्टौ च कैवल्यं सोऽवधूतः श्रियेऽस्तु नः॥**

अज्ञानान्धकार-निवर्तक बोधस्वरूप पृथ्वी से लेकर शिवपर्यन्त ३६ तत्वों के अनुभवी उपदेष्टा ही सच्चे गुरु हैं। **"उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्वदर्शिनः"**। अस्तु, प्रथम रहस्य में गुरु मन्त्रों का ही उपदेश है। इनके अतिरिक्त दिव्यौघ, सिद्धौघ, मानवौघ–यह गुरुओं के तीन समुदाय हैं। दिव्यौघ में सर्वप्रथम भगवान शिव हैं। समस्त गुरुपरम्पराएँ यहीं से प्रारम्भ होकर स्वगुरु पर पूर्ण होती हैं। यह शिवशक्ति का सम्मिलित स्वरूप है। इसे ही दर्शन में 'शक्तिशिवौ' 'शिवतत्वम्' कहकर सामरस्य भावापन्न परतत्व के रूप में शिव शब्द को माना है।

इसके पश्चात् आकाश तत्व के अध्यक्ष चित्शक्तिसम्पन्न भगवान् सदाशिव भगवती के मञ्च में फलक (शय्या) के रूप में अवस्थित हैं। वेद भगवान् ईशान मन्त्र द्वारा इनकी स्तुति करते हैं। इसके पश्चात् ईश्वर गुरु हैं। सदाशिव जगत् को अपने से अभिन्न रूप में

मानते हैं। संसार के प्रसङ्ग में उनकी मान्यता है कि ये मैं ही हूँ। अतः सदाशिव की अहन्ता पूर्णाहन्ता कहलाती है। इसे ही अन्तर्मुखी वृत्ति कहते हैं। ईश्वर अपने से जगत् को भिन्न इदम् रूप से जानते हैं। इनमें इदन्ता का समावेश होने से बहिर्मुखी वृत्तिवाले हैं। फलतः जगत् को अहम् रूप में जाननेवाले सदाशिव एवं इदं रूप से जाननेवाले ईश्वर हैं। **"ईश्वरो बहिरुन्मेषोनिमेषोन्तः सदाशिवः"**। यह दोनों क्रमशः आकाश एवं वायु तत्व के स्वामी हैं, चिद् एवं आनन्द शक्तियों से सम्पन्न हैं। इस प्रकार शिव-शक्ति स्वरूपी शिव सदाशिव ईश्वर ये चारों छत्तीस तत्वों में भी सर्व प्रथम हैं। इनके वैदिक नाम ईशान एवं तत्पुरुष हैं। दिव्य गुरु परम्परा में आगे रुद्र हैं। इनका तत्व अग्नि है। वेद इनकी अघोर मन्त्र द्वारा आराधना करते हैं। इनके पश्चात् श्री विष्णु जल तत्व के अध्यक्ष हैं। वैदिक नाम वामदेव है। अन्त में श्री ब्रह्माजी सृष्टि के निर्माता हैं। इन्हें सद्योजात नाम से जानते हैं। पृथ्वी तत्व से इनका सम्बन्ध है। इस प्रकार ये रुद्र विष्णु एवं ब्रह्मा क्रमशः इच्छा, ज्ञान, क्रिया शक्तियों से सम्बन्धित हैं। इन पाँचों से ही भगवती के मंच का निर्माण होता है। इन्हीं पर सच्चिदानन्द स्वरूपिणी त्रिपुरसुन्दरी का आसन है। यही पञ्च ब्रह्म हैं, प्राण आदि पंच पवनों के उपजीव्य हैं। ज्ञान कर्म की पञ्च-पञ्च इन्द्रियों के क्रमशः स्वामी हैं। भगवती के पञ्च कृत्य इनके द्वारा ही सम्पन्न होते हैं।

**"जगत्सूते धाता हरिरवति रुद्रः क्षपयति।**
**तिरस्कुर्वन्नेतत् स्वमपि वपुरीशस्तिरयति ॥**
**सदा पूर्वः शम्भुस्तदिदमनुगृह्णाति च शिवः।**
**तवाज्ञामालम्ब्य क्षणचलितयोर्भ्रूलतिकयोः" ॥**

**सौन्दर्य लहरीः**– ब्रह्माजी जगत् का निर्माण करते हैं। विष्णु रक्षा करते हैं और रुद्र संहार। इन तीन प्रसिद्ध कृत्यों के अतिरिक्त दो कृत्य तिरोधान अर्थात् निग्रह एवं अनुग्रह यह भी ईश्वर एवं सदाशिव के कृत्य हैं। यह पाँचों वस्तुतः श्री राजराजेश्वरी भगवती के परिणमित रूप हैं। इन रूपों से वही पांचों कृत्य करती है। वेद में इनको स्वर्ग का द्वारपाल माना है। **"ते वा एते पञ्च ब्रह्म पुरुषा स्वर्गस्य द्वारपाः" (छा. ३।३।६)**

ललिता सहस्रनाम में इन्हें श्री के ही पर्यायवाची मानकर सहस्र नामों में इनकी गणना की गई है ।

**"सृष्टिकर्त्री ब्रह्मरूपा, गोप्त्री गोविन्दरूपिणी ।**
**संहारिणी रुद्ररूपा तिरोधानकरीश्वरी ।**
**सदाशिवानुग्रहदा पञ्चकृत्यपरायणा" ॥**

अस्तु, सर्वप्रथम भगवान शिव एवं पाँच ये कुल षट्संख्यक दिव्यगुरु हैं, इन्हीं को दिव्यौघ कहते हैं । दूसरा सिद्धौघ है । इनमें निवृत्ति प्रवृत्ति भेद से निवृत्ति मार्गी सनकादि एकादश सिद्ध गुरुओं का समूह है, एवं प्रवृत्ति मार्गानुयायी भोगानन्दनाथ आदि चार गुरुओं का समुदाय है । तीसरा ओघ मानवगुरुओं का है । इसमें भी उसी प्रकार नृसिंहानन्द आदि छह निवृत्तिमार्गी एवं गगनानन्द आदि अष्ट प्रवृत्तिमार्गी हैं । यह मानवौघ हैं । इस प्रकार इस प्रथम रहस्य में समस्त गुरु-तत्व का समावेश है । सर्वप्रथम श्रीनाथ के चरणारविन्दों की पादुका का ही उपदेश दिया गया है **"पादुका प्रथमं ध्येया चरणं तदनन्तरम्"** अतएव चरणवासना में आगे श्री चरणों के मन्त्रोपदेश किये जावेंगे । दूसरे रहस्य में महागणपति मन्त्र है । बिन्दु के प्रथम प्रस्फुटन के साथ ही शक्ति जगत् के सृजन हेतु नाद के रूप में परिणत हो जाती है । नाद-ब्रह्म वर्णात्मना ॐकार के रूप में अभिव्यक्त होता है । अतएव गणेश का आविर्भाव केवल शक्ति से ही होता है । यही शक्तिजन्मा गणेश ही ॐकार रूप में बताया जा चुका है । श्रीविद्या के षोढान्यास में यही ओंकार मातृका (वर्णमाला का) रूप ग्रहण कर ५२ अक्षरों में परिणत हो जाता है । शक्ति के सहित इन गणेशों का न्यास ही सर्वप्रथम न्यास है ।

३–४–५ वें रहस्यों में क्रमशः कामगिरि, पूर्णगिरि, जालन्धर पीठत्रय एवं मन्थान आदि सप्त भैरव तथा अष्ट सिद्धाओं के उपदेश हैं । इन्हें भी सिद्धौघ माना जाता है । गुरुमण्डलान्तर्गत सिद्धौघ पृथक हैं ।

६–७–८ वें में भी ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र त्रिदेवतात्मक बटुकत्रय एवं कादिहादि पञ्चदशी के उभय पद तथा योनि स्वरूपिणी नवदूतियों के मंत्र संग्रहीत हैं।

९–१०–११ वें में अग्नि सूर्य चन्द्र इन तीनों मण्डलों के अधिष्ठाताओं एवं सृष्टि भैरव आदि १० भैरवों का उपदेश तथा ६४ सिद्धों के मन्त्र हैं।

१२–१३–१४ वें रहस्यों में श्री चक्र के ९ आवरणों की नवमुद्राएं हैं जिनके द्वारा चक्रेश्वरियों को प्रणाम किया जाता है, उनके उपदेश हैं तथा पञ्च वीर मण्डलों के मन्त्र हैं। इसमें ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, ईश्वर, सदाशिव पञ्चवीरों के मन्त्रों का वर्णन है। १४ वें रहस्य में मातृकामयी भगवती मालिनी मन्त्र एवं श्री नरसिंह भगवान का मन्त्रराज है। आगे चलकर १५ से २० तक ६ रहस्यों में षडाम्नायोपदेश हैं। यह कामराजोपासित भगवती श्री विद्या के क्रमानुसार है। भूतभावन भगवान् शंकर सर्व विद्याओं के उपदेष्टा हैं। **"ईशानः सर्व विद्यानामीश्वरः"** उनके मुखों द्वारा ही आगम शास्त्र उपदिष्ट हैं। भगवान शिव के मुख चार तो पूर्वादि दिशा क्रम से ४ हैं तथा एक ऊर्ध्वमुख है। ये पञ्चमुख प्रकट हैं। नीचे एक गुप्तमुख है जिसका अधः आम्नाय नाम है।

पन्द्रहवें से लेकर बीसवें तक छह रहस्य षडम्नाय मन्त्रसमुदाय श्री क्रम से उपदिष्ट हैं। सम्पूर्ण विद्याओं के उपदेष्टा भूतभावन भगवान् शंकरजी हैं। **"ईशानः सर्व विद्यानामीश्वरः"** उनके मुखों द्वारा आगम शास्त्र का भूतल में आगमन हुआ है।

**आगतः शिववक्त्रेभ्यः गतश्च गिरिजानने।**
**मतं च वासुदेवस्य तस्मादागम उच्यते॥**

आम्नायों की संख्या ६ है। क्रमशः चारों दिशाओं के ४, मध्य में ऊपर को ऊर्ध्वमुख एवं नीचे का मुख अधः आम्नाय है।

वेद एवं आम्नाय पर्यायवाची हैं। **'अनन्ता वै वेदाः'** के अनुसार केवल चार ही नहीं अपितु वेद अनन्त हैं। इसलिये आम्नायों

की संख्या ६ है 'वेदा हि रसाः' (३-५-४) छान्दोग्य में वेद की रस अर्थात् ६ संख्या गोपनीय रूप से वर्णित है। छान्दोग्योपनिषद् के तृतीयाध्याय में इनका क्रमिक वर्णन है। मधुविद्या के प्रसंग में दृश्यमान सूर्यमण्डल ही मधु का छत्ता है। इस छत्ते का आधार तिरछा बाँस द्यौस् लोक है। इस मधु के छत्ते का पूर्व भाग ऋग्वेद, दक्षिण का यजुस्, पश्चिम का साम एवं उत्तर का अथर्ववेद है। चारों वेदों का चरम उद्देश्य इसी छत्ते के मधु को प्राप्त करना है। यही अमृत है, पर-तत्व है, आगम की भाषा में यही शिवशक्ति का सामरस्य रूप है। जो प्रयास इस मधु को प्राप्त करने में चारों वेदों का है वही प्रयास अमृतेश्वरी भगवती महात्रिपुरी की प्राप्ति में षडाम्नायों का है, जैसा कि मन्त्र में वर्णन है:--

**असौ वा आदित्यो देवमधु, तस्य द्यौरेव तिरश्चीन-**
**वंशोऽन्तरिक्षमपूपो मरीचयः पुत्राः ॥१॥**

यह आदित्य मण्डल ही देवमधु है जिसे आगम सहस्रार मानता है। द्यौस् लोक तिरछा बाँस है, यही कुण्डलिनी का मार्ग है। इसी आदित्य मण्डल से मरीचि अर्थात् किरण समूह सभी दिशाओं में फैलता है।

**"किरन्तीमङ्गेभ्यः किरणनिकुरम्बामृतरसम्"**। सौन्दर्यलहरी में इसी अमृतवृष्टि का वर्णन है। श्री शङ्कराचार्य ने इन किरणों को स्वराट् (अपने आप प्रकाशमय) माना है। यह मधु अपूप अर्थात् माधुर्य गुण विशिष्ट है। समष्टि में यह देवमधु समस्त जगत् को अमृतमयी किरणों से आप्लावित करता है। भगवती अमृतेश्वरी ही समस्त जगत् को मधु प्रदान करती हैं। उनका जो ध्यान करता है वह अमर हो जाता है। काल की भी गति को रोक देता है यद्यपि काल दुर्निवार है।

भगवती कालकर्षिणी ही मधुकृत् मधुमक्षिका हैं। जैसा कि श्रुति का वचन है। **"इयं वाव सरघा तस्या अग्निरेव सारघं मधु"**। यही भगवती सरघा हैं। मधुवृषा, मधु की वर्षा करनेवाली भी यही हैं। मधुकृत् और मधुवृषा ये दोनों शब्द क्रमशः रात-दिन के पर्यायवाची हैं। १५ तिथियों में मधुवर्षण कर कालकर्षिणी द्वारा

मन्त्रराज पञ्चदशी विद्या का आविर्भाव हुआ है। इष्टापूर्त आदि सभी कार्यों की सफलता इसी पर है जैसा कि चन्द्रज्ञान तन्त्र में **"कर्माणि क्रियमाणानि कालो ग्रसति तत्क्षणात् । कालकर्षिणिकैवान्तं करोति मधु वर्षति ।। इति यो वेद तस्य स्यात् ब्रह्मरंध्रात् सुधास्रुतिः"** । यही काल (मृत्यु) की निवारिका हैं। ब्रह्मरन्ध्र, जिसे वेद मन्त्र में मधु का छत्ता बताया गया है, यहाँ से मधु वृष्टि द्वारा ही साधक को पुनर्जीवन प्राप्त होता है, तथा समस्त चक्रमण्डल इस अमृत द्वारा आप्लावित होते हैं।

**"असौ वा आदित्यो देवमधु, तस्य द्यौरेव तिरश्चीनवंशोऽन्तरिक्षमपूपो मरीचयः पुत्राः।।"** ३–१–१ स्वराजो यन्मरीचयः। शंकराचार्यने भाष्य किया है। **तस्य ये प्राञ्चो रश्मयः ता एवास्य प्राच्यो मधुनाड्यः। ऋच एव मधुकृत, ऋग्वेद एव पुष्पं, ताः अमृता आपस्ता ता वा एता ऋचः।।** ३–१–२ **अथ येऽस्य दक्षिणा रश्मयस्ता एवास्य दक्षिणा मधुनाड्यो यजूंष्येव मधुकृतो यजुर्वेद एव पुष्पं ता अमृता आपः।।** ३–२–१ **अन्नादि अथ येऽस्य प्रत्यञ्चो रश्मयस्ता एवास्य प्रतीच्यो मधुनाड्यः सामान्येव मधुकृतः सामवेद एव पुष्पं ता अमृता आपः।।"** ३–३–१ **अथ येऽस्योदञ्चो रश्मयस्ता एवास्योदीच्यो मधुनाड्योथर्वांगिरस एव मधुकृत इतिहास पुराणं पुष्पं ता अमृता आपः।।** ३–४–१ भगवान् शिव के पूर्व आदि चार मुखों को क्रमशः तत्पुरुष, अघोर, सद्योजात, वामदेव कहते है एवं ऊर्ध्वमुख ईशान है। इनके पाँचों मन्त्र वेद में हैं। प्रकट रूप से इन मन्त्रों द्वारा इनकी स्तुति की गई है। इन पाँचों के अतिरिक्त छठा मुख भी है। शिवतन्त्र में इसका स्वरूप वर्णित है। **"नीलकण्ठमधोवक्त्रं कालकूटस्वरूपिणम्"** ये ही अनुत्तराम्नाय हैं जो वेद में गुह्य सन्देश नाम से ख्यात हैं। यही परात्पर है अतएव सभी आम्नायों में यह आम्नाय सर्वोपरि है। वेद इसी को गुह्य संदेश द्वारा अभिव्यक्त करता है। यह ब्रह्म स्वरूप है जैसा कि मन्त्र है। **"अथ येऽस्योर्ध्वा रश्मयस्ता एवास्योर्ध्वा मधुनाड्यो गुह्या एवादेशा मधुकृतो ब्रह्मैव पुष्पं ता अमृता आपः"** । जो इस मधु के छत्ते की ऊर्ध्व किरणें हैं वही मधुवाहिनी नाड़ियाँ हैं,

एवं गुह्य आदेश ही मक्खियाँ हैं जो ब्रह्मस्वरूपी पुष्प से मधु एकत्रित करती हैं । अतएव मुमुक्षु के लिये परमोपकारी यही दोनों आम्नाय हैं । शेष चारों दिशाओं के चार आम्नाय हैं जैसा कि श्रुति वर्णन करती है ।

**ऋचां प्राची महती दिगुच्यते दक्षिणामाहुर्यजुषां मनोषिणः ।**
**अथर्वणामाङ्गिरसां प्रतीची साम्नामुदीची महती दिगुच्यते ॥**

अतएव पूर्व आदि चारों आम्नाय ऋग्वेद आदि के द्वारा निर्दिष्ट हैं । अर्थात् पूर्वाम्नाय की शुद्ध विद्या आदि ऋग्वेद की अधिष्ठान देवता हैं । सौभाग्य विद्या आदि यजुर्वेद, तुरीयाम्बादि सामवेद तथा लोपामुद्रा आदि अथर्ववेद की अधिष्ठान देवता हैं ।

ऊर्ध्वाम्नाय ही स्वयं श्री भगवती पराम्बा का अधिष्ठान है । (जैसा कि श्री विद्यारत्न सूत्र में १४ वाँ सूत्र) स्वयमूर्ध्वाकारेण स्वयं अपने सामर्थ्य से भगवती ऊर्ध्वाम्नाय में अवस्थित है ।

**"स्वसामर्थ्यतया जाता चोर्ध्वरूपेण शाम्भवी ।**
**शृङ्गे तिष्ठति सा देवी तद्रूपेणापि संस्थिता" ॥**

अर्थात् स्वयं ही ऊर्ध्वाङ्ग रूप में शृङ्ग अर्थात् सर्वोच्च स्थान पर ही भगवती का निवास है, एवं वह तदाकार स्वरूप है । अधः आम्नाय प्रकट नहीं है, यह अत्यन्त गोपनीय है । इसी में चिन्तामणि द्वारा निर्मित विशाल भवन में श्री महात्रिपुरसुन्दरी का निवास है। श्री ही अनुत्तरा है अर्थात् अद्वितीय है, परब्रह्म की पराशक्ति है । यही अपने को अनेक रूपों में अभिव्यक्त करती है जैसा कि श्रीविद्यारत्न सूत्र का पन्द्रहवाँ सूत्र है ।

"**अथ चिन्तामणिगृहस्थिता त्रिपुरसुन्दरी महाविद्यानुत्तरा** । इस सूत्र में अनुत्तर शब्द से अधराम्नाय का ही ग्रहण है । सृष्टि, पालन, प्रलय एवं निग्रह, पूर्व आदि चारों आम्नायों के कार्य हैं । ऊर्ध्व एवं अधः आम्नाय अनुग्रहात्मक हैं । अतएव दोनों आम्नायों को सर्वोपरि माना गया है । अस्तु, सर्वप्रथम पूर्व आम्नायोपदिष्ट देवताओं का क्रम इस प्रकार है, शुद्धानन्द की आराध्या शुद्धविद्या अथवा जीवरूपी

पशु को अज्ञान से मुक्त कर उसे शुद्ध बनाने से इसे शुद्धविद्या कहा गया है। शिष्य के शुद्धीकरणार्थ सर्वप्रथम इसी का उपदेश है। विशिष्ट लीलाओं द्वारा भक्तों को सुख देने से दूसरा उपदेश श्री बाला त्रिपुरसुन्दरी का है। भगवान दक्षिणामूर्ति इसके आराधक हैं। तीसरी भगवती द्वादशार्धा पंचानना है। ४ थी हसन्ती श्यामला ५ राजमातंगी ६ शुक श्यामला ७ सारिका ८ वीणा ९ वेणु १० लघु श्यामला ११ पूर्वाम्नाय की समयेश्वरी ४–१० तक सभी विद्याएं भगवती मातंगी के ही रूप हैं इसीलिये इस आम्नाय में चार शक्तियों का ही प्राधान्य है।

**"शुद्ध विद्येति बालेति द्वादशार्धा मतंगिनी"**। इनके अतिरिक्त पूर्वोक्त श्रीगुरुत्रय गणपति पीठत्रय भी इसी आम्नाय में हैं। इनके परिवारदेवता चौबीस हजार हैं जो कामगिरि पीठपर आसीन है।

दक्षिणाम्नाय में सुभगानन्द एवं विद्यानन्द की आराध्या भगवती सौभाग्य विद्या २ भगवती वगलामुखी श्री गगनानन्दनाथ इनके आराधक हैं तथा वन्धिनी लाकिनी दो सहचरी आपके दोनों ओर हैं इन तीनों के आदि अक्षरों से ही वगला शब्द बना है। यही ब्रह्मास्त्र विद्या है। ३ वराहानन्दनाथ द्वारा उपासित वाराही ४ अविवाहित होने के कारण अथवा वटु अर्थात् ब्रह्मचारी के द्वारा उपास्य भगवान बटुक हैं। ५ तिरस्करिणी विद्या भगवान कामेश्वर एवं कामेश्वरी के सामरस्य रूप को पशुजीवों के दृष्टिगोचर नहीं होने देती। मन्दिर पूजा में महाजवनिका यही हैं।

६ दक्षिणाम्नाय की समयेश्वरी तथा पूर्व श्लोकोक्त भैरव सिद्धौघ वटुक त्रय पद युग भी सम्मिलित हैं। इनके परिवार के देवता तीस हजार हैं। इनका आसन पूर्ण गिरि पीठ है। पश्चिमाम्नाय में १ महर्षि अगस्त्य की पत्नी लोपामुद्रा द्वारा उपासित हादि पञ्चदशी है २ भगवान वेदव्यास की आराध्या भगवती भुवनेश्वरी ३ पूर्ण रूप से अन्न प्रदान करनेवाली अथवा अन्न रूप में प्रकट होनेवाली पूर्णानन्द द्वारा उपासित अन्नपूर्णा हैं। ४ कामेश्वरी कामेश्वर की साक्षात् कला

स्वरूप होने से इन्हें काम कला कहते हैं। इनके आराधक कामदेव हैं तथा पश्चिमाम्नाय की समयेश्वरी एवं पूर्वोक्त दूती मण्डल दशवीर चौंसठ सिद्ध भी इसी आम्नाय में हैं। इनके परिवार देवता तीस हजार हैं तथा जालन्धर पीठ ही इनका आसन है। उत्तराम्नाय में-- १ महेश्वरानन्दनाथ द्वारा आराधित त्रयोदशाक्षरी भगवती तुरीया महानन्दनाथ की आराध्या महार्धा ३ भगवती त्रिपुरसुन्दरी की सेना के आगे चलनेवाली अश्वारूढ़ा ४ मिश्रानन्दनाथ की उपास्या समस्त विद्या से मिश्रित मिश्राम्बा ५ अपने भक्तों को वाद-विवाद के समय वाक्शक्ति प्रदात्री वाग्वादिनी हैं। इनके अतिरिक्त उत्तराम्नाय की समयेश्वरी पूर्वोक्त नवमुद्रा पञ्चवीरावली भी इन्हीं में सम्मिलित हैं तथा ओड्याण पीठ ही इनका आसन है इनके परिवार देवता २ सहस्र हैं। ऊर्ध्वाम्नाय में १ परा प्रासाद रूपिणी २ पराम्बा ३ पराशाम्भवी यह तीनों शाम्भवी भगवती के ही रूप हैं **पराविद्या महेशानि परा-प्रासाद इत्यपि।** इनके साथ ऊर्ध्वाम्नाय की समयेश्वरी एवं पूर्वोक्त मालिनी और मन्त्रराज भी हैं। इनके परिवार देवता एक सहस्र हैं। शाम्भवी पीठ ही इनका आसन है। अधराम्नाय में १ अनुत्तर विद्या २ महात्रिपुरसुन्दरी ३ कालकर्षिणी यही तीन साधना की अन्तिम भूमिकाएँ हैं इनके साथ इस आम्नाय की समयेश्वरी हैं।

यह दोनों ही आम्नाय अनुत्तर हैं।

आम्नाय वर्णन के पश्चात् क्रमशः २१ से लेकर २७ तक इन देवताओं का उपदेश है। साधक को चरण वासना के जप एवं ध्यान से इष्ट तथा गुरु के प्रकाशमय दिव्य विग्रह का साक्षात्कार होता है। अतएव चरण वासना को आम्नायों के अन्तर्गत मन्त्रों के पश्चात् ही जपना चाहिए। आगे व्योमातीता आदि पञ्चाकाशों की अधिष्ठात्री हैं। तदनन्तर नव नाथ हैं जिन्हें सिद्धौघ भी कहते हैं। पुनः सूक्ष्म शरीरान्तर्गत मूलाधारादि चक्रों की शक्तियाँ षोडशाधार और षडाधार विद्यायें हैं।

ब्राह्म आदि षड्दर्शन के उपदेश के अनन्तर ग्रन्थ के अन्त में वशिनी आदि अष्ट वाग्देवता हैं। श्री चक्र के सप्तम आवरण सर्व रोगहर चक्र में इनका पूजन होता है मातृका महामन्त्र के आठ

विभाग हैं जिन्हें 'अ' 'क' 'च' 'ट' 'त' 'प' 'य' 'श' इन्हें अष्ट वर्ग कहते हैं। इन्हीं वर्गों की शक्तियाँ हैं समस्त वाङमय एवं मन्त्र समूह की जननी हैं। चिद्विलास के १४ वें श्लोक में वर्णित हैं।

मूलाधार से लेकर सोम चक्र पर्यन्त मेरु दण्ड के अन्तर्गत सुषुम्ना में सूक्ष्म मार्ग है। जिसमें होकर महा शक्ति कुण्डलिनी यातायात करती है। यह वाग्देवियाँ इन आठ चक्रों की शक्तियाँ हैं। इन सब का लय इसी मार्ग द्वारा भगवती श्री त्रिपुरसुन्दरी में ही होता है।

**पूरुसत्व समवाप्ति हेतुषु यष्टिकाख्य निजसूक्ष्मवर्त्मणः।**
**चित्पदे लयविधानमष्ट वाग् देवता न्यसन जुष्टमुत्तमम्॥**

अस्तु, ग्रन्थ के अन्त में मन्त्रों के जप की विशिष्ट साधन प्रणाली पारायणों के रूप में दी गई है। इनसे सम्बन्धित सभी मन्त्र इन रहस्यों में आ चुके हैं। यह पारायण साधकों की दिनचर्या है। प्रातः कृत्य से लेकर तुरीय सन्ध्या पर्यन्त सम्पूर्ण दैनिक कृत्य का विधान इनमें विद्यमान है। इन पारायणों के लिये तान्त्रिक काल का उल्लेख अत्यावश्यक है इस कमी को पूरा करने के लिये पूज्य आचार्य चरण ने अपार तन्त्र शास्त्र का अवगाहन कर यत्र तत्र सन्निविष्ट विखरी हुई सामग्री को एकत्रित किया एवं बड़े परिश्रम से षोडश अङ्गों से अलङ्कृत तान्त्रिक पञ्चाङ्ग की रचना की जो विगत कई वर्षों से प्रकाशित हो रहा है।

यह अहर्गण के अनुसार है कलियुग के प्रारम्भ दिवस से वर्तमान दिवस की संख्या की ही अहर्गण संख्या है। यह केशवीय गणित पर आधारित है और जप, पूजन, पारायण, होम, आदि कार्यों में बोलने योग्य संकल्प बनाकर साधकों का मार्ग प्रशस्त कर दिया गया है। इसके अनुसार ही संकल्प करना अत्यावश्यक है। प्रस्तुत ग्रन्थ के साथ तो इसका पूर्ण सम्बन्ध है ही इस प्रकार यह ग्रन्थ अपने आप में परिपूर्ण है। इसके द्वारा अपने चरम लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। अन्त में **'भैरवोऽहं शिवोऽहं'** के उद्घोष द्वारा इष्ट एवं गुरु के साथ तादात्म्य स्थापित कर सकते हैं।

आचार्य चरण ने चिद्विलास की विवृत्ति म कहा है कि **'गुरु तत्व शिव तत्व शक्ति तत्वात्मतत्वेषु अभेदत्वात् अद्वैतमेवास्या श्री विद्या साधनायाः मन्तव्यम् । अस्य साक्षात्कारेण सर्व क्लेश जातं निवर्तते ।'**

अस्तु, इसी अद्वैत तत्व को साक्षात् करने हेतु यह ग्रन्थ सक्रिय योगदान करता है । इस साधना में व्यवहार एवं सिद्धान्त दोनों का सही सही तालमेल है । व्यवहार से दूर रहनेवाला सिद्धान्त निष्प्राण है क्रिया ही सिद्धान्त को जीवित रखती है तथा सिद्धान्त क्रिया को । इसमें दोनों अविनाभाव से अवस्थित हैं ।

अतः यह अद्वैत समझ में आता है, सरल है, और बुद्धि गम्य है । इस तत्व के प्रत्यक्षदर्शी जीवन्मुक्त महापुरुषों के दर्शन आज भी सुलभ हैं । वे ही कृपा करके धर्म के सच्चे स्वरूप का उपदेश दे रहे हैं और आज धर्म की पुनः प्रतिष्ठा कर रहे हैं ।

अस्तु, प्रस्तुत प्रकाशन करते हुये परिषद् परम प्रसन्न है अन्त में जिनके निर्देशन में यह ग्रन्थ मुद्रित हुआ है **श्री कैलाशनाथ शर्मा** का परिश्रम अत्यन्त श्लाघनीय है । **श्री शिवनाथ शर्मा** ने अपने नागपुर स्थित शिव-शक्ति मुद्रणालय में मुद्रित कर आश्रम की सेवा की । तदर्थ श्री भगवती की सानुकूलता चाहता हूँ । श्री मोतीलाल मास्टर परिषद् के सक्रिय सदस्य हैं इनका योगदान उल्लेखनीय है ।

पं. राधा रमण दुर्वार ने मुद्रणार्ह प्रतिलिपि की है, पं. ओं नारायण द्विवेदी का भी योग दान हमें प्राप्त हुआ है । इन सब महानुभावों के प्रति आभार प्रदर्शन केवल उपचार मात्र है वस्तुतः यें सब परिषद् के ही अभिन्न अङ्ग हैं ।

इस ग्रन्थ के द्वारा साधक अपनी साधना में अग्रसर हों एसी आशा करता हूँ ।

ॐ तत्सत्

**ब्रजनन्दन शास्त्री** (साहित्याचार्य)
मंत्री
**श्री पीताम्बरा संस्कृत परिषद्, दतिया**
(म. प्र.)

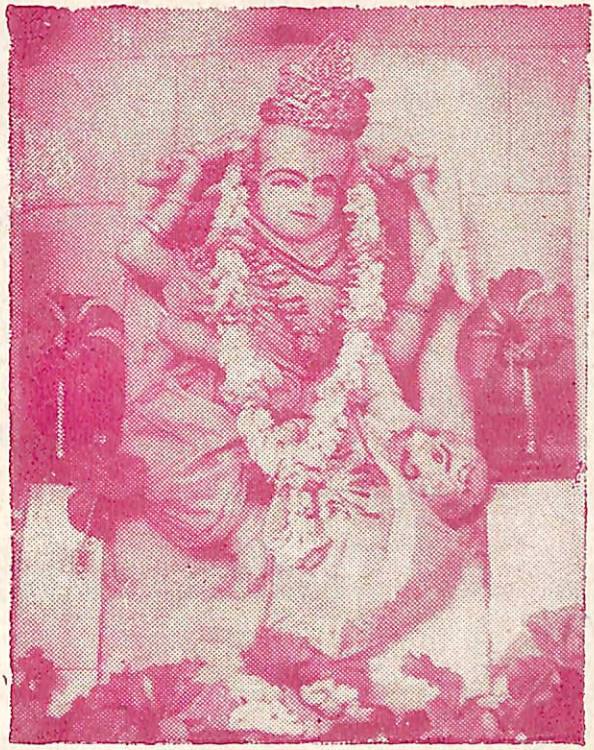

भगवती

श्री पीताम्बरा बगला

# सप्तविंशति-रहस्यम्

## अथ गुरुमण्डल क्रमः

श्री नाथादि, गुरुत्रयं, गणपति पीठत्रयं भैरवं,
सिद्धौघं वटुकत्रयं पदयुगं दूतीक्रमं मण्डलम् ॥
वीरान्द्व्यष्ट चतुष्क-षष्टि नवकं वीरावली पञ्चकं,
श्रीमन्मालिनि मन्त्रराज सहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम् ॥१॥
पूर्वं दक्षिण पश्चिमोत्तर मनुञ्चोर्ध्वं ततोऽनुत्तरम्,
स्तोतो द्वन्दपरं गुरुंश्च चरणान्रक्तादि मिश्रान्तकान् ।
पञ्चाम्बा नवनाथ-षोडश षडाधारञ्च षड्दर्शनं,
वागाद्यष्टक--सप्तविंशति-रहस्यान्तान्यसेत्पूजयेत् ॥२॥
अनुत्तर महासंवित्, स्तोतस्स्वच्छन्द चारिणे ।
प्रकाशानन्दनाथाय, शिवाय गुरवे नमः ॥३॥

न्यासः–तदनन्तरं गुर्वादीनां विनियोगः। ह्रामिति षड्दीर्घभाजा न्यासः।

### श्री गुरुः

अस्य श्रीगुरुपादुका मन्त्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः गायत्रीछन्दः श्रीगुरुर्देवता प्रीत्यर्थे जपेविनियोगः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः हंसः शिवः सोऽहं हंसः स्वरूप निरूपण हेतवे श्री गुरवे नमः रक्ताम्बोपेत श्रीगुरुपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

### श्री गुरुध्यानम्

वन्दे गुरुपदद्वन्दमवाङ् मनस गोचरम् ।
रक्त शुक्ल प्रभामिश्रमतर्क्यं त्रैपुरं महः ॥

इतिध्यात्वा पञ्चोपचारैः पूजनम्

### मुद्राः

स्तम्भनं चतुरस्रञ्च, मत्स्यं कूर्मञ्च योनिकम् ।
एतामुद्राः प्रदर्श्याथ, मूल मंत्रं जपेत् सुधीः ॥

### श्री परमगुरुः

परमगुरु मंत्रस्यापि न्यासादिकं तद्वदेव ।

**मंत्रः–** ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः सोऽहं- हंसः- शिवः- स्वच्छप्रकाश- विमर्श हेतवे परम- गुरुवे नमः। पीताम्बोपेत- प्रतिभानन्द नाथ- परमगुरु- श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इति संघट्टमुद्रया सकलं पूर्ववत् ।

### श्री परमेष्ठि गुरुः

अस्य श्री परमेष्ठि गुरुमंत्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः गायत्री छंदः परमेष्ठिगुरुर्देवता–

**मंत्रः–** ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः हंसः शिवः सोऽहं हंसः स्वात्माराम - परमानन्द पञ्जर विलीन तेजसे परमेष्ठि गुरवे नमः शुक्लाम्बोपेत स्वभावानन्दनाथ परमेष्ठि गुरु श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । अन्यत् सर्वं पूर्ववदेव ।

**विनियोगः–** अस्य श्री गुरु मण्डल मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छंदः, श्री गुरुमण्डल देवता ऐं वीजं ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकं श्री गुरुमण्डल प्रसन्नार्थे जपे विनियोगः ।

**करन्यासः :–**

ऐं ह्सां शिवः अंगुष्ठाभ्यां नमः
क्लीं ह्सीं शिवः तर्जनीभ्यां नमः
सौः ह्सूं सोऽहं शिवः मध्यमाभ्यां नमः
ऐं ह्सैं शिवः अनामिकाभ्यां नमः
क्लीं ह्सौं शिवः कनिष्ठिकाभ्यां नमः,
सौः ह्सः सोऽहं हंसः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः

### १– दिव्यौघः

१ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री शिवानन्दनाथ पराशक्त्यम्बा–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

२ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री सदाशिवानन्दनाथ चिच्छक्त्यम्बा–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

३ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ईश्वरानन्दनाथ आनन्दशक्त्यम्बा–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

४ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री रुद्रदेवानन्दनाथ इच्छाशक्त्यम्बा–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

५ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री विष्णुदेवानन्दनाथ ज्ञानशक्त्यम्बा–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

६ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ब्रह्मदेवानन्दनाथ क्रियाशक्त्यम्बा–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

## २ सिद्धौघः

१ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री सनकानन्दनाथ–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

२ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री सनन्दनानन्दनाथ–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

३ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री सनातनानन्दनाथ–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

४ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री सनत्कुमारानन्दनाथ–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

५ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री शौनकानन्दनाथ–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

६ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री सनत्सुजातानन्दनाथ–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

७ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री दत्तात्रेयानन्दनाथ–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

८ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री रैवतानन्दनाथ–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

९ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री वामदेवानन्दनाथ–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

१० ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री व्यासानन्दनाथ–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

११ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री शुकानन्दनाथ-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

**मानवौघः**

१ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री नृसिंहानन्दनाथ-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

२ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री महेशानन्दनाथ-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

३ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री भास्करानन्दनाथ-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

४ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री महेन्द्रानन्दनाथ-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

५ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री माधवानन्दनाथ-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

६ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री विष्णुदेवानन्दनाथ-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

## कादिविद्या गुरुमण्डलम्

### (ऊर्ध्वाम्नाये षोडश्युपासकानाम्)

**मानवौघः**

१ ऐं क ए ई ल ह्रीं क्लीं ह स क ह ल ह्रीं सौः स क ल ह्रीं
आत्मानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

२ ऐं क ए ई ल ह्रीं क्लीं ह स क ह ल ह्रीं सौः स क ल ह्रीं
परमानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

३ ऐं क ए ई ल ह्रीं क्लीं ह स क ह ल ह्रीं सौः स क ल ह्रीं
शाम्भवानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

४ ऐं क ए ई ल ह्रीं क्लीं ह स क ह ल ह्रीं सौः स क ल ह्रीं
चिन्मुद्रानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

५ ऐं क ए ई ल ह्रीं क्लीं ह स क ह ल ह्रीं सौः स क ल ह्रीं
श्री वाग्भवानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

६ ऐं क ए ई ल ह्रीं क्लीं ह स क ह ल ह्रीं सौः स क ल ह्रीं
श्री नीलकण्ठानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
७ ऐं क ए ई ल ह्रीं क्लीं ह स क ह ल ह्रीं सौः स क ल ह्रीं
श्री सम्भ्रमानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
८ ऐं क ए ई ल ह्रीं क्लीं ह स क ह ल ह्रीं सौः स क ल ह्रीं
श्री चिदानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
९ ऐं क ए ई ल ह्रीं क्लीं ह स क ह ल ह्रीं सौः स क ल ह्रीं
श्री प्रसन्नानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
१० ऐं क ए ई ल ह्रीं क्लीं ह स क ह ल ह्रीं सौः स क ल ह्रीं
श्री विश्वात्मानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
११ ऐं क ए ई ल ह्रीं क्लीं ह स क ह ल ह्रीं सौः स क ल ह्रीं
श्री मदमुकानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

---

## (शुद्ध परम्परा)

### दिव्यौघः

१ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री पराभट्टारिकानन्दनाथ–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
२ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री अघोरानन्दनाथ–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
३ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री श्रीकण्ठानन्दनाथ–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
४ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री शक्तिधरानन्दनाथ–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
५ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री क्रोधीशानन्दनाथ–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
६ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री अम्बिकानन्दनाथ–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
७ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री भट्टानन्दनाथ–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

**सिध्दौघः**

१ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री प्रतिभानन्दनाथ–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

२ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री वीरानन्दनाथ–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

३ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री संविदानन्दनाथ–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

**मानवौघः**

१ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री सदाशिवानन्दनाथ–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

२ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री संविदानन्दनाथ–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

३ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री महेश्वरानन्दनाथ–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

४ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री संविदानन्दनाथ–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

५ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री योगानन्दनाथ–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

६ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री मदुत्तरानन्द संविदम्बा–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

७ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री विद्यानन्द नाथ–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

इति शुद्ध परम्परा

---

## (श्री लोपामुद्रा परम्परा)

**दिव्यौघः**

१ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री परमशिवानन्दनाथ–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

२ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री पराशक्त्यम्बा–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

३ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री कामेश्वर्यम्बा–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

४ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री भगमालिन्यम्बा–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

५ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री अगस्त्यानन्दनाथ–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

**सिद्धौघः**

१ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री कलानन्दनाथ–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

२ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री धर्मचर्यानन्दनाथ–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

३ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री मुक्तकेश्यम्बा–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

४ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री दीपिकानन्दनाथ–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

**मानवौघः**

१ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री विष्णुदेवानन्दनाथ–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

२ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री मातृगुप्तानन्दनाथ–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

३ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री तेजोदेवतानन्दनाथ–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

४ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री भोजानन्दनाथ–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

५ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री कामानन्दनाथ–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

६ ॐ ऐं ह्लीं श्रीं श्री परानन्दनाथ–

श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

७ ॐ ऐं ह्लीं श्रीं श्री आज्ञानन्दनाथ

श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

(इति लोपामुद्रा पारम्पर्यम्)

**श्री कामराज परम्परा**

१ ॐ ऐं ह्लीं श्रीं श्री परमशिवाप्तानन्दनाथ–

श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

२ ॐ ऐं ह्लीं श्रीं श्री पराशक्त्यम्बा–

श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

३ ॐ ऐं ह्लीं श्रीं श्री पराधिकानन्दनाथ–

श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

४ ॐ ऐं ह्लीं श्रीं श्री कौलेश्वरानन्दनाथ श्री शुक्लदेव्यम्बा–

श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

५ ॐ ऐं ह्लीं श्रीं श्री कुलेश्वरानन्दनाथ श्री कामेश्वर्यम्बा–

श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

**सिद्धौघः**

१ ॐ ऐं ह्लीं श्रीं श्री भोगानन्दनाथ–

श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

२ ॐ ऐं ह्लीं श्रीं श्री क्लिन्नानन्दनाथ–

श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

३ ॐ ऐं ह्लीं श्रीं श्री समयानन्दनाथ–

श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

४ ॐ ऐं ह्लीं श्रीं श्री सहजानन्दनाथ–

श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

**मानवौघः**

१ ॐ ऐं ह्लीं श्रीं श्री गगनानन्दनाथ–

श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

२ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री विश्वानन्दनाथ–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

३ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री विमलानन्दनाथ–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

४ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री मदनानन्दनाथ–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

५ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री भुवनानन्दनाथ–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

६ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लीलानन्दनाथ–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

७ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री स्वात्मानन्दनाथ–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

८ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री प्रियानन्दनाथ–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

इति कामराज परम्परा

## गुरुत्रयम्

विनियोगः पूर्ववदेव ज्ञातव्यः

१ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हंसः शिवः सोऽहं स्वरूप निरूपण हेतवे श्री स्वगुरु
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

२ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सोऽहं हंसः शिवः प्रकाश विमर्श हेतवे श्री परमगुरु
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

३ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ हंसः शिवः सोऽहं हंसः स्वात्माराम परमानन्द पञ्जर- विलीन हेतवे श्री परमेष्ठि गुरु–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

## गणपतिम्

**विनियोगः–**

ॐ अस्य श्री महागणपति मंत्रस्य गणक ऋषिः निचृद् गायत्री छंदः महागणपतिर्देवता गं वीजं स्वाहा शक्तिः ग्लौं कीलकम्

श्री महागणपति प्रसन्नार्थे जपे विनियोगः। न्यासं कृत्वा ग्लौं बीजेन ध्यायेत्।

## ध्यानम्

**हस्तीन्द्राननमिन्दुचूडमरुणच्छायं त्रिनेत्रंरसा-**
**दाश्लिष्टं प्रियया सपद्मकरया स्वाङ्कस्थया संततम्।**
**बीजापूर गदाधनुस्त्रिशिखयुक् चक्राब्ज पाशोत्पल,**
**व्रीह्यग्रस्वविषाण रत्नकलशान्हस्तैर्वहन्तं भजे ॥**

**मंत्रः–** ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा। १०० जप्त्वोत्तर न्यासं कृत्वा समर्पयेत्।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

## पीठत्रयम्

१ **विनियोगः–** ॐ अस्य श्री कामगिरि पीठमंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः ब्रह्माणी देवता, अं वीजं आं शक्तिः क्लीं कीलकम् कामगिरि पीठ शक्ति प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

**षडङ्गन्यासः–** ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः इति षडङ्गन्यासः।

**ध्यानम्– अरुण किरण जालै राजिताशावकासा,**
**विधृतजपवटीका पुस्तकाऽभीतिहस्ता।**
**इतरकरवराढ्या फुल्लकह्लारसंस्था**
**निवसतु हृदि बाला नित्य कल्याणशीला ॥**

**मंत्रः–** ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः अं आं सौः श्री कामगिरि पीठाम्बा ब्रह्मात्मक शक्ति रूपिणी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

२ ॐ अस्य श्री पूर्णगिरि पीठमंत्रस्य विष्णु ऋषिः अनुष्टुप् छंदः पूर्णगिरि पीठ शक्तिः नारायणी देवता ऐं वीजं श्रीं शक्तिः ह्रीं कीलकम् श्री नारायणी प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

**षडङ्गन्यासः–** श्रां श्रीं श्रूं श्रैं श्रौं श्रः इति षडङ्गन्यासः ।

### ध्यानम्

**भूयाद्भूयो द्विपद्माऽभयवरदकरा तप्तकार्तस्वराभा,**
**शुभ्राभानेत्रयुग्मोर्ध्व करधृत महाम्भोभिरासिच्यमाना ।**
**रत्नौघाबद्धमौलिर्विमलतर सदा भूषितासंपदाढ्या,**
**पद्माक्षी पद्मनाभोरसिकृत वसतिः पद्मरागा श्रियै नः ।**

**मंत्रः–** ऐं ह्रीं श्रीं सौः क्लीं ऐं पूर्णगिरि पीठाम्बा श्रीविष्णुआत्मक शक्ति श्रीनारायणी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

३ ॐ अस्य श्री जालन्धर पीठ मंत्रस्य रुद्र ऋषिः अतिजगती छंदः जालन्धरपीठ शक्तिः गौरी देवता सौः वीजं ऐं शक्तिः ह्रीं कीलकम् जालन्धरपीठ शक्तिः गौरी प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

**षडङ्गन्यासः–** ऐं क्लीं सौः इति द्विरावृत्या ।

### ध्यानम्

**आधारे तरुणार्क बिम्ब रुचिरं, हेमप्रभं वाग्भवम्,**
**बीजं मन्मथमिन्द्रगोपसदृशं, हृत्पङ्कजे संस्थितम् ।**
**रन्ध्रे ब्रह्मपदस्य शाक्तमपरं, सोमप्रभं भासुरम्,**
**ये ध्यायन्ति पदत्रयं तव शिवे, ते यान्ति सौख्यं परम् ॥**

**मंत्रः–** ऐं क्लीं सौः ह्रीं श्रीं ऐं जालन्धरपीठ रुद्रात्मक शक्ति श्रीगौर्यम्बादेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(पूर्वाम्नायः)

## (भैरवम्)

**विनियोगः–** अथ श्री भैरवाणां मंत्रस्य कालाग्निरुद्र ऋषिः त्रिष्टुप छंदः भैरवो देवता हं वीजं हुं शक्तिः फट् कीलकम् भैरवाणां प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

**कराङ्गन्यासः–** (आं ईं ऊं ऐं औं अः) इति न्यासौ फां फीं फूं फैं फौं फः । इति कराङ्गहृदयादि न्यासौ ।

ध्यानम्

कर कलित कपाल: कुण्डली दण्डपाणि:,
तरुण तिमिर नील, व्याल यज्ञोपवीती।
ऋतु समय सपर्या, विघ्न विच्छेद हेतु-
र्जयति बटुकनाथ: सिद्धिद: साधकानाम्॥

१ ऐं ह्लीं श्रीं फें फट् फां फीं ह्लीं श्रीं श्रीमन्थानभैरव-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम:
२ ऐं ह्लीं श्रीं फें फट् फां फीं ह्लीं श्रीं श्रीफट्कारभैरव-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम:
३ ऐं ह्लीं श्रीं फें फट् फां फीं ह्लीं श्रीं श्रीषट्चक्रभैरव-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम:
४ ऐं ह्लीं श्रीं फें फट् फां फीं ह्लीं श्रीं श्रीएकात्मभैरव-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम:
५ ऐं ह्लीं श्रीं फें फट् फां फीं ह्लीं श्रीं श्रीहबिर्भक्ष्यभैरव-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम:
६ ऐं ह्लीं श्रीं फें फट् फां फीं ह्लीं श्रीं श्रीचण्डभैरव-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम:
७ ऐं ह्लीं श्रीं फें फट् फां फीं ह्लीं श्रीं श्रीभ्रमरभास्करभैरव-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम:

(इति भैरवम्)

## (सिद्धौघम्)

विनियोग:- अथ सिद्धानां मंत्रस्य आनन्दभैरव ऋषि: अव्यक्त गायत्री छंद: सिद्धा देवता, अं बीजं आं शक्ति: ईं कीलकम् सिद्धानां प्रीत्यर्थे जपे विनियोग:।

कराङ्गन्यास:- आं ईं ऊं ऐं औं अ:। इति।

ध्यानम्

बिन्दुं मुद्रां कपालं च वरदाऽभय हस्तका:।
सुप्रसन्ना महाभागाध्येया: सिद्धा: सुखप्रदा:॥

मंत्रः–

१ ह्रीं श्रीं सौः श्री महादुर्मताम्बा सिद्ध–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
२ ह्रीं श्रीं सौः श्री सुन्दर्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
३ ह्रीं श्रीं सौः श्री करालिकाम्बा–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
४ ह्रीं श्रीं सौः श्री विश्वदलाम्बा–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
५ ह्रीं श्रीं सौः श्री माम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
६ ह्रीं श्रीं सौः श्री करणिकाम्बा–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
७ ह्रीं श्रीं सौः श्री खरानताम्बा–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
८ ह्रीं श्रीं सौः श्री विशालिन्यम्बा–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

## बटुकत्रयम्

**विनियोगः**– अथ वटुकत्रय मंत्रस्य ब्रह्म विष्णु रुद्रा ऋषयः गायत्री छंदः बटुकत्रय देवता शं षं सं अं हं सः इति बीजानि सरस्वती लक्ष्मी गिरिजा शक्तयः ऐं ह्रीं श्रीं इति कीलकम्, वटुकत्रय प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासः**– फां फीं फूं फैं फौं फः। एवं हृदयादि।

## ध्यानम्

१– वरदाऽभय हस्तं च, साक्षमाला कमण्डलुम्।
बटुकं प्रथमं वन्दे, वाग्देवीसहितं प्रभुम्॥
२– शंख चक्रधरं देवं, चापबाणैरलंकृतम्।
ध्यायेन्मुकुन्द बटुकं श्रियायुक्तं सुयौवनम्॥
३– बिभ्रतं डमरुं शूलं, वरदाऽभयहस्तकम्।
गौर्या देव्या समायुक्तं, ध्यायेद्रौद्रं महास्वनम्॥

१ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं सौः क्लीं हुं फट् श्री स्कन्दबटुक–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

२ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं सौः क्लीं हुं फट् श्री चित्रबटुक–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

३ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं सौः क्लीं हुं फट् श्री विरञ्चिबटुक–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

## पदयुगम्

**विनियोगः–** अथ पदयुग मंत्रस्य दत्तात्रेयो भगवान् ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः पदयुगं देवता हं वीजं सः शक्तिः सोऽहं कीलकम् पदयुग प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

**करन्यासः–**

ह स क ल ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः
ह स क ल ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः
ह स क ल ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः
ह स क ल ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः
ह स क ल ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः
ह स क ल ह्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः
एवं हृदयादि ।

## ध्यानम्

**सिञ्जन्नूपुर पादकङ्कणरणन्मुद्रा सुलाक्षारसा-**
**लङ्काराङ्कित शोभितं पदयुगं श्रीपादुकालङ्कृतम् ।**
**उद्यद्भासि नखैश्च चन्द्रशकलै राजज्जपा संनिभं,**
**ब्रह्मादित्रिदशैः समर्चित पदं मूर्ध्नि स्मराम्यम्बिकाम् ॥**

मंत्रः– ह स क ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं श्रीप्रकाश पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । द्वितीय ऋष्यादि ध्यानं पूर्ववदेव ज्ञातव्यम् ।

**मंत्र**: २:– क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं श्री विमर्श पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (दक्षिणाम्नायः)

(इति पदयुगम्)

## (दूती क्रमम्)

**विनियोगः**– अथ नवदूती मंत्रस्य मन्मथ ऋषिः दैवी गायत्री छंदः नवदूत्यो देवता अं वीजं क्लीं शक्तिः आं कीलकम् नवदूती प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

**न्यासः**– अं आं सौः इति द्विरावृत्या षडङ्गन्यासः।

### ध्यानम्

**दूतयस्तु तथा सर्वा, वरदाऽभय हस्तकाः,**
**योनिमुद्रा च वामे तु, पान पात्रं च दक्षिणे।**
**ध्येया सर्वाश्च कार्यार्थे, नवयोन्यो यथा क्रमम्॥**

**मंत्रः**–

१ अं आं सौः ह्रीं श्रीं सौः श्री योन्यम्बादूतिका–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

२ अं आं सौः ह्रीं श्रीं सौः श्री योनिसिद्धनाथाम्बादूतिका–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

३ अं आं सौः ह्रीं श्रीं सौः श्री महायोन्यम्बादूतिका–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नभः

४ अं आं सौः ह्रीं श्रीं सौः श्री महायोनि सिद्धनाथाम्बादूतिका–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

५ अं आं सौः ह्रीं श्रीं सौः श्री दिव्य योन्यम्बादूतिका–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

६ अं आं सौः ह्रीं श्रीं सौः श्री दिव्ययोनि सिद्धनाथाम्बादूतिका–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

७ अं आं सौः ह्रीं श्रीं सौः श्री शंख योन्यम्बादूतिका–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

८ अं आं सौः ह्रीं श्रीं सौः श्री शंखयोनि सिद्धनाथाम्बादूतिका–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

९ अं आं सौः ह्रीं श्रीं सौः श्री पद्मयोन्यम्बादूतिका–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
१० अं आं सौः ह्रीं श्रीं सौः श्री पद्मयोनि सिद्धनाथाम्बादूतिका–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

(इति दूती क्रमम्)

## (मण्डलम्)

**विनियोगः**– अथ मण्डलत्रय मंत्रस्य सोम सूर्याग्नयः ऋषयः गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् छंदांसि, सोम सूर्याग्नयो देवता, सं, हं, रं, इति बीजानि, अमृता, तापिनी, धूमार्चिषि शक्तयः आं ईं ऊं कीलकानि, सोम सूर्याग्नि प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

न्यासः– आं ईं ऊं ऐं औं अः इति सौम्याः,
तां तीं तूं तैं तौं तः इति सौराः।
धां धीं धूं धैं धौं धः इति आग्नेयाः।
स्व स्व करादिन्यासाः।

### ध्यानम्

१– **क्षीरोदार्णव सम्भूतं शशिनं सर्व कामदम्।**
**अमृतेनावृतं नित्यं ध्यायेत्सर्वकलायुतम्॥**
२– **आदित्यं सर्वकर्तारं, कलाद्वादश संयुतम्।**
**पद्महस्तद्वयं वन्दे, सर्व लोकैकसाक्षिणम्॥**
३– **सदा देवीप्रियंरौद्रं, सप्तास्यं सर्वतोमुखम्।**
**वन्दे तं शिखिनं नित्यं, हव्य कव्य वहं सदा॥**

मंत्रः–
१ ह्रीं श्रीं सौः सोम मण्डल श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
२ ह्रीं श्रीं सौः क्लीं सूर्य मण्डल–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
३ ह्रीं श्रीं सौः ऐं अग्नि मण्डल–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

(इति मण्डलत्रयम्)

## (वीरानुद्व्यष्ट)

**विनियोग:–**

अथ दशवीर मंत्रस्य आनन्दभैरव ऋषि: गायंत्री छंद: दशवीरा देवता ॐ वीजं ह्लीं शक्ति: कं कीलकम् दशवीर प्रीत्यर्थे जपे विनियोग: ।

**न्यास:–**

फां फीं फूं फैं फौं फ: । इति पूर्ववत् न्यास: ।

**ध्यानम्**

**खड्ग खेट धरावीरा, वरदाऽभय हस्तका: ।**
**ध्येया सर्वे महारौद्रा, सर्व विघ्न निवारका: ॥**

**मंत्र:–**

१ ह्लीं श्रीं फट् फां फीं श्रीसृष्टिभैरव–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम:
२ ह्लीं श्रीं फट् फां फीं श्रीस्थितिवीरभैरव–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम:
३ ह्लीं श्रीं फट् फां फीं श्रीसंहारवीरभैरव–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम:
४ ह्लीं श्रीं फट् फां फीं श्रीरक्तवीरभैरव–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम:
५ ह्लीं श्रीं फट् फां फीं श्रीयमवीरभैरव–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम:
६ ह्लीं श्रीं फट् फां फीं श्रीमृत्युवीरभैरव–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम:
७ ह्लीं श्रीं फट् फां फीं श्रीभद्रवीरभैरव–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम:
८ ह्लीं श्रीं फट् फां फीं श्री परमार्कवीरभैरव–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम:

९ ह्रीं श्रीं फट् फां फीं श्रीमार्तण्डवीरभैरव–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
१० ह्रीं श्रीं फट् फां फीं श्रीकालाग्निरुद्रवीरभैरव–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

(इति वीरान्द्वचष्ट)

## (चतुष्क षष्टि)

**विनियोगः–**

अथ चतुः षष्टि सिद्धा देवता मंत्रस्य सदाशिव ऋषिः दैवी गायत्री छंदः, चतुः षष्टि सिद्धा देवता ऐं वीजं क्लीं शक्तिः सौः कीलकम्, चतुः षष्टि सिद्धा प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

**करन्यासः–** ऐं आं अं अंगुष्ठाभ्यां नमः
क्लीं ईं तर्जनीभ्यां नमः
सौः ॐ मध्यमाभ्यां नमः
ऐं ऐं अनामिकाभ्यां नमः
क्लीं औं कनिष्ठिकाभ्यां नमः
सौः अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः

### ध्यानम्

**मधुपात्र समायुक्ता, बिन्दु मुद्रा विराजिता ।**
**वरदाऽभय हस्ता च, ध्यातव्याः सिद्ध देवताः ॥**

**मंत्र–**

१ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं सौः श्रीं ह्रीं श्रीमंगलानाथा–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
२ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं सौः श्रीं ह्रीं श्रीचण्डिकानाथा–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
३ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं सौः श्रीं ह्रीं श्रीज्येष्ठानाथा–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

४ ऐं ह्लीं श्रीं क्ली श्रीं ह्लीं सौः श्रीं ह्लीं श्रीपट्टहानाथा–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

५ ऐं ह्लीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्लीं सौः श्रीं ह्लीं श्रीकूर्मानाथा–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

६ ऐं ह्लीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्लीं सौः श्रीं ह्लीं श्रीधनदानाथा–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

७ ऐं ह्लीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्लीं सौः श्रीं ह्लीं श्रीगंधानाथा–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

८ ऐं ह्लीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्लीं सौः श्रीं ह्लीं श्रीमातङ्गानाथा–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

९ ऐं ह्लीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्लीं सौः श्रीं ह्लीं श्रीगगनानाथा–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

१० ऐं ह्लीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्लीं सौः श्रीं ह्लीं श्रीचम्पकानाथा–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

११ ऐं ह्लीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्लीं सौः श्रीं ह्लीं श्रीकैवर्तानाथा–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

१२ ऐं ह्लीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्लीं सौः श्रीं ह्लीं श्रीमतङ्गगमनानाथा–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

१३ ऐं ह्लीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्लीं सौः श्रीं ह्लीं श्रीसूर्यभक्ष्यानाथा–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

१४ ऐं ह्लीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्लीं सौः श्रीं ह्लीं श्रीनभोभक्ष्यानाथा–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

१५ ऐं ह्लीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्लीं सौः श्रीं ह्लीं श्रीसौतिकानाथा–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

१६ ऐं ह्लीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्लीं सौः श्रीं ह्लीं श्रीरूपिकानाथा–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

१७ ऐं ह्लीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्लीं सौः श्रीं ह्लीं श्रीदंष्ट्रापूज्यानाथा–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

१८ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं सौः श्रीं ह्रीं श्रीधूम्राक्षानाथा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
१९ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं सौः श्रीं ह्रीं श्रीज्वालानाथा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
२० ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं सौः श्रीं ह्रीं श्रीगान्धारानाथा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
२१ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं सौः श्रीं ह्रीं श्रीकुल्लुकानाथा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
२२ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं सौः श्रीं ह्रीं श्रीमायानाथा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
२३ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं सौः श्रीं ह्रीं श्रीमहामायानाथा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
२४ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं सौः श्रीं ह्रीं श्रीनित्यानाथा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
२५ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं सौः श्रीं ह्रीं श्रीशालानाथा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
२६ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं सौः श्रीं ह्रीं श्रीविश्वानाथा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
२७ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं सौः श्रीं ह्रीं श्रीकामिनीनाथा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
२८ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं सौः श्रीं ह्रीं श्रीउमानाथा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
२९ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं सौः श्रीं ह्रीं श्रीश्रियानाथा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
३० ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं सौः श्रीं ह्रीं श्रीसुभगानाथा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
३१ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं सौः श्रीं ह्रीं श्रीसर्वगानाथा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

३२ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं सौः श्रीं ह्रीं श्रीलक्ष्मीनाथा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
३३ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं सौः श्रीं ह्रीं श्रीगगनेश्वरानाथा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
३४ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं सौः श्रीं ह्रीं श्रीविद्यानाथा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
३५ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं सौः श्रीं ह्रीं श्रीमीनानाथा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
३६ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं सौः श्रीं ह्रीं अमृतानाथा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
३७ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं सौः श्रीं ह्रीं श्रीचन्द्रानाथा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
३८ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं सौः श्रीं ह्रीं श्रीसिद्धानाथा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
३९ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं सौः श्रीं ह्रीं श्रीश्रद्धानाथा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
४० ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं सौः श्रीं ह्रीं श्रीअनन्तानाथा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
४१ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं सौः श्रीं ह्रीं श्रीशम्बरानाथा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
४२ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं सौः श्रीं ह्रीं श्रीउल्कानाथा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
४३ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं सौः श्रीं ह्रीं श्रीत्रैलोक्यानाथा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
४४ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं सौः श्रीं ह्रीं श्रीभीमानाथा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
४५ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं सौः श्रीं ह्रीं श्रीराक्षसीनाथा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

४६ ऐं ह्लीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्लीं सौः श्रीं ह्लीं श्रीमणिनाथा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
४७ ऐं ह्लीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्लीं सौः श्रीं ह्लीं श्रीप्रचण्डानाथा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
४८ ऐं ह्लीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्लीं सौः श्रीं ह्लीं श्रीअनङ्गानाथा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
४९ ऐं ह्लीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्लीं सौः श्रीं ह्लीं श्रीविधिनाथा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
५० ऐं ह्लीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्लीं सौः श्रीं ह्लीं श्रीअनभिहितानाथा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
५१ ऐं ह्लीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्लीं सौः श्रीं ह्लीं श्रीनन्दिनीनाथा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
५२ ऐं ह्लीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्लीं सौः श्रीं ह्लीं श्रीमहामनानाथा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
५३ ऐं ह्लीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्लीं सौः श्रीं ह्लीं श्रीसुन्दरीनाथा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
५४ ऐं ह्लीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्लीं सौः श्रीं ह्लीं श्रीविश्वेश्वरीनाथा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
५५ ऐं ह्लीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्लीं सौः श्रीं ह्लीं श्रीकालनाथा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
५६ ऐं ह्लीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्लीं सौः श्रीं ह्लीं श्रीमहाकालनाथा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
५७ ऐं ह्लीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्लीं सौः श्रीं ह्लीं श्रीअभयानाथा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
५८ ऐं ह्लीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्लीं सौः श्रीं ह्लीं श्रीविकारानाथा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
५९ ऐं ह्लीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्लीं सौः श्रीं ह्लीं श्रीमहाविकारानाथा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

६० ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं सौः श्रीं ह्रीं श्रीसर्वगानाथा–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
६१ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं सौः श्रीं ह्रीं श्रीसकलानाथा–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
६२ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं सौः श्रीं ह्रीं श्रीपूतनानाथा–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
६३ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं सौः श्रीं ह्रीं श्रीशर्वरीनाथा–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
६४ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं सौः श्रीं ह्रीं श्रीव्योमानाथा–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

(पश्चिमाम्नायः)

## (मुद्रा) नवकम्

**विनियोगः–**

अस्य श्री मुद्रा चक्रस्य अष्टभैरव ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः आनन्दभैरव देवता, ऐं वीजं सौः शक्तिः क्लीं कीलकम् ममाभीष्ट सिध्यर्थे जपे विनियोगः ।

**कराङ्गन्यासः:–**

द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सौः श्रीं बीजैः कराङ्गन्यासः ।

### ध्यानम्

**शूलपात्राऽभय कराः, सर्वाभरण भूषिताः ।**
**सर्वाः शान्तिकरा नित्यं, मुद्राणामधिदेवताः ॥**

**मंत्रः–**

द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः क्रों ह्‍स्‍ख्‍फ्रें ह्‍स्रौः ऐं मुद्रानवकाय नमः ।

**मंत्राः-**

१ द्रां सर्वसंक्षोभिणी मुद्रायै नमः मुद्राम्बा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
२ द्रीं सर्वविद्राविणी मुद्रायै नमः मुद्राम्बा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
३ क्लीं सर्वाकर्षिणी मुद्रायै नमः मुद्राम्बा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
४ ब्लूं सर्ववशंकरी मुद्रायै नमः मुद्राम्बा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
५ सः सर्वोन्मादिनी मुद्रायै नमः मुद्राम्बा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
६ क्रों सर्वमहाङ्कुशा मुद्रायै नमः मुद्राम्बा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
७ हसखफ्रें सर्वखेचरी मुद्रायै नमः मुद्राम्बा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
८ हस्रौं सर्वबीजा मुद्रायै नमः मुद्राम्बा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
९ ऐं सर्वयोनि मुद्रायै नमः मुद्राम्बा-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

नव मुद्राम्बायै नमः

## (वीरावली पञ्चकम्)

**विनियोगः-**

अस्य वीरावली मंत्रस्य ब्रह्म विष्णु रुद्रेश्वर सदाशिव ऋषयः गायत्री छंदः वीरावली देवता लं वं रं यं हं बीजानि सरस्वती महालक्ष्मी उमा गौरी मनोन्मनी शक्तयः सोऽहं कीलकम् वीरावली सिध्यर्थे जपे विनियोगः।

**षडङ्गन्यासः-**

ऐं ह्रीं श्रीं इति द्विरावृत्या न्यासः।

ध्यानम्

ब्रह्मादयश्च पञ्चैते चतुर्भुजसमन्विताः ।
तत्तदायुधसंयुक्ता, ध्यातव्या सर्वसिद्धये ।।

मंत्राः–

१ ऐं ह्लीं श्रीं क्लीं सौः लं ब्रह्मवीरावल्यै नमः–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

२ ऐं ह्लीं श्रीं क्लीं सौः वं विष्णुवीरावल्यै नमः–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

३ ऐं ह्लीं श्रीं क्लीं सौः रं रुद्रवीरावल्यै नमः–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

४ ऐं ह्लीं श्रीं क्लीं सौः यं ईश्वरवीरावल्यै नमः–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

५ ऐं ह्लीं श्रीं क्लीं सौः हं सदाशिववीरावल्यै नमः–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

(उत्तराम्नायः)

## (श्रीमन्मालिनिमंत्रराजसहितम्)

विनियोगः–

ॐ अस्य श्री मालिन्यम्बा मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छंदः मालिन्यम्बा देवता, मातृकाभिः जपे विनियोगः ।

ध्यानम्

पञ्चाशद् वर्ण भेदैः विहित वदनदोः पादयुककुक्षि वक्षो,
देशांभास्वद्कपर्दां कलितशशिकलामिन्दु कुन्दावदाताम् ।
अक्षस्त्रक् कुम्भचिह्नामभयवरकरां त्रीक्षणामब्जसंस्था,
मच्छाकल्पामतुच्छस्तनजघनभरां भारतीं तां नमामि ।।

नत्वा पूजां विधाय अं---क्षं जप्त्वोत्तर न्यासान् विधाय समर्पयेत् ।

**मंत्रः–**

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह स क्ष म ल व र यीं श्री मालिनि मूर्तये नमः स्वाहा (ऊर्ध्वाम्नायः)

**मंत्रः–**

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ॐ अ आं इं ईं १६ कं खं गं घं ङं. ३५ हंसः सोऽहं मालिन्यम्बायै नमः श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

**विनियोगः–**

अस्य श्री मंत्रराजमंत्रस्य शरभ ऋषिः गायत्री छंदः मंत्रराजो देवता हां वीजं ह्रीं शक्तिः हूं कीलकम् मंत्रराज प्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासः–**

हां ह्रीं हूं हैं हौं हः। इति कराङ्गन्यासः।

**मंत्रः–**

उग्रंवीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्।
नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥

**मंत्रः–**

हां ह्रीं हूं हैं हौं हः हुं फट् स्वाहा मंत्रराज–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

---

## अथाम्नायाः

### १– (पूर्वाम्नायः)

### १– शुद्धविद्या

**विनियोगः–**

अस्य श्री शुद्धविद्या मंत्रस्य कर्म विपाक सदाशिव ऋषिः गायत्री छंदः श्री शुद्धविद्या दिव्य मनोन्मनी देवता ऐं वीजं ईं शक्तिः औं कीलकम् पशुजन्म विमोचने शुद्धविद्या दिव्य मनोन्मनी प्रसाद सिध्यर्थे जपे विनियोगः।

कर्म विपाक सदाशिव ऋषये नमः शिरसि
गायत्री छन्दसे नमः मुखे
श्री शुद्धविद्या दिव्य मनोन्मनी देवतायै नमो हृदि
ऐं वीजाय नमो नाभौ
ईं शक्तये नमः पादयोः
औं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

न्यासौ–

ऐं ईं औं इति द्विरावृत्या कराङ्गहृदयादि न्यासौ ।

**ध्यानम्**

**शुद्धस्फटिकसंकाशां, शुद्धविद्यां मनोन्मनीम् ।**
**पुस्तकं चाक्षमालां च, ज्ञानमुद्रामभीतिकम् ॥**
**धारयन्तीं शिवां वन्दे, पशुपाशविमोचिनीम् ।**
**सर्वमंत्र प्रकाशां च, मातृकारूपमास्थिताम् ॥**
**मनोन्मनीं महाभागां, ध्यात्वा मंत्रं जपेद्बुधः ॥**

इति ध्यात्वा पंचपूजां विधाय ।

मंत्रः–

ऐं ईं औं शुद्धविद्याम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
उत्तरन्यासान् कृत्वा गुह्याति गुह्येति जपं निवेदयेत् ।

## २– बाला परमेश्वरी

विनियोगः–

ॐ अस्य श्री बाला परमेश्वरी मंत्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः पंक्तिः छंदः श्री बाला परमेश्वरी देवता ऐं वीजं सौः शक्तिः क्लीं कीलकम् श्री बाला प्रीत्यर्थे च जपे विनियोगः ।

न्यासः–

मंत्र द्विरावृत्या न्यासः ऋष्यादि न्यासश्च, कराङ्ग हृदयादि न्यासौ बीजत्रयी द्विरावृत्या ।

ध्यानम्

बालार्क मंडलाभासां, चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम् ।
पाशांकुश धनुर्बाणान्, धारयन्तीं शिवां भजे ॥

अपरञ्च– आर्द्रेयां शशिखण्ड मंडित जटा–
जूटां नृमुण्डस्रजम् ॥
बन्धूकप्रसवारुणाम्बर धरां
प्रेतासनाध्यासिनीम् ॥
त्वां ध्यायन्ति चतुर्भुजां,
त्रिनयनामापीनतुङ्गस्तनीम् ॥
मध्ये निम्नबलित्रयाङ्कित तनुं,
त्वद्रूपसंवित्तये ॥

शतंजप्त्वा उत्तरन्यासान् विधाय गुह्येति वामेसमर्पयेत् ।
श्री बालाम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

---

## ३– द्वादशार्धाम्बा

**विनियोगः–**

अस्य श्री द्वादशार्धाम्बा मंत्रस्य, परमानन्द भैरव ऋषिः गायत्री छंदः, ह स क ल र डैं बीजम् ह स क ल र डौः शक्तिः ह स क ल र डीं कीलकम्, द्वादशार्धाम्बा देवता, श्री द्वादशार्धाम्बा प्रसाद सिध्यर्थे जपे विनियोगः ।

**ऋष्यादिन्यासः–**

ऐं ह्रीं सौः ह्रीं स्त्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ऐं
ऐं ह्रीं सौः ह्रीं स्त्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ऐं ईशानमूर्ध्वे नमः
ह्रीं स्त्रीं क्लीं वामदेव कंदर्प नाभौ नमः
ह्रीं स्त्रीं ह्रीं सौः सद्योजात पादाभ्यां नमः
ह्रीं स्त्रीं ह्रीं सौः तत्पुरुष सर्वांगाय नमः

ह स क्ष म ल व र यूं आं ह स क ल र डैं अंगुष्ठाभ्यां नमः
ह स क्ष म ल व र यूं ईं ह स क ल र डीं तर्जनीभ्यां नमः
ह स क्ष म ल व र यूं ऊं ह स क ल र डौं मध्यमाभ्यां नमः
ह स क्ष म ल व र यूं ऐं ह स क ल र डौं अनामिकाभ्यां नमः
ह स क्ष म ल व र यूं औं ह स क ल र डीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः
ह स क्ष म ल व र यूं अः ह स क ल र डैं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः

हुं फट् इति दिग्बन्धः।

### ध्यानम्

द्वादशार्धां महादेवीं, बन्धूक प्रसवारुणां।
पाशांकुशौ धारयन्तीमक्षमालां च पुस्तकम्॥
पुण्ड्रेक्षुचापपुष्पेषु, वरदं चाभयं तथा।
चन्द्रचूडां त्रिनयनां च, पंचवक्त्र विभूषिताम्॥
शिवमंच समासीनां, ध्यायेदानन्द विग्रहाम्॥

इति ध्यात्वा पंचपूजां विधाय मुद्राःप्रदर्श्य–

**मंत्रः–**

ह् स् क् ल र् डैं, ह् स् क् ल र् डीं ह् स् क् ल् र् डौः इति द्वादशार्धाम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

### ४– हसन्ती श्यामलाम्बा

**विनियोगः–**

अस्य श्री हसन्ती श्यामला मंत्रस्य मतङ्ग ऋषिः अनुष्टुप् छंदः श्री हसन्ती श्यामलाम्बा देवता ऐं वीजं ह्रीं शक्तिः श्रीं कीलकम् श्री हसन्ती श्यामलाम्बा प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

**न्यासः–**

बीजत्रयेण द्विरावृत्या न्यासादि कृत्वा ध्यायेत्–

अंगुल्यान्तावलम्बामरुणमणिनिभां कंचुकीं धारयन्ती ।
कादम्बर्या कपालं, नयनत्रय युताकन्दला मन्दहासा ॥
मेघश्यामा मृगांकी, लसित कबरिका पाणिपद्मात्त वेत्रा ।
मातङ्गी सा हसन्ती मम भवतु सदा मंत्र विघ्नोपशान्त्यै ॥

**मंत्रः–**

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ह्रीं हसन्ती हसितालापे मातङ्गि परिचारिके मम विघ्नापदां नाशं कुरु कुरु ठः ठः ठः हुं फट् स्वाहा ।

शतं जप्त्वा गुह्येति समर्पयेत् ।

हसन्ती अम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

## ५– मातङ्गीश्वरी

**विनियोगः–**

ॐ अस्य श्री राजमातङ्गीश्वरी मंत्रस्य महा मातङ्गेश्वर ऋषिः पंक्तिः छन्दः राजमातङ्गीश्वरी देवता ऐं बीजं सौः शक्तिः क्लीं कीलकम् श्री राजमातङ्गीश्वरी प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

**न्यासादिः–**

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः नमो भगवति श्री राज-
मातङ्गेश्वरि अंगुष्ठाभ्यां नमः
सर्वजन मनो हारिणि सर्वमुख रंजनि-
तर्जनीभ्यां नमः ।
क्लीं ह्रीं श्रीं सर्वराज वशंकरि सर्वस्त्रीपुरुष वशंकरि
मध्यमाभ्यां नमः
सर्वदुष्ट मृग वशंकरि सर्वसत्व वशंकरि
अनामिकाभ्यां नमः
सर्वलोक वशंकरि सर्वजनं मे वशमानय
कनिष्ठिकाभ्यां नमः
स्वाहा सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः
एवं हृदयादि हुं फट् इति दिग्बंधः ।

### ध्यानम्

ध्यायेऽहं रत्नपीठे शुककलपठितं श्रृण्वतीं श्यामलाङ्गीं,
न्यस्तैकांघ्रि सरोजे शशिशकलधरां वल्लकीं वादयन्तीं ।
कल्हाराबद्धमालां नियमितविलसच्चूलिकां रक्तवस्त्रां
मातङ्गीं भूषितांङ्गीं मधुमदमुदितां चित्रकोद्भासि भालाम् ॥

**मंत्रः-**

ऐं ह्लीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ॐ नमो भगवति राज मातङ्गीश्वरि सर्वजन मनोहारिणि सर्वमुखरंजनि क्लीं ह्लीं श्रीं सर्वराज वशंकरि सर्वस्त्रीपुरुष वशंकरि सर्वदुष्ट मृग वशंकरि सर्व सत्व वशंकरि सर्व लोकवशंकरि सर्व जनं मे वशमानय स्वाहा । सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्लीं ऐं राज मातङ्गीश्वर्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

### ६– शुक श्यामलाम्बा

**विनियोगः-**

ॐ अस्य श्री शुक श्यामला महा मंत्रस्य शुकर्षिः पंक्तिः छंदः श्री शुको देवता ऐं वीजं ह्लीं शक्तिः श्रीं कीलकम् श्री शुक श्यामला प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

**न्यासः-**

ऋष्यादि न्यासं बीजत्रयेण कराङ्ग हृदयादि न्यासश्च ।

### ध्यानम्

निगमसहकारमूले, निर्मितालवालतारवलयान्ते ।
प्रतिफलितागमशाखा, फलरसिकः शुकोस्तु मम तुष्ट्यै ॥

**मंत्रः-**

ॐ ऐं ह्लीं श्रीं ॐ नमो भगवते धन्वन्तरये अमृत कलश हस्ताय महाशुकाय त्रिभुवनालंकाराय राजमद मर्दनाय शीघ्रं राजानं वशमानय स्वाहा ॥ श्री शुक श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । उत्तरन्यासादि पूर्ववत् ।

## ७– सारिकाम्बा

**विनियोग:–**

ॐ अस्य श्री सारिका मंत्रस्य शौनक ऋषि: अति जगती छंद: श्री सारिकाम्बा देवता ऐं वीजं ह्रीं शक्ति: श्रीं कीलकम् श्री सारिकाम्बा प्रसाद सिध्यर्थे जपे विनियोग: ।

**न्यास:–**

ऋष्यादिन्यास: बीजत्रयेण कराङ्ग हृदयादि न्यासौ ।

### ध्यानम्

**श्यामां कराम्भोरुहकेलिलग्नां, सोमावतंसांश्रुतिपाठदक्षां ।**
**विद्यातिहृद्यां विशदामुपासे, सारीं चतुःषष्टि कला स्वरूपाम् ।।**

**मंत्र:–**

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमो भगवति सारिके, सकल कला कोविदे, मम देवि बोधय बोधय स्वाहा ।

इति शतं जप्त्वा उत्तरन्यासादि कृत्वा पंचपूजां विधाय गुह्येति समर्पयेत् ।

## ८– श्रीवीणा

**विनियोग:–**

अस्य श्री वीणा मंत्रस्य मतङ्ग ऋषि: अनुष्टुप् छंद: श्री वीणा देवता ऐं वीजं ह्रीं शक्ति: श्रीं कीलकम् श्री वीणाप्रीत्यर्थे जपे विनियोग: ।

**न्यासादिकम्–**

बीजत्रयेण द्विरावृत्या ।

### ध्यानम्

**कामगान गुणनाम कल्पना, कल्पशिष्यसरसी परस्परम् ।**
**वेणुकीं स्तनतटे विहारिणीं, वल्लकीं मनसि भावयाम्यहम् ।।**

**मंत्रः–**

ॐ नमो भगवति वीणायै मम सङ्गीत विद्यां प्रयच्छ स्वाहा । इति शतं जप्त्वा समर्पयेत् ।

## श्री वेणुः

**विनियोगः–**

अस्य श्री वेणु महामंत्रस्य मतङ्ग ऋषिः अनुष्टुप छंदः श्री वेणुर्देवता ऐं वीजं ह्लीं शक्तिः सौः कीलकम् श्री वेणु प्रसाद सिध्यर्थे जपे विनियोगः ।

न्यासादि – पूर्ववत् ।

### ध्यानम्

**वक्र सौरभवशीकृत रन्ध्रो,**
**ब्रह्म वाग्वदनशीलन युक्तः ।**
**गान दोहन कला कलनादो,**
**मानदो भवतु मे मणि वेणुः ॥**

इति ध्यात्वा

**मंत्रः–**

ॐ ऐं ह्लीं श्रीं नमो भगवते वेणवे मम साहित्य विद्यां प्रयच्छ स्वाहा ।

शतं जप्त्वा पंचपूजां विधाय गुह्योति समर्पयेत् । केचिदत्र पूर्वोक्तां हसन्तीमपि योजयन्ति ।

## १०. लघु श्यामलाम्बा

**विनियोगः–**

अस्य श्री लघुश्यामला मंत्रस्य मतङ्गभैरवानन्द ऋषिः पंक्तिः छंदः श्री लघुश्यामला देवता ऐं वीजं नमः शक्तिः स्वाहा कीलकम् श्री लघुश्यामला प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

न्यासः–

ऐं नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः
उच्छिष्ट चाण्डालि तर्जनीभ्यां नमः
मातङ्गि मध्यमाभ्यां नमः
सर्वजन अनामिकाभ्यां नमः
वशंकरि कनिष्टिकाभ्यां नमः
स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः

एवं हृदयादि ।

## ध्यानम्

**स्मरेत् प्रथम पुष्पिणीं रुधिरबिन्दुनीलाम्बराम् ।**
**गृहीत मधुपात्रिकां, मद विघूर्ण नेत्रां चलाम् ।।**
**करस्फुरित वल्लकीं, विमल शोभिताटंकिनीम् ।**
**घनस्तनभरालसाम्, गलित चूलिकां श्यामलाम् ।।**

मंत्रः–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ऐं नमः उच्छिष्ट चाण्डालि मातङ्गि सर्वजन वशंकरि स्वाहा ।

श्री लघुश्यामलाम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

११ मंत्रः–

ऐं ह्रीं श्रीं ह्सैं पूर्वाम्नाय समय विद्येश्वर्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । श्री गुरुत्रय – गणपति – पीठत्रय पारम्पर्य सहिताय चतुर्विंशति सहस्र परिवार देवता सहिताय कामगिरि पीठाय नमः कामगिरि पीठ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(इति पूर्वाम्नायः)

---

## २– अथ दक्षिणाम्नायः

### १– सौभाग्य विद्याम्बा

**विनियोगः–**

अस्य श्री सौभाग्य विद्या मंत्रस्य आनन्दभैरव ऋषिः दैवी गायत्री छंदः श्री सौभाग्य विद्येश्वरी देवता, ऐं वीजं क्लीं शक्तिः सौः कीलकम् श्री सौभाग्य विद्या प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

**न्यासः–**

ह स क ल - ह स क ह ल - स क ल ह्लीं ईशानमूर्ध्वे नमः
ऐं क ए ई ल ह्लीं - क्लीं सौः ह स क ह ल ह्लीं सौः सौः स क ल ह्लीं अघोर मन्मथ हृदयाय नमः।
ऐं क्लीं कएईल ह्लीं - क्लीं ह स क ह ल ह्लीं - सौः क्लीं स क ल ह्लीं वामदेव गुह्याय नमः।
ऐं क्लीं सौः क ए ई ल ह्लीं - ह स क ह ल ह्लीं - स क ल ह्लीं सद्योजात पादाभ्यां नमः।
सौः ऐं क ए ई ल ह्लीं ह स क ह ल ह्लीं स क ल ह्लीं तत्पुरुषाय नमः सर्वाङ्गे।
ह स क ल ह स क ह ल स क ल ह्लीं इति लोपामुद्रया मूलाधाराग्निमुद्दीप्य, कामराजेनाधारान्तं नीत्वा, सृष्टि-व्यापकं कृत्वा, अमृतप्लावनेन पूर्णोऽहमिति भावयित्वा।

**करन्यासः–**

ऐं ह्लीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ह्लां महा त्रिपुर सुन्दरी सर्वशक्तिधाम्ने, अंगुष्ठाभ्यां नमः
ह्लीं अनित्य त्रिशक्तिधाम्ने तर्जनीभ्यां नमः
ह्लूं अनादि बोधशक्तिधाम्ने मध्यमाभ्यां नमः
ह्लैं स्वतंत्र शक्तिधाम्ने अनामिकाभ्यां नमः
ह्लौं इति अलुप्त शक्तिधाम्ने कनिष्ठिकाभ्यां नमः
ह्लः अनन्त शक्तिधाम्ने करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः

एवं हृदयादि ह्लीं भूर्भुवः स्वरोमिति दिग्वंधः

### ध्यानम्

कुंकुमपुंजसमाभां, कुशपाशेक्षु चापपुष्पबाणान् ।
पंकजमध्यनिषण्णां, पंकेरुहलोचनां परां वन्दे ॥

**मंत्रः–**

ऐं क ए ई ल ह्रीं क्लीं ह स क ह ल ह्रीं सौः स क ल ह्रीं श्री सौभाग्य विद्याम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

## २– श्री वगलामुखी

**विनियोगः–**

अस्य श्री वगलामुखी मंत्रस्य नारद ऋषिः अनुष्टुप् छंदः श्री वगलामुखी देवता ह्लीं वीजं स्वाहा शक्तिः वगलामुखीति कीलकम् (मतान्तरेण ॐ कीलकम्) श्री वगलामुखी प्रसाद सिध्यर्थे जपे विनियोगः ।

**न्यासः–**

ॐ ह्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः
वगलामुखि तर्जनीभ्यां नमः
सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां नमः
वाचं मुखं पदं स्तंभय अनामिकाभ्यां नमः
जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां नमः
बुद्धि विनाशय ह्रीं ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः
एवं हृदयादिन्यासः ।

### ध्यानम्

चतुर्भुजां त्रिनयनां, कमलासन संस्थिताम् ।
त्रिशूलं पान पात्रं च, गदां जिह्वांच बिभ्रतीम् ॥
बिम्बोष्ठीं कम्बुकण्ठीं च, समपीनपयोधराम् ।
पीताम्बरां मदाघूर्णां, ध्यायेत् ब्रह्मास्त्र देवताम् ॥

मतान्तरेण पीयूषोदधि ---- स्वप्ने पश्यति यान्ति० इति विशेषः ।

पीयूषोदधि मध्य चारु विलसद्रत्नोज्वले मण्डपे,
तर्त्सिहासन मूल पातित रिपुं प्रेतासनाध्यासिनीम् ।
स्वर्णाभां करपीडितारि रसनां भ्राम्यद्गदां विभ्रमां,
स्वप्ने पश्यति यान्ति तस्य विलयं सद्योथ सर्वापदः ॥

इत्थं मुद्राः— त्रिशूलं पान पात्रं च, गदां जिह्वां किरीटकम् ।
कुण्डलं योनिरित्यादि, मुद्राः पीताम्बरा-प्रियाः ॥

प्रदर्श्य पूजां विधाय ।

**मंत्रः—**

ॐ ह्लीं वगलामुखि सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा ।

शतं जप्त्वा उत्तरन्यासान् विधाय समर्पयेत् ।

श्री वगलामुखी ब्रह्मास्त्राम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

## ३— वाराही

**विनियोगः—**

ॐ अस्य श्री वाराही मंत्रस्य धरणीवाराह ऋषिः गायत्री छंदः वाराही देवता ग्लौं वीजं ऐं शक्तिः सौः कीलकम् मम वाराही प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

**ऋष्यादिन्यासः—**

ॐ ऐं ग्लौं सौः क्लीं ॐ नमो भगवति वार्तालि वाराहि अंगुष्ठाभ्यां नमः

वाराहमुखि तर्जनीभ्यां नमः

ऐं ग्लौं ऐं अन्धे अन्धिन्यै नमः रुन्धे रुन्धिन्यै नमः मध्यमाभ्यां नमः

जम्भे जम्भिन्यै नमः स्तम्भे स्तम्भिन्यै नमः मोहे मोहिन्यै नमः अनामिकाभ्यां नमः

ऐं ग्लौं सौः सर्व दुष्ट प्रदुष्टानां सर्वेषां वाक्चित्त, चक्षुर्मुख गति-मति- जिह्वास्तम्भं कुरु-कुरु-कनिष्ठिकाभ्यां नमः
शीघ्रं वश्यं कुरु कुरु ऐं ग्लौ ऐं ठः ठः ठः फट् स्वाहा करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः

एवं हृदयादि ।

## ध्यानम्

**दंष्ट्रोल्लसत्पोत्रिमुखारविन्दां,**
**कोटीर सम्बद्ध हिमांशु रेखाम् ।**
**नागं कपालं दधतीं कराभ्यां,**
**वामेतराभ्यां मम चेष्ट देवीम् ॥**
**कृष्णांशुकां रक्त वरोत्तरीयां,**
**वाराहि संज्ञां प्रणमामि देवीम् ॥**

**मंत्रः–**

ॐ ऐं ग्लौं सौः ॐ क्लीं नमो भगवति वार्तालि वाराहि वाराह मुखि मुखि अन्धे अन्धनि रुन्धे रुन्धनि स्तम्भे स्तम्भनि मोहे मोहिनि मम सर्व दुष्ट प्रदुष्टानां सर्वेषां वाक्-चक्षुर्मुख गति मति जिह्वा स्तम्भनं कुरु कुरु शीघ्रं वश्यं कुरु कुरु ऐं ग्लौं ऐं ठः ठः ठः हुं फट् स्वाहा ।

शतं जप्त्वा उत्तरन्यासादिकं विधाय जपं समर्पयेत् ।

## ४– वटुक भैरव

**विनियोगः–**

अस्य श्री आपदुद्धारण वटुकभैरव मंत्रस्य स्कन्ध ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः आपदुद्धारण वटुकभैरवो देवता वं वीजं ह्रीं शक्तिः ह्रीं कीलकम् (हं वीजं ईं शक्तिः रं कीलकम् मतान्तरेण) श्री वटुकभैरव प्रसाद सिध्यर्थे जपे विनियोगः ।

न्यास:–

ॐ ह्रां ॐ ईशानाय मूर्ध्नि नमः
ॐ ह्रीं ॐ तत्पुरुषाय नमो मुखे
ॐ ह्रूं ॐ अघोर मन्मथाय हृदयाय नमः
ॐ ह्रैं ॐ वामदेवाय गुह्याय नमः
ॐ ह्रौं ॐ सद्योजाताय नमः सर्वाङ्गे
ह्रीं वं इत्यनेन षडङ्गन्यासः

### ध्यानम्

**फणि डमरुकांकुश खेट घण्टा नृकपाल भुजंवराऽभयाग्रम् ।**
**मरकतमणि नीलमिन्दुमौलिं वटुक विभुं जटिलं भजे त्रिनेत्रम् ।।**

मंत्र:–

ॐ वं ह्रीं वटुकायापदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं श्री वटुक भैरव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

## ५– तिरस्करिणी

विनियोगः–

अस्य श्री तिरस्करिणी मंत्रस्य अदृष्या व्यक्त भैरव ऋषिः अनुष्टुप् छंदः श्री तिरस्करिणी देवता श्रीं वीजं ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकम् श्री तिरस्करिणी प्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ।

न्यास:–

दीर्घमायया न्यासः ।

### ध्यानम्

**नीलं तुरङ्गमधिरुह्य सुशोभमाना,**
**नीलांशुकाभरण माल्य विलेपनाढ्या ।**
**भिक्षाच्छलेन भुवनानि तिरोदधाना,**
**खड्गायुधा भगवती परिपातु भवतान् ।।**

**मंत्रः–**

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ॐ नमो भगवति महामाये तिरस्करिणि महामाये सकल पशु जन मनश्चक्षु श्रोत्र तिरस्करणं कुरु कुरु स्वाहा सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं श्री तिरस्करिणी अम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

६ **मंत्रः–**

ऐं क्लिन्ने क्लीं मदद्रवे कुले ह्सौः दक्षिणाम्नाय समय विद्येश्वर्यम्बा भैरवादि सिद्धौघ वटुकत्रय पदयुग सहिताय त्रिशतसहस्र परिवार देवता सहिताय श्री पूर्णगिरि पीठाय नमः।

पूर्णगिरि पीठ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

---

## ३– पश्चिमाम्नायः

### १– लोपामुद्रा

**विनियोगः–**

ॐ अस्य श्री लोपामुद्रा मंत्रस्य नित्यानन्दभैरव ऋषिः गायत्री छंदः लोपामुद्राम्बिका देवता ह्रीं वीजं ऐं शक्तिः क्लीं कीलकम् (मतान्तरेण ह स क ल ह्रीं वीजं स क ल ह्रीं शक्तिः ह स क ह ल ह्रीं कीलकम्) श्री लोपामुद्राम्बा प्रसाद सिध्यर्थं जपे विनियोगः।

**न्यासः–**

न्यासान् विधाय उभयोर्वीज शक्तिः कीलकान् संयोज्य।

**ध्यानम्**

**वालार्क मण्डलाभासां,**
**चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम्।**
**पाशांकुशधनुर्बाणान्,**
**धारयन्तीं शिवां भजे॥**

मंत्रः–

हसकल ह्लीं हसकहल ह्लीं सकल ह्लीं इति पंचदशी मंत्रं जपोत्तरन्यासं विधाय समर्पयेत् ।

श्री लोपामुद्राम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

## २– भुवनेश्वरी

विनियोगः–

अस्य श्री भुवनेश्वरी मंत्रस्य वेदव्यास ऋषिः अनुष्टुप् छंदः भुवनेश्वरी देवता हं बीजं ईं शक्तिः रं कीलकम् श्री भुवनेश्वरी प्रसाद सिध्यर्थं जपे विनियोगः ।

षडङ्गन्यासः–

दीर्घमायया षडङ्गः ।

### ध्यानम्

उद्यत्भास्वत्समाभां, विजितनवजपामिन्दुखण्डावतंसाम् ।
ज्योतिर्मौलिं त्रिनेत्रां, विविधमणिलसत्कुण्डलां पद्मकान्ताम् ॥
हारं ग्रैवेय कांची, गुणमणिवलयां चित्ररूपां वराढ्या ।
मम्वां पाशां कुशाढ्या, सभयवरकरामम्बिकां तां नमामि ॥

पूजां विधाय

मंत्रः–

श्रीं ह्रीं श्रीं (ॐ ह्रीं ॐ)

शत जपोत्तरन्यासान् विधाय समर्पयेत् ।

## ३– अन्नपूर्णा

विनियोगः–

अस्य श्री अन्नपूर्णा मंत्रस्य सदाशिव ऋषिः जगती छंदः अन्नपूर्णा देवता ह्रीं बीजं श्रीं शक्तिः क्लीं कीलकम् अन्नपूर्णा प्रसाद सिध्यर्थे जपे विनियोगः ।

न्यासः–

वीजत्रयेण न्यासः ।

### ध्यानम्

उद्यत्सहस्रद्युति मिन्दु गौरा,
मुत्तुङ्ग पीनस्तन लम्ब हारां ।
माणिक्य दर्वीं मधुपात्र हस्तां,
स्मरन्ति सन्तः स्मरवैरि कान्ताम् ॥ (१)
आदाय दक्षिण करेण सुवर्ण दर्वीं,
दुग्धान्न पूर्ण मितरेण च रत्नपात्रम् ।
अन्नप्रदान निरतां नवहेमवर्णां,
अम्बां भजे कनकभूषण माल्य शोभाम् ॥ (२)

मंत्रः–

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे ममाभिलसितमन्नं देहि स्वाहा ।

शतं जप्त्वा उत्तरन्यासं विधाय समर्पयेत् ।

न्यासान्तरमस्यः–

आधारे भुवनेश्वर्यै नमः, हृदये श्री कमलायै नमः, भ्रूमध्ये सुभगायै नमः, ॐ श्री पराविद्यायै नमः, शिरसि-आधार-हृदय-भ्रूमध्य-ब्रह्मरन्ध्रेषु-ब्राह्मै भगवत्यै माहेश्वर्यै, अन्नपूर्णायै, कौमार्यै, वैष्णव्यै, वाराह्यै, स्वाहा रूपायै नमः, इति ब्रह्मरन्ध्र ललाट-भ्रूमध्य वक्त्र हृदय नाभि मूलाधार जानुषु ॐ नमः ब्राह्मै भगवत्यै माहेश्वर्यै अन्नपूर्णायै, कौमार्यै नमो वैष्णव्यै अभिलषितमन्नं इन्द्राण्यै देहि चामुण्डायै स्वाहा महालक्ष्म्यै इति पूर्वस्थानेषु न्यसेत् । मायया च न्यासं विधाय ध्यायेत् ।

## ४– कामकलाम्बा

**विनियोगः–**

ॐ अस्य श्री कामकला मंत्रस्य मन्मथ ऋषिः जगती छंदः कामकला देवता ईं वीजं ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकम् श्री कामकला प्रीतये जपे विनियोगः ।

**न्यासः–**

हकारेण न्यासः ।

### ध्यानम्

**पंकज पाशेक्षु चापमंकुश शाल्यग्रं पंचवाणधरां ।**
**कंकणाऽभय वरहस्तां कलये कामकला धराम्बाम् ।।**

मातृकाक्षराणि अथवा–

**मंत्रः–**

ईं श्री कामकलाम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

**मंत्रः–**

ह्सां ह्सीं ह स ख फ्रें भगवत्यम्बे ह स क्ष म ल व र यूं ह स ख फ्रें फ्रें अघोरे अघोरे अघोरमुखि ह्सां ह्सीं किणि किणि विच्चे ह स ख फ्रें ह स ख फ्रीं श्रीं ह्रीं ह्सैं पश्चिमाम्नाय समय विद्येश्वर्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

**मंत्रः–**

श्री दूती मण्डल-वीरदशक चतुःषष्टि सिद्धि सहिताय त्रिशत्सहस्र देवता सहिताय जालंधर पीठाय नमः ।

जालंधर पीठ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(इति पश्चिमाम्नायः ३)

---

## ४– अथोत्तराम्नायः

### १– तुरीयाम्बा

**विनियोगः–**

अस्य श्री तुरीयाम्बा मंत्रस्य महेश्वरानन्द भैरव ऋषिः, उष्णिक् छन्दः तुरीयाम्बा देवता ह्रीं वीजं श्रीं शक्तिः क्लीं कीलकम् तुरीयाम्बा प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

**ऋष्यादिन्यासः–**

वीजत्रयेण कराङ्गादि न्यासः ।

### ध्यानम्

**पुन्नागाम्बुज जाति कुन्द वकुलैः पुष्पैरलंकृत तनुं ।**
**तन्वीमिक्षु धनुर्धरांजित जपां श्री पंच वाणान्विताम् ॥**
**कन्यां प्रौढ मदेन भोग निरतां नन्दां तुरीयां शिवाम् ।**
**नादानन्दमयीं प्रणौमि सततं नादात्मिकामम्बिकाम् ॥**

**मंत्रः–**

ह स क ल ह स क ह ल स क ल ह्रीं इति शतं जप्त्वा उत्तरन्यासं विधाय समर्पयेत् ।

### २– महार्धाम्बा

**विनियोगः–**

ॐ अस्य श्री महार्धाम्बा मंत्रस्य जिताकाशानन्दभैरवऋषिः अति जगती छंदः महार्धाम्बिका देवता ऐं वीजं सौः शक्तिः ईं कीलकम् महार्धा प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

**न्यासः–**

ऐं ईं सौः संसृष्टि नित्ये स्वाहा अंगुष्ठाभ्यां नमः
हं स्थिति पूर्णे नमः तर्जनीभ्यां नमः

अं ईं महासंहारिणे चण्डकालि फट् मध्यमाभ्यां नमः
हं स्थिति पूर्णे नमः अनामिकाभ्यां नमः
संसृष्टि नित्ये स्वाहा, कनिष्ठिकाभ्यां नमः
क ए ई ल स क ल ह्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः

एवं हृदयादि ।

## ध्यानम्

**आधारे तरुणार्क विम्ब वदने, अत्युग्र दष्ट्रांकुरे ।
वीणावाद नितान्त भोग निलये, वीणादि गान प्रिये ।।
नानावर्ण नरोत्थ सत्कृत शिरः, सुव्यक्त माला धरे ।
श्री विद्येत्वरिते महार्ध सहिते, श्री शांकरीं त्वां भजे ।।**

**मंत्रः–**

ऐं ईं सौः क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं संसृष्टि नित्ये स्वाहा, हं स्थिति पूर्णे नमः, ईं महा संहारिणि कृशे चण्डकालि फट्, एहि शुभे महानखे अनन्त भास्करि चण्डकालि फट्, हं स्थिति पूर्णे नमः, संसृष्टि नित्ये स्वाहा सकल ह्रीं सौः ईं ऐं ।

इति मंत्रं शतं जप्त्वा,

श्री महार्धाम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

## अश्वारूढ़ा

**विनियोगः–**

अस्य श्री अश्वारूढ़ा मंत्रस्य स्वच्छन्द भैरव ऋषिः गायत्री छंदः अश्वारूढ़ाम्बिका देवता आं वीजं ह्रीं शक्तिः क्रों कीलकम् अश्वारूढ़ा प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः–

**न्यासः–**

ऋष्यादि न्यासं आं ह्रीं क्रों इति द्विरावृत्या कराङ्गन्यासः हृदयादि न्यासौ कृत्वा ।

## ध्यानम्

अश्वारूढ़ां कराग्रे नवकनकमयीं वेत्रयष्टिं दधानां ।
दाक्षिण्येनानयन्तीं स्फुरित तनु लतां पाश हस्तां स्वसाध्याम् ।।
देवीं नित्यप्रसन्नां शशधरशकला बद्धमौलिं त्रिनेत्राम् ।
दद्यान्नित्यानवद्यां श्रियमखिलसुखं-प्राप्ति-हृद्यां श्रियेनः ।।

इति पंचपूजोत्तर न्यासादिकं कृत्वा शतं जप्त्वा समर्पयेत् ।

**जप मंत्रः–** आं ह्रीं क्रों एहि परमेश्वरि स्वाहा,
श्री अश्वारूढ़ाम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

## मिश्राम्बा

**विनियोगः–**

अस्य श्री मिश्राम्बा मंत्रस्य सदाशिव ऋषिः गायत्री छंदः श्रीमिश्राम्बा देवता ऐं वीजं ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकम् मिश्राम्बा प्रसाद सिध्यर्थे जपे विनियोगः ।

**न्यासः–**

वाग्भवेन न्यासः ।

## ध्यानम्

ऐंकारे विद्रुमाभे हरिहर परमे, आदि मूल स्वरूपे ।
स्वाहाढ्ये हेमपीठे अमृत सरसृजे अन्नमन्नादि रूपे ।।
ह्रीं कारे शक्तिमूले इह परममये ईक्षणाध्यान रूपे ।
नामाद्ये नादनाथे नव नव महिमे नाद नाथादि मिश्रे ।।

**मंत्रः–**

ऐं मिश्राम्बायै नमः ।
श्री मिश्राम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
शतं जप्त्वा समर्पयेत् ।।

## श्री वाग्वादिनी

**विनियोगः–**

अस्य श्री वाग्वादिनी मंत्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः गायत्री छंदः वाग्वादिनी देवता ऐं वीजं ह्रीं शक्तिः सौः कीलकम् वाग्वादिनी प्रसाद सिध्यर्थे जपे विनियोगः।

**न्यासः–**

वीजत्रयेण न्यासः

**ध्यानम्**

**पुस्तक जप वटि हस्ते, वरदाऽभयधारिणि चारु वाहु युगले।**
**कर्पूरामल देहे वागीश्वरि शोधयाशु मम चेतः॥** इति ध्यात्वा

**मंत्रः–**

ऐं ह्रीं सौः वद वद वाग्वादिनि स्वाहा। शतं जप्त्वा समर्पयेत्।

श्री वाग्वादिनी अम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

**६ मंत्रः–**

खें सः महाचण्ड योगीश्वरी उत्तराम्नाय नव मुद्रा वीरावली युक्ताय द्विसहस्र देवता सहिताय उड्डीयान पीठाय नमः।

उड्डीयान पीठ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

(ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ह स ख फ्रें महाचण्डयोगीश्वरि उत्तराम्नाय विद्येश्वरि कालिका देव्यै नमः)

(इति उत्तराम्नायः)

## (अथोर्ध्वाम्नायः)

### परा प्रसादाम्बा

**विनियोगः—**

अस्य श्री पराप्रसाद मंत्रस्य चिद्रूपानन्द भैरव ऋषिः अति जगती छन्दः श्री परा प्रसाद रूपिणी पराम्बा देवता हं सं वीजं ह्सौः शक्तिः ह्सः कीलकम् श्री पराप्रसाद सिध्यर्थे जपे विनियोगः ।

**न्यासः—**

ह्सामिति न्यासः ।

### ध्यानम्

अमृतार्णव मध्योद्यत् सुवर्ण रुचि शोभिते ।।
कल्पवृक्ष वन संस्थे, नव माणिक्य मण्डपे ।। १ ।।
नवरत्न मये श्रीमत्सिंहासन गताम्बुजे ।।
त्रिकोणे च समासीनं, ज्वलदग्नि समप्रभम् ।। २ ।।
अर्धाम्बिका समायुक्तं, अविभक्त विभूषितम् ।।
कोटि कन्दर्प लावण्यं, सदा षोडश वार्षिकम् ।। ३ ।।
मन्दस्मित मुखाम्भोजं, त्रिनेत्रं चंद्र शेखरम् ।।
दिव्याम्बर स्रगालेपं, दिव्याभरण भूषितम् ।। ४ ।।
पानपात्रं तु चिन्मुद्रां, पुस्तकं च करे लसत् ।।
विद्यां संसदि बिभ्राणे, सदानन्द मुखेक्षणम् ।। ५ ।।
महाषोढोदिताशेष, देवतागण सेविताम् ।।
एवं चित्ताम्बुजे ध्यायेदर्धनारीश्वरं शिवम् ।। ६ ।।
पुरुषं वास्मरेद्देवं, स्त्री रूपंवा समाहितम् ।।
अथवा निष्कलं ध्यायेत् सच्चिदानन्द लक्षणम् ।। ७ ।।

इति ध्यात्वा पंचोपचारैः सम्पूज्य मुद्राः दशकं प्रदर्शयेत् ।

मुद्रा दशकं–

ततः सन्दर्शयेन्मुद्रा, दशकं परमेश्वरि ।
योनिं लिंगं च सुरभिः, हेतु मुद्रा चतुष्टयम् ॥ १ ॥
वनमाला महामुद्रां नभो मुद्रामिति क्रमात् ॥

मंत्रः–

ह्सौः

श्री पराप्रासाद रूपिणी परामबा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

## २– परामबा

विनियोगः–

अस्य श्री परामबा मंत्रस्य चिद्रूपानन्द भैरव ऋषिः अति जगती छन्दः श्री परामबा देवता सौः वीजं सौः शक्तिः सौः कीलकम् परामबा प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

न्यासः–

पूर्ववत् सामित्यादिना ।

### ध्यानम्

अमृतार्णव मध्योद्यत् रत्नपीठोपशोभिते ॥
कल्पवृक्ष वने संस्थे, नव माणिक्य मण्डपे ॥ १ ॥
पुण्डरीक वने ध्यायेत् दिव्ये देवी मनन्यधीः ॥
पुण्डरीकसमासीनां हिमकुन्देन्दुनिर्मलाम् ॥ २ ॥
सितवस्त्रपरीधानां मुण्डाभरणभूषिताम् ॥
सुधांशुकलितोत्तंससंशोभिमुकुटोचिताम् ॥ ३ ॥
तारुण्यपरिपूर्णाङ्गीं, पीनोन्नतपयोधराम् ॥
मदिराघूर्णितारक्त,नयनत्रयशोभिताम् ॥ ४ ॥
सम्विदानन्द सन्दोह, मन्थरीकृत विग्रहाम् ॥
पानपात्रं च चिन्मुद्रां, दधतीं द्विभुजां शिवाम् ॥ ५ ॥
सदा परमेश्वराकारे, ध्यानस्तिमितलोचनाम् ॥
पंच पंचार पीठस्थं पंचपंचोपसेविताम् ॥ ६ ॥
पंचोपचारिणीं पंचाननसेव्याम् च पञ्चमीम् ॥

इति ध्यात्वा पंचोपचारैः सम्पूज्य पानपात्रं चिन्मुद्रे प्रदर्श्य ।

**मंत्रः—**

सौः इति शतं जप्त्वा समर्पयेत् ।

## ३– परा शाम्भवी

**विनियोगः—**

ॐ अस्य श्री परा शाम्भवी मंत्रस्य––चिद्रूपानन्द ऋषिः अति जगती छंदः पराशाम्भवी देवता ऐं वीजं ह्रीं शक्तिः श्रीं कीलकम् श्री परा शाम्भवी प्रसाद सिध्यर्थे जपे विनियोगः ।

**न्यासः—**

ऐं ह्रीं श्रीं इति वीजत्रयेण षडङ्ग ऋष्यादि न्यासः ।

### ध्यानम्

**माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती काली कला मालिनी ।**
**मातङ्गी विजया जया भगवती देवी शिवा शाम्भवी ॥**
**शक्तिः शंकर वल्लभा त्रिनयना वाग्वादिनी भैरवी ।**
**ह्रींकारी त्रिपुरा परापरमयी माता कुमारी ह्यसि ॥**

**मंत्रः—**

ऐं ह्रीं श्रीं ह स ख फ्रें ह्रीं सौः ह स ख फ्रें ह्सौ । इति मंत्रं शतं जप्त्वा समर्पयेत् ।

श्री परा शाम्भवी अम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

इति ऊर्ध्वाम्नाय मालिनी-मंत्रराज-गुरु मण्डल सहिताय सहस्र देवता परिवारिताय श्री शाम्भवी पीठाय नमः ।

शाम्भवी पीठ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(इति ऊर्ध्वाम्नायः)

——

## २– अथानुत्तराम्नायः

### १– अनुत्तर विद्याम्बा

ह्लीं सौः अं सौः अं आं हुं हुं सौः अः अं सौः अं आं ह्लीं अनुत्तर विद्याम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

### २– महा त्रिपुर सुन्दरी

**विनियोगः–**

अस्य श्री महा त्रिपुर सुन्दरी महा महा भट्टारिका श्री षोडशी विद्या महा मंत्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः पंक्तिः छंदः श्री राज राजेश्वरी देवता ह्लीं वीजं श्रीं शक्तिः क्लीं कीलकम् श्री महा त्रिपुर सुन्दरी प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

**न्यासौ–**

कराङ्गन्यासौ कादिवत् ।

### ध्यानम्

**सिद्धवृन्दवृतरत्नभूमिका, कल्पवृक्ष मनुवाटि संवृते ।**
**नीप वाटि मणिमण्डपारुणे, चन्द्रभानु शतकोटिभासुरे ॥ १ ॥**
**आदिपंचशिवपादपंचके, मञ्चके परशिवाङ्क पीठिकाम् ।**
**कादिहादि मनु रूपिणीं, सदा भावयामि परदेवतां च ताम् ॥ २ ॥**

**मंत्रः–**

श्रीं ह्लीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्लीं श्रीं क ए ई ल ह्लीं ह स क ह ल ह्लीं स क ल ह्लीं, ह स क ल ह्लीं ह स क ह ल ह्लीं स क ल ह्लीं सौः ऐं क्लीं ह्लीं श्रीं षोडशाक्षरी विद्येश्वर्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

**मतान्तरेण–**

आनन्दभैरव ऋषिः गायत्री छंदः ऐं वीजं क्लीं शक्तिः सौः कीलकम् इति विशेषः ।

## ३– कालकर्षिणी

**विनियोगः–**

अस्य श्री कालकर्षिणी मंत्रस्य सृष्टि स्थिति संहार कारको भैरव ऋषिः अनुष्टुप छन्दः कालकर्षिणी देवता ऐं वीजं ह्रीं शक्तिः श्रीं कीलकम् कालकर्षिण्यम्बा प्रसाद सिध्यर्थे जपे विनियोगः ।

**न्यासः–**

वीजत्रयेण द्विरावृत्या न्यासः ।

**ध्यानम्**

**कपालशूलिनी श्यामा, मदाट्टहासितानना ।**
**श्री कालकर्षिणी पातु, पशुविश्लेषकारिणी ।।**
**जगज्जननरक्षण क्षपणनिग्रहानुग्रहा ।**
**प्रणेतृसमयात्मिका मदकपालशूलायुधा ।।**
**महाट्टहासिताननना, नमितमालनीलाकृतिः ।**
**प्रशस्त पुरुषाकृतिः भवतु कालसंकर्षिणी ।।**

**मंत्रः–**

ॐ संसृष्टि नित्ये स्वाहा, हं स्थिति पूर्णे नमः, ईं महा संहारिणी कृशे चण्ड कालि फट्, रं ह स ख फ्रें महानखे अनन्तभास्करी चण्डिके फट्, ह स ख फें महाचण्ड योगीश्वरी, पंच मंत्र समष्टि रूपिण्यै परमायुषकारिण्यै, काल संकर्षिण्यै नमः ।

**मंत्रः–**

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं काल कर्षिणी स्वाहा । इति मंत्रं जप्त्वा गुह्येति समर्पयेत् ।

श्री काल कर्षिणी अम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(इत्यनुत्तराम्नायः) : ६

अत्र कादि-हादि-गुरु परम्परा योजनीयः ।

## अथ चरण वासना

### परचरण वासना

ऐं ह्रीं श्रीं हंसः शिवः सोऽहं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः, ॐ ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं, ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं ह स क ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ह्सौः ह स क्ष म ल व र यूं ह्सौः स ह क्ष म ल व र यीं ह्सौः श्रीं ॐ योऽहमस्याऽहमस्मि, ब्रह्माऽहमस्मि, अहमस्मि, ब्रह्मरूपाऽहमस्मि, सोऽहं स्वच्छ प्रकाश परिपूर्ण, परापर महा प्रकाश परिपूर्ण श्रीपादुकां पूजयामि, हंसः शिवः सोऽहं हंसः स्वात्मानन्द नाथ परम हंस परिपूर्णात्मने परात्परतर परमेष्ठि गुरु श्रीपादुकां पूजयामि सः हः सौः हंसः प्रकाश चरणाभ्यां नमः ।

अः हः सोऽहं विमर्श चरणाभ्यां नमः ।

सौः अः सौः अः हंसः सोऽहं आनन्द चरणाभ्यां नमः ।

सौः अः हंसः शिवः सोऽहं ज्योतिपाद चरणाभ्यां नमः ।

(इति चरण वासना)

### श्री विद्या चरण वासना

ऐं क ए ई ल ह्रीं हंसः रक्त चरणाभ्यां नमः ।

क्लीं ह स क ह ल ह्रीं सोऽहं शुक्ल चरणाभ्यां नमः ।

सौः स क ल ह्रीं हंसः सोऽहं रक्तशुक्ल चरणाभ्यां नमः ।

(इति श्री विद्या चरण वासना)

### लोपामुद्रा चरण वासना

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह स क ल ह्रीं हंसः प्रकाश चरणाभ्यां नमः ।

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं ह स क ह ल ह्रीं हंसः शिवः सोऽहं विमर्श चरणाभ्यां नमः ।

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह स क ल ह्रीं क्लीं ह स क ह ल ह्रीं, सौः स क ल ह्रीं हंसः शिवः सोऽहं निर्वाण चरणाभ्यां नमः ।

(इति लोपामुद्रा चरण वासना)

ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं रक्त चरणाभ्यां नमः ।

ॐ ह स क ह ल ह्रीं सौः शुक्ल चरणाभ्यां नमः ।

ॐ स क ल ह्रीं सौः मिश्र चरणाभ्यां नमः ।

ऐं ह्रीं श्रीं ह स क ल ह्रीं सौः हंसः प्रकाश चरणाभ्यां नमः ।

ॐ ह स क ह ल ह्रीं सौः सोऽहं विमर्श चरणाभ्यां नमः ।

ॐ स क ल ह्रीं सौः सोऽहं विमर्श-प्रकाश चरणाभ्यां नमः ।

ऐं ह्रीं श्रीं कएईल ह्रीं हसकहल ह्रीं स क ल ह्रीं हंसः शिवः सोऽहं सौः निर्वाण चरणाभ्यां नमः ।

ऐं ह्रीं श्रीं क १५ हंसः शिवः सोऽहं चतुष्पथ ज्योतिष्मती चरणाभ्यां नम : ।

ह्सौः शुक्ल विद्या महापीठशुक्ल दुग्धशुक्लाक्षतशुक्ल पुष्प, शुक्लमंडलशुक्ल महापीठशुक्ल मुद्रा, शुक्ल चरण, शुक्ल मंत्र महापीठ शुक्ल नीति, शुक्ल महा प्रकाशानन्द नाथ, ह स ख फ्रें ह्सौः गुरुनाथ श्रीं ह्सौः ।

रक्तविद्या महापीठ रक्तगंध रक्ताक्षत रक्तपुष्प, रक्तमंडल, महापीठ, रक्तचरु रक्तमंत्र महापीठ, रक्तविद्या, रक्तमुद्रा महापीठ, रक्तनीति, महाप्रकाश ह स ख फ्रें ह्सौः श्रीगुरुनाथ श्रीं ह्सौः प्रकाश चरण श्रीं ह्सौः विमर्श चरण श्रीं ह्सौः । प्रकाश विमर्श चरण ऐं क्लीं सौः शान्तानन्दनाथ गुरुनाथ सौः क्लीं ऐं पीठ शतानन्दनाथ-पराम्बा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः उन्मन्यै वौषट् ह्रीं श्रीं ऐं ऐं क्लीं सौः आनन्द चरण ज्योतिष्पाद निर्वाण चरण श्री गुरुनाथ परम शिवानन्दनाथ सदानन्दनाथ प्रज्ञा देव्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(इति दिव्यौघः)

ऐं ह्रीं श्रीं प्रकाशानन्दनाथ, ऐं ह्रीं श्री चिदानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

श्री गुरुक्रमं पठेद्यस्तु प्रातरुत्थाय भक्तितः।
न्यासार्चन जपादीनामनन्त फलमश्नुते ॥
एतेवै गुरुवः प्रोक्ताः शिवादि स्वगुरु क्रमात्। इति

पूर्वं दक्षिण पश्चिमोत्तर मनुञ्चोर्ध्वं ततोऽनुत्तरं,
स्तोतोद्वन्द्व परं गुरूँश्च चरणान्नवतादि मिश्रान्तकान्।
पञ्चाम्बा नवनाथ षोडश षडाधारं च षडदर्शनम्,
वागाद्यष्टक सप्तविंसति रहस्यान्तान्यसेत्पूजयेत् ॥

पञ्चाम्बा

१ ॐ ऐं ह्लीं श्रीं ह्लीं श्रीं श्री नाथ व्योमातीताम्बा–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
२ ॐ ऐं ह्लीं श्रीं ह्लीं श्रीं श्री अनादिनाथ व्योमेश्वर्यम्बा–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
३ ॐ ऐं ह्लीं श्रीं ह्लीं श्रीं श्री अनामयानाथ व्योमगाम्बा–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
४ ॐ ऐं ह्लीं श्रीं ह्लीं श्रीं श्री अनन्तानन्दनाथ व्योमचरणाम्बा–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
५ ॐ ऐं ह्लीं श्रीं ह्लीं श्रीं श्री चिदाभासानन्दनाथ व्योमस्थाम्बा–
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

नवनाथाः (सिद्धौघाः)

१ हं उन्मन्याकाशनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
२ सं समनाकाशनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
३ क्षं व्यापिकाकाशनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
४ शं शक्त्याकाशनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
५ वं ध्वन्याकाशनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
६ वं ध्वनिमात्राकाशनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
७ रं अनाहताकाशनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
८ यं द्वन्द्वाकाशनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
९ मं व्यस्ताकाशनन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

## षोडशाधार विद्या

१ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्वच्छ प्रकाश परिपूर्ण परापर महासिद्ध विद्या कुलयोगिनी मूलविद्या ह्रीं श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

२ ह्सौः स्वात्मानं वोधय वोधय ह्सौः परा प्रसाद पराम्बा मूलविद्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

३ ऐं क्लीं क्लिन्ने क्लेदिनि महा मदजल मूल मूलविद्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

४ हंसः स्वच्छदानन्द परमहंस पर परमात्मने स्वाहा शाम्भवी मूलविद्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

५ ह्रीं नित्य स्फुरन्ती चैतन्यानन्दमयी महाविन्दु व्यापक मालिनी ऐं कुल निगर्भमातृके ह्रीं समय विमल ग्रीवा सममात्रि स्वरूपमयी ऐं ह्रीं श्रीं ईं हृल्लेखा मूलविद्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

६ ऐं ह्रीं श्रीं स्वच्छ प्रकाशात्मिका ह्रीं कुल महा मालिनी मूलविद्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

७ हंसः स्वरूपे प्रकाशात्मिके कुल कुण्डलिनि आज्ञा सिद्धि महा भैरवि आत्मानन्द वोधय अम्विके भगवति ह्रीं पर बोधिनि मूलविद्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

८ ॐ मोक्षं कुरु कुरु पञ्चाक्षरी मूलविद्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

९ ह स क ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं चैतन्य त्रिपुरा मूलविद्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

१० ऐं शुद्ध सूक्ष्म निराकार ब्रह्मस्वरूपिणि क्लीं परानन्द शक्तिः सौः शाम्भवानन्दनाथ अनुत्तर कौलिनीमूलविद्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

११ हंसः सोऽहं स्वच्छानन्द परमहंस परमात्मने स्वाहा गुरुक्रम विमर्शिनि मूलविद्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

१२ अनामाख्य व्योमातीतनाथ परापर व्योमातीत-व्योमेश्वर्यम्बा अनामाख्य मूलविद्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

१३ ऐं ईं ऊं संकेतसारा मूलविद्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

१४ ह्रीं भगवति विच्चे वाग्वादिनि क्लीं क्लीं महाह्लदमाया मातङ्गिनि ऐं क्लीं ईं श्री अनुत्तर-वाग्वादिनि मूलविद्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

१५ ह्लीं श्रीं ह स ख फ्रें ह स क ल रीं सौः श्री अनुत्तरशाङ्करी मूलविद्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

१६ ह्लीं श्रीं ह स क ल ह स क ह ल सकल ह्लीं श्री महात्रिपुर सुन्दरी, सर्वानन्दमये वैन्दवे चक्रे, परब्रह्म स्वरूपिणि, परमात्म शक्ति, सर्व तंत्रेश्वरि सर्व विद्येश्वरि, सर्व पीठेश्वरि, सर्व वीरेश्वरि सर्व योगेश्वरि, सर्व सिद्धेश्वरि, स क ल जगदुत्पत्तिमातृका, सचन्द्रा, सदेवता, ससमुद्रा, ससिद्धि, सायुधा, सवाहना, सपरिवारा, सशक्ति, सालङ्कारा सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तु श्री महात्रिपुर सुन्दरी मूलविद्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

## (षडाधार)

१ हंसः स्वेच्छानन्द भूत्यै स्वाहा मूलाधार विद्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

२ सोऽहं परमहंस विभूत्यै स्वाहा स्वाधिष्ठान विद्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

३ हंसः सोऽहं स्वच्छन्दानन्द परम हंस परमात्मने स्वाहा मणिपूर विद्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

४ हंसः सोऽहं स्वच्छन्दानन्द चिदानन्द परमहंस-परमात्माने स्वाहा अनाहती विद्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

५ हंसः सोऽहं स्वात्मानं वोधय वोधय परमात्मनं वोधय वोधय स्वात्मानन्द नन्दनाथ विशुद्धविद्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

६ हंसः सोऽहं स्वच्छन्दानन्दनाथ चित्प्रकाशामृतहेतवे स्वाहा आज्ञा विद्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

७ हंसः शिवः ह्सौः सोऽहं ॐ योऽहमस्मि अहमस्मि ब्रह्माऽहमस्मि, सोऽहं स्वच्छ प्रकाश परिपूर्ण परापर महा प्रकाश परिपूर्णानन्द-नाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

इति आधारविद्या - इति ब्रह्मरन्ध्रविद्या।

**(षड्दर्शनम्)**

१ ब्रह्मदर्शनम्

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यमिति ब्रह्म गायत्री

(पूर्वायतनम्)

२ वैष्णव दर्शनम्

ॐ नमो नारायणाय (दक्षिणायतनम्)

३ सौर दर्शनम्

ॐ घृणिःसूर्य आदित्यः (पश्चिमायतनम्)

४ वौद्ध दर्शनम्

ॐ ह्रीं तारय तारय स्वाहा (उत्तरायतनम्)

५ शैव दर्शनम्

ॐ नमः शिवाय

६ शाक्त दर्शनम्

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं (भुवनेश्वरी अधिष्ठितम्)

**(वाग्देवताष्टकम्)**

१ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः व्लूं वशिनी वाग्देवता श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

२ कं खं गं घं ङं क्ल्हीं कामेश्वरी वाग्देवता श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ चं छं जं झं ञं न्व्लीं मोदिनी अम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

४ टं ठं डं ढं णं प्लूं विमलाम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

५ तं थं दं धं नं ज्म्रीं अरुणाम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

६ पं फं बं भं मं ह् स् ल् व् र् यूं जयिन्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

७ यं रं लं वं झ म र यूं सर्वेश्वरी अम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

८ शं षं सं हं लं क्षं क्ष्म्रीं कौलिनी अम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

——

# पारायण - विधिः

## प्रातः सन्ध्या

मूल मंत्र से आचमन करके मूलमंत्र से ही तीनबार प्राणायाम करें। फिर संकल्प करें। यथा–

ममोपात्त-समस्त दुरितक्षय द्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं (देश कालौ संकीर्त्य) श्री राज राजेश्वरी प्रीत्यर्थं (देवी मानरीत्या संकल्प) श्री विद्या-प्रातःसन्ध्यामुपासिष्ये।

**श्री नाथादि गुरुत्रयं गणपतिं पीठत्रयं भैरवम्।**
**सिद्धौघं वटुकत्रयं पदयुगं दूतीक्रमं मंडलम्॥**
**वीरान्द्वयष्ट चतुष्कषष्टि नवकं वीरावली पञ्चकम्।**
**श्री मन्मालिनि मंत्रराज सहितं वन्दे गुरोर्मंडलम्॥**

श्री गुरु पादुका मंत्र का उच्चारण कर, सुमुखादि पांचों मुद्राओं का प्रदर्शन कर श्री गुरु देवता को प्रणाम कर मूल मंत्र से ऋष्यादि न्यास कर ध्यान करें। अपने आगे धेनुमुद्रा से जल को अमृतमय कर मूलविद्या से आठबार अभिमंत्रित कर उस जल से (विन्दु सहित) सोलह स्वरों (अं नमः, आं नमः, से अः नमः तक) मार्जन करें। तत्पश्चात दाहिने हाथ में जल लेकर 'क' से लेकर 'म' तक मूलविद्या-समेत (कं नमः खं नमः मं नमः क ५ ह ६ स ४ तक) से अभिमंत्रित कर आचमन करें। फिर य से क्ष पर्यन्त (यं नमः रं नमः क्षं नमः क ५ ह ६ स ४) से शिर का प्रोक्षण कर सूर्यमण्डल में देवी का निम्न प्रकार ध्यान करें–

**सकुंकुम-विलेपनामलिक-चुम्बि-कस्तूरिकां।**
**समन्द-हसितेक्षणां स-शर-चाप-पाशांकुशाम्॥**
**अशेष-जन मोहिनीमरुण माल्य-भूषाम्बरां।**
**जपा कुसुम भासुरां जपविधौ स्मरेदम्बिकाम्॥**
**चतुर्भुजे चन्द्रकलावतंसे कुचोन्नते कुंकुमरागशोणे।**
**पुंड्रेक्षु पाशांकुश पुष्पवाणहस्ते नमस्ते जगदेकमातः॥**

ध्यान करने के बाद दाहिने हाथ में जल लेकर 'लं वं रं यं हं' से तीन बार अभिमंत्रित कर क ५ ह ६ स ४ से भी तीन बार अभिमंत्रित कर उस जल को बायें हाथ के अंगुष्ठ व अनामिका से क ५ ह ६ स ४ से अपने शिर पर तीन बार प्रोक्षण करें। शेष जल को बायें हाथ में रख कर उस तेजरूप जल को बायें नासापुट से अन्दर खींच कर अपने देह के अंदर स्थित सकल कलुष के प्रक्षालन की भावना कर दाहिने नासापुट से निकाल कर उस जल को फिर दाहिने हाथ में लेकर अपनी बाईं तरफ जलती हुई वज्रशिला का ध्यान कर '४ श्लीं पशु हुं फट्' से उस शिला पर पटके। तब हाथ धोकर मूल विद्या से जल लेकर क १५ से जो स्वर चल रहा हो सहस्र दल कमल से निकलते हुये उस जल को बायें हाथ में रख कर 'अमृतमालिनी स्वाहा' मंत्र से सब उगलियों से उस जल को अपने शिर पर तीन बार प्रोक्षण करें।

क ५ आत्मतत्वं शोधयामि स्वाहा
ह ६ विद्यातत्वं शोधयामि स्वाहा
स ४ शिवतत्वं शोधयामि स्वाहा
स ४ शिवतत्वं शोधयामि स्वाहा
ह ६ विद्यातत्वं शोधयामि स्वाहा
क ५ आत्मतत्वं शोधयामि स्वाहा
क १५ सर्वतत्वं शोधयामि स्वाहा

तीन या नौ बार आचमन करें। अर्घ्य को अंजलि में लेकर खड़े होकर क ५ वाग्भवेश्वरि विद्महे, ह ६ कामेश्वरि च धीमहि, स ४ तन्नः देवी प्रचोदयात्, श्री महात्रिपुर सुन्दरी श्री पादुकायै एषोऽर्घ्यः स्वाहा से तीन बार अर्घ्य देकर सूर्य की तरफ मुख करके तीन बार अर्घ्याञ्जलि देकर क १५ श्री महात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां तर्पयामि नमः से तीन बार तर्पण कर ह्रां ह्रीं ह्रूं हंसः श्री सूर्यं तर्पयामि नमः से सूर्य का तीन बार तर्पण कर मूलाधार में मूलविद्या के प्रथम कूट का कोटि विद्युत के समान चिन्तन कर उस तेज को सुषुम्ना से ब्रह्मरन्ध्र में ले जाकर वहते हुये नासापुट से आकाश में वह्निमंडल का आवाहन कर उस तेज से उत्पन्न वाग्भवेश्वरी का ध्यान करें। यथा—

**पीतां पीताम्वरां पीतस्रग्विभूषानुलेपनाम् ।**
**तडित्कोटिसमाभासां बालामक्षस्रगुज्ज्वलाम् ।।**
**पुस्तकाभयकराम्भोजां वह्निपीठे निषेदुषीम् ।**
**वाग्मिनीं वाग्भवोद्भूतां त्रीक्षणां सुस्मितां स्मरेत् ।।**

तत्पश्चात क ५ त्रिपुरा वागीश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः से गन्ध-पुष्प-अक्षत से तीन बार पूजन करें।

'ऐं त्रिपुरादेवि विद्महे वाग्भवेश्वरि धीमहि तन्नो मुक्तिः प्रचोदयात्, श्री त्रिपुरा वागीश्वरी श्री पादुकायै अर्घ्यं कल्पयामि स्वाहा' से वाग्भव गायत्री का उच्चारण कर तीन बार अर्घ्याञ्जलि को ऊपर की ओर फेंक कर पुनः प्रथम कूट का उच्चारण कर 'त्रिपुरा वागीश्वरी श्रीपादुकां तर्पयामि नमः' से तीन बार तर्पण कर श्री गुरुपादुका मन्त्र का ध्यान कर तीन बार प्राणायाम कर मातृका न्यास करें। फिर ऋष्यादि करषडङ्गन्यास कर क ५ वाग्भवेश्वरि विद्महे, ह ६ कामेश्वरि च धीमहि स ४ तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्'– ऐसी तुरीय गायत्री का, फिर ऐं त्रिपुरादेवि विद्महे वाग्भवेश्वरि धीमहि तन्नो मुक्तिः प्रचोदयात्' ऐसी वाग्भव कूट गायत्री का और फिर मूलविद्या का फिर वाग्भव कूट का यथा शक्ति जप करें।

## नाथ पारायण

प्रातः सन्ध्या के पश्चात् नाथ पारायण का संकल्प लेकर ध्यान का पारायण करें।

मूलाधार स्थित चतुर्दल कमल में विद्युत्पटल के समान भासुर वर्णवाली, पुष्पवाण, इक्षुकोदण्ड, पाश और अंकुश धारण करने वाली, युगाक्षर और नित्याक्षरमयी भगवती के चारों ओर अपने करों में ज्ञानमुद्रा और वरमुद्रा को धारण किये हुये वाग्भव बीज 'ऐं' की उपासना में तत्पर मूल पङ्कजस्थित योनिमण्डल में नवनाथों का ध्यान करें। यथा–

प्रातर्मूलाधारगते कमले वह्निमण्डले ।
वाग्बीजरूपां नित्यां तां विद्युत्पटल भासुराम् ॥
पुष्पबाणेक्षुकोदण्ड - पाशांकुश - लसत्कराम् ।
स्वेच्छा गृहीतवपुषां युगनित्याक्षरात्मिकाम् ॥
घटिकावरणोपेतां परितः प्राञ्जलीनथ ।
ज्ञानमुद्रावरकरान् वाग्भवोपास्ति-तत्परान् ॥
नवनाथान् स्मरेन्मूलपङ्कजे योनिमण्डले ॥

इस प्रकार ध्यान कर देवीमान वर्ष, मास, और दिवस पूर्वक नाथ पारायण करें । यथा––

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क १५ डं. अं अ ऊं विजया हंसः अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ह्रीं श्रीं अं प्रकाशानन्दनाथरूपिणी श्री महात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

४ क १५ डं. अं अ ऊं विजया हंसः लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः ह्रीं श्रीं लृं विसर्शानन्दनाथरूपिणी श्री महात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

४ क १५ डं. अं अ ऊं विजया हंसः कं खं गं घं डं. ह्रीं श्रीं कं आनन्दानन्दनाथरूपिणी श्री महात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

४ क १५ डं. अं अ ऊं विजया हंसः चं छं जं झं ञं ह्रीं श्रीं चं ज्ञानानन्दनाथरूपिणी श्री महात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

४ क १५ डं. अं अ ऊं विजया हंसः टं ठं डं ढं णं ह्रीं श्रीं टं सत्यानन्दनाथरूपिणी श्री महात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

४ क १५ डं. अं अ ऊं विजया हंसः तं थं दं धं नं ह्रीं श्रीं तं पूर्णानन्दनाथरूपिणी श्री महात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

४ क १५ ङ. अं अ ऊं विजया हंसः पं फं बं भं मं ह्रीं श्रीं पं स्वभावानन्दनाथरूपिणी श्री महात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

४ क १५ ङ. अं अ ऊं विजया हंसः यं रं लं वं शं ह्रीं श्रीं शं यं प्रतिभानन्दनाथरूपिणी श्री महात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

४ क १५ ङ. अं अ ऊं विजया हंसः षं सं हं लं क्षं ह्रीं श्रीं पं सुभगानन्दनाथरूपिणी श्री महात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

इस प्रकार नवनाथात्मिका मूलविद्या का जप करें। इसके उपरान्त यथाशक्ति तद्दिन नित्यविद्या का भी जप करें।

इस प्रकार नाथ पारायण समाप्त हो जाता है।

## घटिका पारायण

संकल्प में घटिका पारायण का योग कर देना चाहिये।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क १५ ङ. अं अ ऊं विजया हंसः यकारादि घटिकारूपिणी महात्रिपुरसुन्दरीं पूजयामि नमः।

क १५ ङ. अं अ ऊं विजया हंसः रकारादि घटिकारूपिणी महात्रिपुरसुन्दरीं पूजयामि नमः।

क १५ ङ. अं अ ऊं विजया हंसः लकारादि घटिकारूपिणी श्री महात्रिपुरसुन्दरी पूजयामि नमः।

इसी प्रकार क्षकारादि पर्यन्त तत्पश्चात् अकारादि से क्षकारादि पर्यन्त कर लेना चाहिये।

घटिका पारायण अ ए च त य के क्रम से आरम्भ होता है। यहां य से जो वर्ष के प्रथम दिन की घटिका थी, उसी क्रम से लिख दिया गया है। इसी प्रकार उपर्युक्त क्रम से घटिका पारायण कर लेना चाहिये।

## उपस्थान

त्रिपुरा सर्वरूपाणि चराणि स्थावराणि च ।
सायं प्रातस्तु मध्याह्ने सर्वदा सा परा स्थिता ॥
उत्तमे शिखरे जाते भूम्यां पर्वतमूर्धनि ।
ब्राह्मणेभ्योऽभ्यनुज्ञाता गच्छ देवि यथा सुखम् ॥

गुं गुरुभ्यो नमः । दुं दुर्गायै नमः । गं गणपतये नमः । क्षं क्षेत्रपालाय नमः । सं सरस्वत्यै नमः । पं परमात्मने नमः ।

श्रीशिवाचार्यवर्याद्यां शंकराचार्य मध्यमाम् ।
अस्मदाचार्यपर्यन्तां वन्दे गुरु परम्पराम् ॥
दिव्य श्रीपादुकां ध्यात्वा परितुष्याम्यहं सदा ।
श्रीगुरुं परमं वन्दे पश्चात्तं परमं गुरुम् ॥
परमेष्ठि गुरुं वन्दे परापर गुरुं भजे ।
आनन्दाख्य गुरुं वन्दे तच्छिष्यस्तत्कृपावशः ॥

सम्प्रदाय क्रम से श्रीनाथ आदि की पूजा कर परमेष्ठिगुरु परापरगुरु परमगुरु व गुरु के नाम के आगे आनन्दनाथ शब्द जोड़कर उच्चारण करें । –आनन्द स्वचछन्द चिद्रूपानन्द गोत्रः अमुकानन्दनाथ अमुक शर्माऽहं भो अभिवादये ।

इति प्रातः सन्ध्या विधिः

## मध्याह्निक संध्या

प्राणायाम से सूर्य तर्पण तक प्रातः सन्ध्या के समान करें ।

अनाहत में मूलविद्या के द्वितीय कूट को रक्तवर्ण जैसा ध्यान करें । उस तेज को सुषुम्नामार्ग से ब्रह्मरन्ध्र में ले जाकर बहते हुये नासापुट के मार्ग से निकाल कर सूर्यमण्डल में आवाहन कर कामेश्वरी का ध्यान करें । यथा–

रक्तां सुरक्ताम्बरभूषणाढ्यां, पाशाङ्कुशाभीतिवरान् दधानाम् ।
शुचिस्मितामुत्कटयौवनाढ्यां, कामेश्वरीं संस्मरेत् त्रिनेत्राम् ॥

'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ६ त्रिपुरा कामेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः' । इस मंत्र से तीन बार पूजन कर 'क्लीं त्रिपुरादेवि विद्महे कामेश्वरि च धीमहि तन्नः क्लिन्ना प्रचोदयात्' से कामराज कूट गायत्री का उच्चारण कर 'श्री त्रिपुरा कामेश्वरी श्री पादुकायै अर्घ्यं कल्पयामि नमः' से तीन बार अर्घ्याञ्जलि देकर फिर कामराज कूट का उच्चारण कर 'श्री त्रिपुरा कमेश्वरी श्रीपादुकां तर्पयामि नमः' से तीन बार तर्पण कर श्रीगुरुपादुकाओं का ध्यान कर तीन बार प्राणायाम कर पहिले की भांति मातृकान्यास कर फिर ऋष्यादि कर षडङ्गन्यास करें। फिर '४ क ५ वाग्भवेश्वरि विद्महे, ह ६ कामेश्वरि च धीमहि स ४ तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्' से तुरीय गायत्री का फिर 'क्लीं त्रिपुरादेवि विद्महे कामेश्वरि च धीमहि तन्नः क्लिन्ना प्रचोदयात्' से कामराज कूट गायत्री का फिर मूलविद्या का फिर कामराज कूट का यथाशक्ति जप करें।

## तत्व पारायण

संकल्प में तत्व पारायण का योग कर देना चाहिये।

## ध्यान

**मध्याह्ने हृदयाम्भोज कर्णिके सूर्यमण्डले।**
**कामराजात्मिकां देवीमलक्त कुसुमारुणाम्॥**
**प्रसून बाण पुंड्रेक्षु चाप पाशांकुशान्विताम्।**
**परितः स्वात्ममुख्याभिः षट्त्रिंशत्तत्वशक्तिभिः॥**
**रक्त माल्याम्बरालेपभूषाभिः परिवारिताम्।**
**युग नित्याक्षरमयीं घटिका वरणां स्मरेत्॥**

इस प्रकार देवी का ध्यान कर तत्व पारायण करें।

४ क १५ ङं अं अ ऊं विजया हंसः अं शिवतत्व स्वरूपिणी श्री महात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

४ क १५ ङं अं अ ऊं विजया हंसः कं शक्तितत्व स्वरूपिणी श्री महात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

४ क १५ ङं अं अ ऊं विजया हंसः खं सदाशिवतत्व स्वरूपिणी श्री महात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

इसी प्रकार 'क १५ ङं अं अ ऊं विजया हंसः क्षं पृथ्वीतत्व स्वरूपिणी श्री महात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः' तक कर लेना चाहिये।

अं कं से लेकर लं क्षं पर्यन्त शिवशक्ति सदाशिव आदि से पृथ्वीतत्व पर्यन्त तत्व पारायण उपर्युक्त क्रिया से किया जाता है।

अब उपस्थान प्रातः सन्ध्यावत् करें।

**त्रिपुरा सर्वरूपाणि - - - - अभिवादये।**

इति मध्याह्निक विधि

**सायं सन्ध्या**

प्राणायाम आदि से सूर्यतर्पण पर्यन्त प्रातः सन्ध्या की भांति करें। फिर आज्ञाचक्र में (ह क्ष) के बीच में मूलविद्या के तृतीय कूट को शुद्ध स्फटिक वर्ण जैसा ध्यान कर उस तेज को सुषुम्ना के मार्ग से ब्रह्मरन्ध्र में लेजाकर बहते हुये नासापुटाकाश में स्थित सोममंडल का आवाहन कर उससे उत्पन्न अमृतेश्वरी वृद्धा का ध्यान करें। यथा–

शुक्लाम्बरा लेपस्रग्विभूषा विभूषिताम्।
जटाजूटत्रयां नेत्रत्रयोद्भासि मुखाम्बुजाम्॥
ईषस्फुटित दंष्ट्रां च भैरवीरुपमास्थिताम्।
जरापलित संकीर्णां लम्बमान पयोधराम्॥
पाशाङ्कुशौ पुस्तकं च स्फटिकाक्षस्रजं करैः।
दधानां शक्तिबीजोत्थां पूर्णेन्दोर्मण्डले स्थिताम्॥
ध्यायेदाद्यां पराशक्ति शक्तिमद्भिर्निषेविताम्।
भोगमोक्षप्रदां शान्तामनन्तामभृतेश्वरीम्॥

अर्थात् पूर्णेन्दुमण्डल में शक्तिवीज से समुत्थित, शुक्लवस्त्रा, शुक्लालंकारयुक्त, तीन नेत्र और तीन जटाजूटवाली भैरवी रूप में स्थित जरा से पलित, लटकते हुये पयोधरोंवाली आद्यापराशक्ति भोगमोक्षप्रदा शान्ता अमृतेश्वरी का ध्यान करना चाहिये।

ऐं ह्लीं श्रीं स ४ श्री त्रिपुराऽमृतेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः– इस मंत्र से तीन बार पूजन कर फिर सौः 'त्रिपुरादेवि विद्महे शक्तीश्वरि च धीमहि तन्नोऽमृता प्रचोदयात्' – इस तीसरी गायत्री का उच्चारण कर 'श्री त्रिपुराऽमृतेश्वरी श्री पादुकायै अर्घ्यं कल्पयामि स्वाहा' इस मंत्र से तीन बार अर्घ्याञ्जलि देकर फिर शक्तिकूट का उच्चारण कर 'श्री त्रिपुराऽमृतेश्वरी श्रीपादुकां तर्पयामि नमः' इस मंत्र से तीन बार तर्पण कर श्री गुरुपादुकाओं का ध्यान कर तीन बार प्राणायाम करें। फिर पहिले की भांति मातृकान्यास कर पुनः ऋष्यादि- कर- षडङ्गन्यास करें तत्पश्चात '४ क ५ वाग्भवेश्वरि विद्महे ह ६ कामेश्वरि च धीमहि स ४ तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्'। इस तुरीय गायत्री को तथा 'सौः त्रिपुरादेवि विद्महे शक्तीश्वरि च धीमहि तन्नोऽमृता प्रचोदयात्' इस शक्तिकूट गायत्री का फिर मूलविद्या का फिर शक्तिकूट का जप करें।

सन्ध्या के पश्चात् तिथि नित्या के पारायण का संकल्प कर पारायण करें।

### नित्या पारायण

संकल्प में तिथि नित्या पारायण का योग कर देना चाहिये।

१ ४ क १५ ङ. अं अ ऊं विजया हंसः अं ऐं सकल ह्लीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे सौः अं कामेश्वरी-नित्यारूपिणी श्री महात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

२ ४ क १५ ङ. अं अ ऊं विजया हंसः आं ऐं भगभुगे भगिनि भगोदरि भगमाले भगावहे भगगुह्ये भगयोनि भगनिपातिनि सर्वभग वशंकरि भगरूपे नित्यक्लिन्ने भगस्वरूपे सर्वाणि भगानि मे ह्यानय वरदे रेते सुरेते भगक्लिन्ने क्लिन्नद्रवे

क्लेदय द्रावय अमोघे भगविच्चे क्षुभ क्षोभय सर्वसत्वान् भगेश्वरि ऐं व्लूं जें व्लूं में व्लूं मों व्लूं हें व्लूं क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानय स्त्रीं हर व्लें ह्लीं आं भगमालिनी नित्यारूपिणी श्री महात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

३ ४ क १५ डं. अं अ ऊं विजया हंसः इं ओं ह्लीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा इं नित्यक्लिन्ना नित्यारूपिणी श्री महात्रिपुर-सुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

४ ४ क १५ डं. अं अ ऊं विजया हंस ईं ओं क्रों भ्रों क्रों झ्रों छ्रों ज्रों स्वाहा ईं भेरुण्डा नित्यारूपिणी श्री महात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

५ ४ क १५ डं. अं अ ऊं विजया हंसः उं ओं ह्लीं वह्निवासिन्यै नमः उं वह्निवासिनी नित्यारूपिणी श्री महात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

६ ४ क १५ डं. अं अ ऊं विजया हंसः ऊं ह्लीं क्लिन्ने ऐं क्रों नित्य मदद्रवे ह्लीं ऊं महावज्रेश्वरी नित्यारूपिणी श्री महात्रिपुर-सुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

७ ४ क १५ डं. अं अ ऊं विजया हंसः ऋं ह्लीं शिवदूत्यै नमः ऋं शिवदूती नित्यारूपिणी श्री महात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

८ ४ क १५ डं. अं अ ऊं विजया हंसः ऋं ओं ह्लीं हुं खे च छे क्षः स्त्रीं हुं क्षें ह्लीं फट् ॠ त्वरिता नित्यारूपिणी श्री महा-त्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

९ ४ क १५ डं. अं अ ऊं विजया हंसः लृं ऐं क्लीं सौः लृ कुलसुन्दरी नित्यारूपिणी श्री महात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

१० ४ क १५ डं. अं अ ऊं विजया हंसः लृं ह् स् क् ल् र् डैं, ह् स् क् ल् र् डीं ह् स् क् ल् र डौः लृं नित्या नित्यारूपिणी श्री महात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

११ ४ क १५ ङ. अं अ ऊं विजया हंसः ऐं ह्लीं फ्रें स्रूं कों आं क्लीं ऐं ब्लूं नित्यमदद्रवे हुं फ्रें ह्लीं ऐं नीलपताका नित्यारूपिणी श्री महात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१२ ४ क १५ ङ. अं अ ऊं विजया हंसः ऐं भ्मूदूं ऐं विजया नित्यारूपिणी श्री महात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१३ ४ क १५ ङ. अं अ ऊं विजया हंसः ओं स्वौं ओं सर्वमंगला नित्यारूपिणी श्री महात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१४ ४ क १५ ङ. अं अ ऊं विजया हंसः औं ओं नमो भगवति ज्वालामालिनि देवदेवि सर्वभूत संहारकारिके सर्व वेदसि ज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्लां ह्लीं र र र र र र र हुं फट् स्वाहा औं ज्वालामालिनी नित्यारूपिणी श्री महात्रिपुर-सुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१५ ४ क १५ ङ. अं अ ऊं विजया हंसः अं च्कौं अं चित्रा नित्या-रूपिणी श्री महात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१६ ४ क १५ ङ. अं अ ऊं विजया हंसः अः क १५ अः ललिता महानित्यारूपिणी श्री महात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

अव उपस्थान प्रातः सन्ध्यावत् करें–

**त्रिपुरा सर्वरूपिणि ---- अभिवादये ॥**

## तुरीय सन्ध्या

प्राणायाम आदि से, तत्व आचमन-पर्यन्त प्रातः सन्ध्यावत् करें।

सहस्रार कमल में पद्मराग के समान प्रभावाले मूलविद्या के त्रयोदशाक्षर रूपतुरीयकूट का ध्यान कर बहते हुये नासापुट तारक-मण्डल में परमाकाश में आवाहन कर उससे उत्पन्न तेजरूप भगवती का ध्यान करें।

'ह स क ल ह स क ह ल स क ल ह्रीं, इस तुरीय कूट का उच्चारण कर 'श्री महात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः, इस मंत्र से तीन बार पूजन कर फिर 'क ५ वाग्भवेश्वरि विद्महे ह ६ कामेश्वरि च धीमहि स ४ तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्' – इस तुरीय गायत्री का उच्चारण करें। फिर 'श्री महात्रिपुरसुन्दरी श्री पादुकायै अर्घ्यं कल्पयामि स्वाहा' इस मंत्र से तीन बार अर्घ्य देकर फिर तुरीय कूट का उच्चारण कर 'श्री महात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां तर्पयामि' इस मंत्र से तीन बार तर्पण कर श्री गुरुपादुका का उच्चारण कर फिर तुरीय गायत्री का फिर मूलविद्या का फिर तुरीय कूट का यथाशक्ति जप करें।

## नाम पारायण

सन्ध्या के पश्चात् नाम पारायण का संकल्प कर नाम पारायण का ध्यान करना चाहिये। यथा–

**रक्तां रक्ताम्बरां रक्तस्रग्विभूषानुलेपनाम् ।**
**पाशांकुशेक्षु - कोदण्ड - प्रसून - विशिखां स्मरेत् ॥**

इस प्रकार हृदय में कालनित्या का ध्यान कर पुनः हृदय में कालचक्र के मध्य में श्री चक्र की भावना कर काल नित्याओं से वेष्टितपाश, अंकुश, इक्षु, कोदण्ड को धारण करने वाली रक्तवर्णा रक्ताम्बरा, रक्तमाल्यविभूषणा महात्रिपुरसुन्दरी का ध्यान करें।

**आई पल्लवितैः परस्परयुतैर्द्वित्रिक्रमादक्षरैः ।**
**काद्यैः क्षांतगतैः स्वरादिभिरथ क्षांतैश्चतैः सस्वरैः ॥**
**नामानि त्रिपुरे भवन्ति खलु यान्यत्यन्तगुह्यानिते ।**
**तेभ्यो भैरवपत्नि विंशतिसहस्रेभ्यः परेभ्यो नमः ॥**

निम्नलिखित प्रत्येक मंत्र के आदि में ४ क-१५ ङ. अं अ ॐ विजया हंसः और अन्त में हंसः जोड़कर पारायण करें। यथा–

४ क १५ ङ. अं अ ॐ विजया हंसः अ काई हंसः ।

खाई, गाई, घाई, ङाई, चाई, छाई, जाई, झाई, ञाई, टाई, ठाई, डाई, ढाई, णाई, ताई, थाई, दाई, धाई, नाई, पाई, फाई, बाई, भाई, माई, याई, राई, लाई, वाई, शाई, षाई, साई, हाई, ळाई, क्षाई। अर्थात्–

४ क १५ ङ. अं अ ऊं विजया हंसः अ काई हंसः से अ क्षाई हंसः तक=३५

४ क १५ ङ. अं अ ऊं विजया हंसः आ काई हंसः से आ क्षाई हंसः तक=३५

४ क १५ ङ. अं अ ऊं विजया हंसः इ काई हंसः से इ क्षाई हंसः तक=३५

४ क १५ ङ. अं अ ऊं विजया हंसः ई काई हंसः से ई क्षाई हंसः तक=३५

इसी प्रकार क्रम से ......अः काई हंसः से अः काई हंसः तक ३५×१६=५६०।

यह पहिले दिन का नाम पारायण हुआ।

दूसरे दिन का पारायण–

४ क १५ ङ. अं अ ऊं विजया हंसः अ क काई हंसः से अ क क्षाई हंसः तक=३५

४ क १५ ङ. अं अ ऊं विजया हंसः आ क काई हंसः से आ क क्षाई हंसः तक=३५

इसी प्रकार क्रम से ४ क १५ ङ. अं अ ऊं विजयो हंसः अः क काई हंसः से अः क क्षाई हंसः तक=३५×१६=५६०।

तीसरे दिन का पारायण–

४ क १५ ङ. अं अ ऊं विजया हंसः अ ख काई हंसः से अ ख क्षाई हंसः=३५

४ क १५ ङ. अं अ ऊं विजया हंसः आ ख काई हंसः से आ ख क्षाई हंसः=३५

इसी प्रकार क्रम से ४ क १५ ङ. अं अ ऊं विजया हंसः अः ख काई हंसः से अः ख क्षाई हंसः। ३५×१६=५६०

इसी प्रकार क्रम से ३६ दिनों का पारायण समझ लेना चाहिये ३६ दिन के ५६०×३६=२०१६० नाम हुये।

यदि पहिले दिन के नाम पारायण में ४ क १५ ङ. अं अ ऊं विजया हंसः अ आ ई हंसः से अ क्षाई हंसः तक=३६ के क्रम से प्रारम्भ किया जावे तो पहिले दिन ५७६ नाम हुये और इसी प्रकार ३६ दिन के २०७३६ नाम हुये।

## मंत्र पारायण

**माया कुण्डलिनी क्रियामधुमती काली कला मालिनी।**
**मातङ्गी विजया जया भगवती देवी शिवा शाम्भवी॥**
**शक्तिः शङ्करवल्लभा त्रिनयना वाग्वादिनी भैरवी।**
**ह्रीं कारी त्रिपुरा परापरमयी माता कुमारी ह्यसि॥**

माया=ह्रीं, कुण्डलिनी=ऐं, क्रिया=क्लीं मधुमती=मातृकावर्ण, मातृका चार प्रकार से ली जाती हैं।

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | शुद्ध मातृका | अ आ | ल क्ष पर्यन्त |
| २ | बिन्दुयुक्त | अं अं | लं क्षं पर्यन्त |
| ३ | विसर्गयुक्त | अः आः | लः क्षः पर्यन्त |
| ४ | बिन्दु विसर्गयुक्त | अंः आंः | लंः क्षंः पर्यन्त |

शक्तिः=सौः शंकरवल्लभा=ह्स्रीं त्रिनयना=वौषट्, वाग्वादिनी=वद-वद वाग्वादिनी स्वाहा भैरवी=ह्स्रैं, ह्स्क्लरीं ह्स्रौः, ह्रींकारी=ह्रीं, त्रिपुरा=क १५, परापरमयी=ह्सौः स्हौः, माता=ह् स् क् ल् र् डीं, ह् स् क् ल् र् डौः कुमारी=ऐं क्लीं सौः। इस प्रकार से जप करना चाहिये।

४ क १५ ङ. अं अ ऊं विजया हंसः ह्रीं अ काली ऐं क्लीं सौः से आरम्भ करके ४ क १५ ङ. अं अ ऊं विजया हंसः ह्रीं क्ष काली ऐं क्लीं सौः पर्यन्त ५१ बार शुद्ध मातृका सहित जप करें।

तत्पश्चात्–

४ क १५ ङ. अं अ ऊं विजया हंसः अं काली ऐं क्लीं सौः से आरम्भ कर ४ क १५ ङ. अं अ ऊं विजया हंसः ह्रीं क्षं काली ऐं क्लीं सौः पर्यन्त ५१ बार सबिन्दु मातृका सहित जप करें।

तत्पश्चात्–

४ क १५ ङ. अं अ ऊं विजया हंसः ह्रीं अः काली ऐं क्लीं सौः से आरम्भ कर, ४ क १५ ङ. अं अ ऊं विजया हंसः ह्रीं क्षः काली ऐं क्लीं सौः पर्यन्त ५१ बार विसर्गयुक्त मातृका का जप करें।

तत्पश्चात्–

४ क १५ ङ. अं अ ऊं विजया हंसः ह्रीं अंः काली ऐं क्लीं सौः से आरम्भ कर, ४ क १५ ङ अं अ ऊं विजया हंसः ह्रीं क्षंः काली ऐं क्लीं सौः पर्यन्त विदु विसर्गयुक्त मातृका का ५१ बार जप करें।

इस प्रकार ह्रीं बीजयुक्त कुल २०४ बार जप करें।

तदुपरान्त इसी प्रकार (जहाँ पर ह्रीं सम्पुट किया गया) "ऐं" बीजयुक्त ऊपर लिखे अनुसार २०४ बार जप करें। तत्पश्चात् क्लीं बीजयुक्त भी २०४ बार जप करें। इस प्रकार कुल ६१२ बार जप कालीविद्या के साथ होता है। इसी प्रकार काली के स्थान पर कला (६१२) मालिनी (६१२) मातङ्गी (६१२) विजया (६१२) शाम्भवी (६१२) का जप करें। इनका कुल ६१२० जप एक दिन का पारायण है।

२ दूसरे दिन शक्ति का मंत्र 'सौः' (जहां पर ऐं क्लीं सौः सम्पुटित है।) लगाकर दशों विद्याओं के साथ ऊपर लिखे अनुसार ६१२० बार जप करें।

३ तीसरे दिन शंकरवल्लभा का मंत्र "हस्रीं" लगाकर दशों विद्याओं के साथ ऊपर लिखे अनुसार ६१२० बार जप करें।

४ चौथे दिन त्रिनयना का मंत्र "वौषट्" लगाकर दशों विद्याओं के साथ ६१२० बार जप करें।

५ पांचवें दिन वाग्वादिनी का मंत्र "वद-वद वाग्वादिनि स्वाहा" लगाकर दशों विद्याओं के साथ ६१२० बार जप करें।

६ छठवें दिन भैरवी का मंत्र "हस्रैं हस्क्लरीं हस्रौ." लगाकर दशों विद्याओं के साथ ६१२० बार जप करें।

७ सातवें दिन ह्लींकारी का मंत्र "ह्लीं" लगाकर दशों विद्याओं के साथ ६१२० बार जप करें।

८ आठवें दिन त्रिपुरा का मंत्र "क ए ई ल ह्रीं, ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं" लगाकर दशों विद्याओ के साथ ६१२० बार जप करें।

९ नववें दिन परापरमयी का मंत्र "हसौः स्हौंः" लगाकर दसों विद्याओं के साथ ६१२० बार जप करें।

१० दसवें दिन माता का मंत्र "ह् स् क् ल् र् ड्ं, ह् स् क् ल् र् ड्ीं, ह स क ल र डौः," लगाकर दसों विद्याओं के साथ ६१२० बार जप करें। इसके बाद उपस्थान प्रातः सन्ध्यावत् करें।

## चक्रेश्वरी पारायण

नाथ पारायण के पश्चात् बहुत से साधक चक्रेश्वरी पारायण भी करते हैं। नियमानुसार चक्रेश्वरी पारायण का संकल्प करके पारायण करना चाहिये। ध्यान्–

**अरुणां करुणातरंगिताक्षीं धृतपाशांकुशचापबाणहस्ताम ।**
**अणिमादिभिरावृतां मयूखैरहमित्येव विभावयेभवानीम् ।।**

४ क १५ डं. अं अ ऊं विजया हंसः अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ह्रीं श्रीं अं आं सौः त्रिपुरा चक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

४ क १५ डं. अं अ ऊं विजया हंसः लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः त्रिपुरेशी चक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

४ क १५ डं. अं अ ऊं विजया हंसः कं खं गं घं डं. ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं सौः त्रिपुरसुन्दरी चक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

४ क १५ ङं अं अ ऊं विजया हंसः चं छं जं झं ञं ह्रीं श्रीं ह्क्लीं, ह्सौः त्रिपुरवासिनी चक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

४ क १५ ङं अं अ ऊं विजया हंसः टं ठं डं ढं णं ह्रीं श्रीं ह्सैं ह्स्क्लीं ह्सौः त्रिपुराश्रीः चक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

४ क १५ ङं अं अ ऊं विजया हंसः तं थं दं धं नं ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ब्लें त्रिपुरमालिनी चक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

४ क १५ ङं अं अ ऊं विजया हंसः पं फं बं भं मं ह्रीं श्रीं त्रिपुरासिद्धा चक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

४ क १५ ङं अं अ ऊं विजया हंसः यं रं लं वं शं ह्रीं श्रीं ह्स्रैं ह्स्क्लरीं ह्स्रौ त्रिपुराम्बा चक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

४ क १५ ङं अं अ ऊं विजया हंसः षं सं हं लं क्षं ह्रीं श्रीं क १५ (मूलं) श्री महात्रिपुरसुन्दरी चक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

चिरकाल नित्या का १०८ बार, मूल का १०८ बार, प्रथम कूट का १०८ बार जप कर, तीन प्राणायाम कर, ऋष्यादि कर-षडङ्गन्यास भी करें।

### आम्नाय पारायण

नियमानुसार आम्नाय पारायण का संकल्प करके आम्नाय पारायण करें। मास के प्रथम वर्ण के साथ प्रत्येक मंत्र का योग करें। त्रितारी दिननित्या 'आं' के वाद मूलमंत्र को जोड़कर अन्त में दुं हंसः लगाना चाहिये। ध्यान्–

**श्री नाथादि गुरुत्रयं गणपतिं पीठत्रयं भैरवं।**
**सिद्धौघं बटुकत्रयं पदयुगं दूतीक्रमं मंडलम्॥**
**वीरान्द्व्यष्ट चतुष्कषष्टिनवकं वीरावली पञ्चकम्।**
**श्रीमन्मालिनि मंत्रराजसहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम्॥**

१ पूर्वाम्नाय की निम्नलिखित एकादश शक्तियों का जप करना चाहिये।–

(१) शुद्धविद्या (२) बाला (३) द्वादशार्धा (४) हसन्तिका (५) मातङ्गी (६) शुक (७) सारिका (८) वीणा (९) वेणु (१०) लघुश्यामा (११) पूर्वाम्नाय समयेश्वरी ।

२ दक्षिणाम्नाय में ६ शक्तियों का जप करना चाहिये ।

(१) सौभाग्यविद्या (२) वगला (३) वाराही (४) वटुक (५) तिरस्करिणी (६) दक्षिण समयेश्वरी ।

३ पश्चिमाम्नाय में ५ शक्तियों का जप करना चाहिये ।

(१) लोपामुद्रा (२) भुवनेश्वरी (३) अन्नपूर्णा (४) महा कामकला (५) पश्चिमाम्नाय समयेश्वरी ।

४ उत्तराम्नाय में ६ शक्तियों का जप करना चाहिये ।

(१) तुरीयाम्बा (२) महार्धाम्बा (३) अश्वारूढ़ा (४) मिश्राम्बा (५) वाग्वादिनी (६) समयेश्वरी (उत्तराम्नाय की)

५ ऊर्ध्वाम्नाय में ८ शक्तियों का जप करना चाहिये ।

(१) पराप्रसाद (२) पराभट्टारिका (३) पराशाम्भवी (४) पराषोडशी (५) महाषोडशी (६) अनुत्तरअम्बिका (७) कालकर्षिणी (८) समयेश्वरी (ऊर्ध्वाम्नाय की)

**श्री रमा पारायण**

श्रीं रमा, कमला, महालक्ष्मी आदि नामों से साधना शास्त्रों में कही जानेवाली महाशक्ति सौन्दर्य, ऐश्वर्य आदि प्रदान करने से दश-महाविद्याओं में एक हैं ।

**वान्तं वह्नि समारूढ़ं वामनेत्रेन्दुसंयुतम् ।**
**बीजमेतच्छ्रियः प्रोक्तं चिन्तारत्नमिवापरम् ॥**

इस (श्रीं) मंत्र के दृष्टा भृगु ऋषि, निचृच्छंद, श्री देवता हैं। 'ध्यानं विना भवेन्मूक:' ध्यान के बिना साधक मूक के सदृश है। जिससे उपास्य तत्व अपने समस्त गुणों को प्रकट कर साधक के अभीष्ट को पूर्ण करता है। उसे ध्यान कहा जाता है। स्वर्ण समान कान्तिवाली, चार श्वेत हाथियों द्वारा सूंड में धारण किये हुये सोने के चार घड़ों से अभिषिक्त होती हुई, दो हाथों में दो कमल एवं दूसरे दो हाथों में वराऽभय धारण किये हुये, सुन्दर कमलासन पर आसीन श्री रमा का ध्यान करना चाहिये।

जप पूजन होम आदि शास्त्रीय विधान के अनुसार पुरश्चरण करके श्री का साक्षात्कार साधक को प्रथम करना चाहिये। मन्त्र के वैशिष्ट्यार्थ की अभिव्यक्ति के लिये पारायण आवश्यक है।

सौभाग्य तंत्र में लिखा है– अब तैतीसवां रमा पारायण कहता हूँ जिसको करके साधक कुबेर के सदृश हो जाता है। साधक अपना नित्यकर्म करने के पश्चात् एकान्त पवित्र स्थान में पारायण का संकल्प करें। भूतशुद्धि एवं भूशुद्धि करने के पश्चात् ऋष्यादि न्यास करें। हृदय मार्ग में स्फुरित होती हुई श्री रमा का ध्यानोक्त विधि से चिन्तन करें। मानसिक पूजन के पश्चात योनिमुद्रा से प्रणाम करें। इसके पश्चात प्राणायाम करके पारायण का जप आरम्भ करें ॥४॥ अं श्रीं आं श्रीं से आरम्भ कर क्षं श्रीं छत्तीस वर्णों को षोडश स्वर के क्रम से जोड़ कर इस क्रम से जपें। ५७६। ॥९२१६॥ संख्या पारायण की होती है। ९७९२॥ गुरु मुख से अभ्यास करना चाहिये।

अब भुवनेश्वरी का चौतीसवां पारायण लिखता हूँ। विशेषतापूर्वक समझ कर रमा वीज के स्थान पर भुवनेश्वरी वीज (ह्रीं) को जोड़ना चाहिये।

अब कामेश्वरी का पैंतीसवां पारायण कहता हूँ। यहाँ भी रमा वीज के स्थान पर कामेश्वरी वीज - (क्लरीं) लगाना चाहिये। शेष रमा पारायण की तरह ही विधि करना चाहिये ॥९७९२॥ इसको कामेश्वरी प्रासाद नामक पारायण कहा जाता है, इसके प्रभाव से साधक सम्पूर्ण भोगों को भोगने वाला होता है। तथा सर्वसिद्धि को प्राप्त होता है ॥१३॥ इस प्रकार ये तीनों पारायण क्रम से करना चाहिये।

१ अ अं श्रीं से अ अ अः श्रीं तक = १६, क अं श्रीं से क अः श्रीं तक = १६, ख अं श्रीं से ख अः श्रीं तक = १६, इसी प्रकार क्षं तक ३६ × १६ = ५७६

२ अ अ अं श्रीं से अ अ अः श्रीं तक = १६, क अ अं श्रीं से क अ अः श्रीं तक = १६, ख अ अः श्रीं से ख अ अः श्रीं तक = १६, इसी प्रकार क्षं तक ३६ × १६ = ५७६

३ अ आ अं श्रीं से अ आ अः श्रीं तक = १६, क आ अं श्रीं से क आ अः श्रीं तक = १६, ख आ अं श्रीं से ख आ अः श्रीं तक = १६, इसी प्रकार क्षं तक ३६ × १६ = ५७६

४ अ इ अं श्रीं से अ इ अः श्रीं तक = १६, क इ अं श्रीं से क इ अः श्रीं तक = १६, ख इ अं श्रीं से ख इ अः श्रीं तक = १६, इसी प्रकार क्षं तक ३६ × १६ = ५७६

५ अ ई अं श्रीं से अ ई अः श्रीं तक = १६, क ई अं श्रीं से क ई अः श्रीं तक = १६, ख ई अं श्रीं से ख ई अः श्रीं तक = १६, इसी प्रकार क्षं तक ३६ × १६ = ५७६

६ अ उ अं श्रीं से अ उ अः श्रीं तक = १६, क उ अं श्रीं से क उ अः श्रीं तक = १६, ख उ अं श्रीं से ख उ अः श्रीं तक = १६, इसी प्रकार क्षं तक ३६ × १६ = ५७६

७ अ ऊ अं श्रीं से अ ऊ अः श्रीं तक = १६, क ऊ अं श्रीं से क ऊ अः श्रीं तक = १६, ख ऊ अं श्रीं से ख ऊ अः श्रीं तक = १६, इसी प्रकार क्षं तक ३६ × १६ = ५७६

८ अ ऋ अं श्रीं से अ ऋ अः श्रीं तक = १६, क ऋ अं श्रीं से क ऋ अः श्रीं तक = १६, ख ऋ अं श्रीं से ख ऋ अः श्रीं तक = १६, इसी प्रकार क्षं तक ३६ × १६ = ५७६

९ अ ॠ अं श्रीं से अ ॠ अः श्रीं तक = १६, क ॠ अं श्रीं से क ॠ अः श्रीं तक = १६, ख ॠ अं श्रीं से ख ॠ अः श्रीं तक = १६, इसी प्रकार क्षं तक ३६ × १६ = ५७६

१० अ ऌ अं श्रीं से अ ऌ अः श्रीं तक = १६, क ऌ अं श्रीं से क ऌ अः श्रीं तक = १६, ख ऌ अं श्रीं से ख ऌ अः श्रीं तक = १६, इसी प्रकार क्षं तक ३६ × १६ = ५७६

११ अ ॡ अं श्रीं से अ ॡ अः श्रीं तक = १६, क ॡ अं श्रीं से क ॡ अः श्रीं तक = १६, ख ॡ अं श्रीं से ख ॡ अः श्रीं तक = १६, इसी प्रकार क्षं तक ३६ × १६ = ५७६

१२ अ ए अं श्रीं से अ ए अः श्रीं तक = १६, क ए अं श्रीं से क ए अः श्रीं तक = १६, ख ए अं श्रीं से ख ए अः श्रीं तक = १६, इसी प्रकार क्षं तक ३६ × १६ = ५७६

१३ अ ऐ अं श्रीं से अ ऐ अः श्रीं तक = १६, क ऐ अं श्रीं से क ऐ अः श्रीं तक = १६, ख ऐ अं श्रीं से ख ऐ अः श्रीं तक = १६, इसी प्रकार क्षं तक ३६ × १६ = ५७६

१४ अ ओ अं श्रीं से अ ओ अः श्रीं तक = १६, क ओ अं श्रीं से क ओ अः श्रीं तक = १६, ख ओ अं श्रीं से ख ओ अः श्रीं तक = १६, इसी प्रकार क्षं तक ३६ × १६ = ५७६

१५ अ औ अं श्रीं से अ औ अः श्रीं तक = १६, क औ अं श्रीं से क औ अः श्रीं तक = १६, ख औ अं श्रीं से ख औ अः श्रीं तक = १६, इसी प्रकार क्षं तक ३६ × १६ = ५७६

१६ अ अं अं श्रीं से अ अं अः श्रीं तक = १६, क अं अं श्रीं से क अं अः श्रीं तक = १६, ख अं अं श्रीं से ख अं अः श्रीं तक = १६, इसी प्रकार क्षं तक ३६ × १६ = ५७६

१७ अ अः अं श्रीं से अ अः अः श्रीं तक = १६, क अः अं श्रीं से क अः अः श्रीं तक = १६, ख अः अं श्रीं से ख अः अः श्रीं तक = १६, इसी प्रकार क्षं तक ३६ × १६ = ५७६

इस प्रकार एकत्र

५७६ × १७ = ९७९२

---

## अजपा जप

ॐ अस्य श्री अजपा मंत्रस्य हंसः ऋषिः अव्यक्ता गायत्री छंदः, परमात्मा देवता, हं बीजं, सः शक्तिः, सोऽहं कीलकं मोक्षार्थे जपे विनियोगः ।

**न्यासः–**

हसां हसीं इत्यादिना कर, हृदयादि न्यासः ।

ॐ भूः भुवः स्वः इति कीलकम् ।

## ध्यानम्

**अग्नी-सोम-गुरुद्वयप्रणवकं, बिन्दु त्रिनेत्रोज्वलम् ।**
**भास्वद्रूपमुखं शिवांऽघ्रियुगलं पार्श्वस्थ सूर्यानलम् ॥**
**उद्यद्भास्कर-कोटि-कोटि सदृशं हंसं जगद्व्यापिनम् ।**
**शब्दब्रह्ममयं हृदम्बुजपरे नीडे सदा संस्मरेत् ॥**

**मंत्रः-**

ॐ ह्रीं हंसः सोऽहं स्वाहा । इत्यात्माष्टाक्षरं । च हंस हंसाय विद्महे, सोऽहं हंसाय धीमहि, तन्नो हंसः प्रचोदयात् । गायत्री

जप्त्वा पूर्वं दिन-कृतमजपा-जपं समर्पयेत् ।

श्री विद्या के उपासकों को २१६०० श्वासों के जप की योजना निम्न प्रकार करना चाहिये ।

पूर्ण मंडलाक्षररूप श्वास = ५७६

एक अकार और ३५ ककार से लेकर क्षकारपर्यन्त

अं अ से अं अः तक = १६

कं अ से कं अः तक = १६

इसी प्रकार क्षं अ से क्षं अः तक

३६ × १६ = ५७६ ५७६ × ३६ = २०७३६

| | | |
|---|---|---|
| दिननित्या और विद्या की संख्या | २०७३६ | श्वास |
| प्रकाशानन्दनाथ आदि से ९ नाथ के | ९ | श्वास |
| ३६ तत्वों के | ३६ | श्वास |
| १६ नित्याओं के | १६ | श्वास |
| अ ए च त य घटिकाओं के | ६० | श्वास |
| राशियों के | १२ | श्वास |
| नवग्रह रूप | ९ | श्वास |
| आकाशादि पंचतत्व (भूत) | ५ | श्वास |
| मातृका रूप | ५० | श्वास |
| श्री चक्र में शक्तियों के संख्यानुसार | ९१ | श्वास |
| | योग = २१६०० | |

## परिशिष्ट

१ अहर्गण की साधना और उसके प्रमाण–

**कलेरारम्भ दिवसाद् वर्तमान दिनावधिः ।**
**अहर्गणस्य विज्ञानं तन्त्रमित्यभिधीयते ॥**

श. क. ३।

अर्थात कलि आरम्भ से वर्तमान दिवस गणना पर्यन्त अहर्गण के विज्ञान को तन्त्र कहते हैं। इसी के अनुसार सौभाग्य तंत्र के प्रथम पटल में यह विज्ञान बताया गया है। तथा इसका सार लेकर यहां इस प्रकार हिन्दी में निर्देश किया जाता है। जिससे ३ खं युग १८ थं परिवृति वाले पांचवे वर्ष "शुद्धविद्या" वर्ष के अहर्गण की संख्या बन जाती है।

वर्तमान शक संवत् में १७८१ को घटाकर शेष में ११३२३ से गुणा करने पर जो अंक आवें, उनमें ३१ का भाग देना चाहिये। भाग के लब्ध्याङ्क में गत संक्रान्ति के ध्रुवाङ्क को जोड़ना तथा उससे जो अंक आवें, उनमें वर्तमान संक्रान्ति के वर्तमान गत अंश को मिलावें। तदनन्तर १८११६९१ में जोड़ने से शुद्ध अहर्गण आते हैं।

१२ संक्रान्तियों के ध्रुवाङ्क इस प्रकार हैं।

| | | | |
|---|---|---|---|
| मेष – ३१ | कर्क – १२५ | तुला – २१७ | मकर – ३०५ |
| वृष – ६२ | सिंह – १५६ | वृश्चिक – २४६ | कुम्भ – ३३५ |
| मिथुन – ९४ | कन्या – १८७ | धनु – २७६ | मीन – ३६५ |

इन संक्रान्तियों में कुछ अंश भी लिये जाते हैं। तथापि तान्त्रिक क्रम में ऐसा नहीं होता अर्थात् उक्त पूर्व के ध्रुवाङ्कों से ही हिसाब लगाया जाता है।

अहर्गण वारादि के प्रमाण सौभाग्य तन्त्र के प्रथम पटल में इस प्रकार दिये गये हैं।

**वर्षशेषं रसगुणैर्भुक्ते मासास्तु ते गता।**

अर्थात् अहर्गण की संख्या में ३६ का भाग देने से गत मास सात होते हैं। दिन ३६ का मास होता है जो कि ३६ वर्ण रूप ३६ तत्वों का बोधक है।

**'सप्तभुक्ते तु शुक्रादिः स्यात'–**

७ का भाग देने से शुक्रादि वार आते हैं। इस मत में गणना शुक्रवार से होती है।

**"उदयं पञ्चभिर्हतं"**

अहर्गण की संख्या में ५ का भाग देने से प्रकाशानन्दादि नाथात्मक वार आते हैं।

**'षोडशभिः षोडशाख्यनित्यापर्यायनामतः"**

१६ से भाग देने पर षोडशनित्या नित्या के नाम से प्रसिद्ध षोडश मास आते हैं।

**'त्रिंशत्तिथि फलप्रदः'** (३ पटल)

३० का भाग देने से नित्या का ज्ञान होता है।

**'शेषं रसाद्रि इषुहते वर्षाणि'**

५७६ से भाग देने पर वर्ष, १० से भाग देने पर विद्या एवं १०० से भाग देने पर महाविद्या का ज्ञान होता है।

## मतान्तर से ७ दिन का अन्तर

उक्त गणना का एक मतान्तर भी प्रचलित है। जिसके अनुसार ७ दिन का अन्तर आता है। अहर्गण की संख्या तो एक ही है अर्थात् ५ शुद्ध विद्या वर्ष का आरम्भ १८४७८०९ से ही है तथापि उसका आरम्भ तांत्रिक पञ्चांग में फाल्गुन शुक्ल १४ तदनुसार ४ मार्च १९५८ ई० का होता है। उक्त भिन्न गणना क्रम में चैत्र कृष्ण ६ मंगलवार ११ मार्च सन् १९५८ को वर्षारम्भ माना गया है। यह भी देखने में ठीक ही प्रतीत होता है। परशुराम कल्पसूत्र की टीका में भी इसके आधार हैं। किन्तु तान्त्रिक छठे वर्ष की गणना जो दी गई है वह सौभाग्य तंत्र के अनुसार ठीक ही बैठती है। ऐसी परिस्थिति में साधकों को जो रुचिकर प्रतीत हो उसे अपनायें क्योंकि, दोनों प्रकारों का आधार भिन्न ही है।

## षट्पर्व निर्णय

१ **पुष्पिणी योग–** वर्ष के अक्षर और मास के अक्षरों के योग (एकस्वरूप) में पुष्पिणी योग होता है।

२ **कुमारिका योग–** मास के अक्षर तथा दिन के अक्षरों के योग में कुमारिका योग होता है।

३ **मोहिनी योग–** वर्ष के अक्षर तथा दिन के अक्षरों के योग में मोहिनी योग होता है।

४ **विमला योग–** मास के अक्षर एवं उदय घटी के योग में विमला योग होता है।

५ **जयन्ती पर्व–** विमला तथा वर्ष के अक्षरों के योग में।

६ **श्री करी–** केवल दिन के उदय से।

## ३ अन्य प्रधान योग

१ **सोमपान–** वर्ष मास पक्ष एवं उदय घटी के अक्षरों के योग में सोमपान योग होता है।

२ **सूर्य ग्रहण योग–** वर्ष दिन उदय घटी नाथ और मास के अक्षरों के योग में।

३ **चन्द्र ग्रहण योग–** वर्ष मास पक्ष एवं उदय घटी के योग में चन्द्रग्रहण योग होता है।

## ४ नित्या

१ **दिननित्या–** वर्ष मास और युग के तीनों अक्षरों के योग में।

२ **कालनित्या–** वर्ष मास एवं दिन के तीनों अक्षरों के योग में कालनित्या होती है।

(सौभाग्य तन्त्रे पटले २६,२७)

## ५– तान्त्रिक पञ्चाङ्ग

'तान्त्रिक पञ्चाङ्ग' का अपना विशेष महत्व है। ज्योतिष के साधारण पञ्चाङ्गों में केवल तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण और ग्रहों की स्थिति का ही ज्ञान होता है किन्तु तन्त्रोक्त पञ्चाङ्ग से प्रत्येक दिशा और काल में निवास करने वाले देवता का परिचय मिलता है। जिस प्रकार ग्रहों का प्रभाव मनुष्यों पर पड़ता है, उसी प्रकार देवताओं का प्रभाव साधना करने वाले व्यक्तियों पर पड़ता है। अतएव साधकों के लिये तान्त्रिक पञ्चाङ्ग बहुत ही उपयोगी है। इसकी सहायता से वे विधिवत् सङ्कल्प कर सकते हैं।

सामान्य साधक तान्त्रिक पञ्चाङ्ग के अभाव में सामान्य ही सङ्कल्प करते रहे हैं। किन्तु अब वे तान्त्रिक पञ्चाङ्ग की सहायता से तान्त्रिक सङ्कल्प का प्रयोग सहज ही कर सकते हैं।

यामल में लिखा है–

**अवश्यं तान्त्रिकं कालं, उल्लिखेदन्यथा शिवे।**
**बहिर्मुखं तु तत्कर्म, भवेद् भस्महुतं यथा॥**

अर्थात् तान्त्रिक पञ्चाङ्ग का उल्लेख किये बिना जो साधना की जाती है वह व्यर्थ होती है।

प्रपञ्चसार तन्त्र में भी लिखा है–

**कालात्मकस्य देवस्य राशेर्व्यक्तिमजानता।**
**कृतं समस्तं व्यर्थं अनेन ज्ञानमानिना॥**

अर्थात् कालरूपी देवता की राशि आदि जाने बिना जो कर्म किया जाता है, वह निष्फल होता है।

इस प्रकार किस किस कालविभाग में और किस दिग्विभाग में किस देवता का निवास है इसका ज्ञान होना आवश्यक है। और इसी कारण तान्त्रिकपञ्चाङ्ग का विशेष महत्व है। यह पञ्चाङ्ग अनेक प्रकार का होता है यथा– चतुरङ्ग, पञ्चाङ्ग, अष्टाङ्ग, द्वादशाङ्ग, और षोडशाङ्ग। यथा–

१ **चतुरङ्ग**– तारत्रय (ऐं ह्रीं श्रीं) १ मूलविद्या, २ वर्ष, ३ मास, ४ दिनोदय के वर्णों को जोड़कर पढ़ना होता है।

२ **पञ्चाङ्ग**– १ मूल, २ दिन, ३ वार, ४ पक्ष, ५ मास के ३६ वर्णों से युक्त करके पढ़ना होता है।

३ **अष्टाङ्ग**– १ वार, २ घटिका, ३ दिन, ४ नित्या, ५ वर्ष, ६ मास, ७ युग, ८ परिवृत्ति इनके वर्णों के साथ पढ़ना होता है।

४ **द्वादशाङ्ग**– १ वार, २ घटी, ३ युग, ४ मास, ५ पक्ष के वर्ण, ६ तिथि के वर्ण, ७ नित्या, ८ परिवृत्ति, ९ महायुग, १० पूर्ण, ११ शवल, १२ महापरिवृत्ति से द्वादशाङ्गों की योजना होती है।

५ **षोडशाङ्ग का क्रम**– १ पूर्ण, २ सत्य, ३ शबल, ४ खर्व, ५ राम, ६ महापरिवृत्ति, ७ परिवृत्ति, ८ महायुग, ९ युग, १० वर्ष, ११ मास, १२ लघुमास, १३ पक्ष, १४ दिन, १५ तिथि-नित्या, १६ वार, घटी, नक्षत्र, योग और करण इनसे षोडशाङ्ग की योजना होती है। जो सर्वश्रेष्ठ है।

सोलहवें अंग में ५ चीजें हैं। १ वार, २ घटी, ३ नक्षत्र, ४ योग, ५ करण। वार ९ तथा घटी ५ हैं जिन्हें अ, लृ, क, च, ट, त, प, य, ष (वार) और अ, ए, च, त, य (घटी) कहते हैं। इन्हें पञ्चाङ्ग में यथाक्रम लिख दिया गया है। दिन का क्रम शुक्र, चन्द्र, केतु, भूमिसुत, बुध, राहु, गुरु और शनि हैं। नक्षत्र के ३६ अक्षर हैं योग संख्या भी नक्षत्र के समान है। नक्षत्र का वर्ण-क्रम लृकार से आरम्भ होकर नकार पर्यन्त होता है। करण ऋकार से आरम्भ होकर ख पर्यन्त बारह लिये गये हैं। जिनकी एक मास में तीन आवृत्तियां होती हैं। वर्षारम्भ के क्रम में दो-दो मास की अष्टऋतुयें वसन्तादि के समान से होती हैं। जिन्हें श्रीकरी, मोहिनी, विमला हरिणी, भ्रामरी, गौरी, लक्ष्मी और कुमारिका कहते हैं। कामेश्वरी से आरम्भ करके चित्रा पर्यन्त दक्षिणायन और चित्रा से कामेश्वरी पर्यन्त उत्तरायण कहा गया है।

षोडशाङ्ग में कुछ बातें सङ्केत रूप में कही गई हैं। जैसे पूर्ण अकार, सत्य खकार, शवल हकार, खर्व हस्ख्फ्रें, राम क्लीं, महापरिवृत्ति स्हख्फ्रें, महायुगे (०) युग खकार लघुमास।

लघुमास की तिथि का क्रम अकार से क्षकार पर्यन्त है। दोनों पक्षों की पञ्चमी, दशमी, पूर्णमासी, तथा अमावस्या के दिन दो-दो अक्षर हैं जिन्हें पञ्चाङ्ग में लिख दिया गया है।

पक्ष के अनुसार तिथि के अक्षरों का क्रम भी अं से आरम्भ होकर क्ष पर्यन्त है। पञ्चमी दशमी तथा पूर्णमासी के दिन चार-चार अक्षर हैं। शेष में दो-दो अक्षर हैं। जिन्हें पञ्चाङ्ग में लिख दिया गया है।

## पञ्चाङ्ग देखने का क्रम

अहर्गण, तिथि, तिथिमान, दिनमान, लघुमास के अनुसार तिथि के अक्षर, पक्ष के अनुसार तिथि के अक्षर, दिनतत्व, तिथिनित्या, नाथ उदयघटी, नक्षत्र, योग, करण, विद्या, महाविद्या, वार, तारीख, संक्रान्ति के अंश एवं पर्व दिन।

## तान्त्रिक सन्ध्या का संकल्प

नये वर्ष के प्रथम दिन मार्गशीर्ष शुक्ल १५ संवत् २०३० शाके १८९५, दिनांक १० दिसम्बर १९७३ सोमवार का संकल्प निम्न-प्रकार होगा—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं पूर्णे, षं सत्ये, हं शवले, ह्स्ख्फ्रें खर्वे, क्लीं रामे, स्हख्फ्रें महापरिवृत्तौ, शून्यं महायुगे, खं तृतीय युगे, थं अष्टादश परिवृत्तौ, ढं बुद्धितत्वे पंचदश-वर्षे, श्री करी ऋतौ, अ कामेश्वरी मासे, तं थं दं लघुमासे, सं हं लं क्षं अं कं पक्षे, अं योगे, ऋ करणे, शिवाविद्यायां, त्रिपुरामहाविद्यायां, सोमवासरे, शाम्भव गोत्रोत्पन्न अमुकानन्द-नाथोऽहं श्री ललिता महात्रिपुरसुन्दरी प्रीत्यर्थं सन्ध्यामहं करिष्ये।

## पारायण का संकल्प

आदि गुरोःपरशिवाज्ञया प्रवर्तमानेन देवीमानेन षट्त्रिंशत्तत्वात्मक सकल प्रपञ्च सृष्टि स्थिति संहार तिरोधानानुग्रह कारिण्याः श्री पराशक्त्या ऊर्ध्व-भ्रू-विभ्रमे ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं पूर्णे, षं सत्ये, हं शबले, ह्स्ख्फ्रें खर्वे, क्लीं रामे, स्ह्ख्फ्रें महापरिवृत्तौ, थं अष्टादश परिवृत्तौ, शून्यं महायुगे, खं तृतीययुगे, ढं बुद्धितत्वे, पंचदशे वर्षे, श्री करी ऋतौ, अं कामेश्वरी मासे, तं थं दं लघु मासे, सं हं लं क्षं अं कं पक्षे, अं दिनतत्वे, ऐं तिथि नित्यायां, अं नाथे, त उदय घटिकायां, ॡ नक्षत्रे, अं योगे, ॠ करणे, शिवा विद्यायां त्रिपुरा महा विद्यायां, सोमवासरे, शाम्भव गोत्रोत्पन्न, अमुकानन्द नाथोऽहं श्री ललिता महात्रिपुरसुन्दरी प्रीत्यर्थे अमुक पारायणमहं करिष्ये ।

## काली क्रम

१ काली क्रम के अन्तर्गत जप और पूजा के संकल्प में पहले युग, परिवृत्ति, वर्ष, मास, दिवस, दिवसनित्या, वार और घटिकोदय का क्रम से उच्चारण होगा और पारायण क्रम में सबसे पहले वार, घटिकोदय, तत्व-दिवस, दिन-नित्या, तत्व-वर्ष, मास, तत्व-युग, और परिवृत्ति का यथाक्रम उच्चारण होगा, अर्थात् जिसका जप और पूजा में पहले उल्लेख किया जाता है उसका पारायण क्रम में सबसे अन्त में उल्लेख होता है ।

२ काली क्रम में ९ वार अ, ॡ, क, च, ट, त, प, य एवं ष के नव-नाथ क्रमशः इस प्रकार हैं (अ) प्रह्लादानन्दनाथ (ॡ) सकलानन्दनाथ (क) कुमारानन्दनाथ (च) वशिष्ठानन्दनाथ (ट) क्रोधानन्दनाथ (त) सुरानन्दनाथ (प) ध्यानानन्दनाथ (य) बोधानन्दनाथ (ष) शुकानन्दनाथ ।

३ काली क्रम के अनुसार १६ नित्याओं (अं आं इं ईं उं ऊं ऋ, ॠ, ऌ, ॡ एं, ऐं, ओं औं अं अः) के नाम इस प्रकार पढ़े जायेंगे ।

१–काली, २–कपालिनी, ३–कुल्ला, ४–कुरुकुल्ला,
५–विरोधिनी, ६–विप्रचित्ता, ७–उग्रा, ८–उग्रप्रभा,
९–दीप्ता, १०–नीला, ११–घना, १२–वलाका,
१३–मात्रा, १४–मुद्रा, १५–मित्रा, १६–असिता ।

पञ्चाङ्ग में कामेश्वरी, भगमालिनी आदि महीनों के स्थान पर काली क्रम के अनुसार उपर्युक्त महीनों के नाम संकल्प में जोड़ना चाहियें ।

४ दोनों क्रमों (श्री एवं काली) में षोडश मासों के नाम चन्द्र कलाओं के नाम से इस प्रकार होंगे । यथा–

१–अमृता, २–मानदा, ३–पूषा, ४–तुष्टि, ५–पुष्टि,
६–रति, ७–धृति, ८–शशिनी, ९–चंद्रिका, १०–कान्ति,
११–ज्योत्स्ना, १२–श्री, १३–प्रीति, १४–अङ्गदा,
१५–पूर्णा, १६–पूर्णामृता ।

इसके अतिरिक्त इन्हीं षोडश मासों के नाम सदाशिव कलाओं के नाम से इस प्रकार हैं । यथा–

१–निवृतिकला, २–प्रतिष्ठाकला, ३–विद्याकला,
४–शान्तिकला, ५–इन्धिकाकला, ६–दीपिकाकला,
७–रेचिकाकला, ८–मोचिकाकला, ९–पराकला,
१०–सूक्ष्माकला, ११–सूक्ष्मामृता १२–ज्ञानाकला,
१३–ज्ञानामृताकला, १४–आप्यायिनीकला, १५–व्यापिनीकला,
१६–व्योमरूपाकला ।

५ तत्व दोनों (श्री एवं काली) क्रमों के एक ही हैं ३६ तत्व ही ३६ दिन हैं जो इस प्रकार है । यथा–

| संख्या | संज्ञा | नाम | संख्या | संज्ञा | नाम |
|---|---|---|---|---|---|
| १ | अ | शिव | १९ | द | चक्षु |
| २ | क | शक्ति | २० | ध | जिह्वा |
| ३ | ख | सदाशिव | २१ | न | घ्राण |
| ४ | ग | ईश्वर | २२ | प | वाक् |
| ५ | घ | शुद्धविद्या | २३ | फ | पाणि |
| ६ | ङ | माया | २४ | ब | पाद |
| ७ | च | कला | २५ | भ | पायु |
| ८ | छ | विद्या | २६ | म | उपस्थ |
| ९ | ज | राग | २७ | य | शब्द |
| १० | झ | कला | २८ | र | स्पर्श |
| ११ | ञ | नियति | २९ | ल | रूप |
| १२ | ट | पुरुष | ३० | व | रस |
| १३ | ठ | प्रकृति | ३१ | श | गंध |
| १४ | ड | अहङ्कार | ३२ | ष | आकाश |
| १५ | ढ | बुद्धि | ३३ | स | वायु |
| १६ | ण | मन | ३४ | ह | तेज |
| १७ | त | श्रोत्र | ३५ | ल | सलिल |
| १८ | थ | त्वचा | ३६ | क्ष | भूमि |

## काली की नित्यायें

(मन्त्र एवं ध्यानसहित)

### १–काली नित्या

मंत्रः–

ॐ ह्रीं कालि कालि महाकालि कौमारि मह्यं देहि स्वाहा ।

ध्यान

श्यामवर्णा महाभीमा घोर-रावा करालिनी ।
मुण्डमाला विभूषाढ्या दक्षे खड्गे प्रविभ्रती ।
तर्जनीं धारयन् वामे नृत्यन्ती प्रेत-भूमिषु ।।

### २– कपालिनी

मंत्रः–

ॐ ह्रीं क्रीं कपालिनि महाकपाल प्रिय मानसे कपाल सिद्धि मे देहि हूं फट् स्वाहा ।

ध्यान

ध्यायेदञ्जन पुञ्जाभामापीन स्तनयुग्मकां ।
चन्द्रवस्त्रां च बिम्बौष्ठीं मुक्तकेशीं दिगम्बरां ।।
चतुर्मुण्डो परिगतां शङ्ख कङ्कण भूषिताम् ।
खड्गत्रिशूल वरदाभयान् हस्तचतुष्टये ।।

### ३– कुल्ला

मंत्रः–

ॐ क्रीं कुल्लायै नमः ।

ध्यान

चतुर्भुजां त्रिनयनां मुकुटाटोप मण्डिताम् ।
शवासन गतां कुल्लां दश मुण्डो परिस्थिताम् ॥
वराभयौ करे वामे पुस्त-स्त्रग् दक्षिणे करे ॥

४– कुरुकुल्ला

मंत्रः–

क्रीं ॐ कुरुकुल्ले क्रीं ह्रीं ममसर्वजन वशमानय क्रीं कुरुकुल्ले ह्रीं स्वाहा ।

ध्यान

ततो ध्याये महाविद्यां कुरुकुल्लां कुलेश्वरीम् ।
शवोपरि समासीनां मुण्डमाला विभूषिताम् ॥
कपाल कर्तृका हस्तां खड्ग खेटक धारिणीम् ।
अञ्जनाद्रिनिभां दिव्यां मुक्तकेशीं चतुर्भुजाम् ॥

५– विरौधिनी

मंत्रः–

ॐ क्रीं ह्रीं क्लीं हूं विरोधिनी शत्रूनुच्चाटय विरोधय शत्रु-क्षयङ्करी हूं फट् ।

ध्यान

चतुर्भुजां त्रिनयनां शवपद्मोपरिस्थिताम् ।
त्रिशिखां नाग पाशं च घण्टां च डमरुं तथा ॥
सम्बिभ्रतीं महादेवीं क्रमाद् भुजचतुष्टये ॥

## ६– विप्रचित्ता

मंत्रः–

ॐ श्रीं क्लीं चामुण्डे विप्रचित्ते दुष्ट घातिनि शत्रून्नाशय एतद्दिनावधि प्रिये सिद्धिं मे देहि हूं फट् स्वाहा।

### ध्यान

चतुर्भुजां त्रिनयनां पीनोन्नत पयोधराम् ।
दिगम्बरां मुक्तकेशीं ललज्जिह्वां भयानकाम् ।।
भीमदंष्ट्रां करालाभ्यां सृक्किणी रक्तवाहिनीम् ।
खड्ग मुण्ड कपाल त्रिशूल हस्तां महोदरीम् ।।

## ७– उग्रा

मंत्रः–

ॐ स्त्रीं हूं ह्रीं हूं फट् स्वाहा।

### ध्यान

ततो ध्यायेत्परामुग्रां प्रत्यालीढ पदस्थिताम् ।
चतुर्भुजां त्रिनयनां मुण्डमाला विभूषिताम् ।।
रक्तवर्णां मुक्तकेशीं खड्गेन्दीवरधारिणीम् ।
कपालकर्तृकाहस्तां वर-दानपरायणाम् ।।

## ८– उग्रप्रभा

मंत्रः–

ॐ हूं हूं उग्रप्रभे देवि कालि महादेवि स्वरूपं दर्शय हूं फट् स्वाहा।

ध्यान

चतुर्भुजां त्रिनयनां शवपद्मोपरिस्थिताम् ।
सुप्रसन्नमुखाम्भोजां शवमांसप्रभोजनीम् ॥
शवानां कर संघातैः कृत कांञ्चींहसन्मुखीम् ।
खड्ग मुण्ड धरां वामे दक्षे कर्पर-कर्तृके ॥

९– दीप्ता

मंत्रः–

ॐ क्रीं हूं दीप्तायै सर्व मंत्र फलदायै हूं फट् स्वाहा ।

ध्यान

चतुर्भुजां त्रिनयनां मुण्डमालाविभूषिताम् ।
शवपद्मे समासीनां पीनोन्नतपयोधराम् ॥
शवास्थिकृतकेयूरशङ्खकङ्कणभूषिताम् ।
खड्गमुण्डधरां वामे सव्येऽभयवरप्रदाम् ॥

१०– नीला

मंत्रः–

हूं हूं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हसवलमरी नीलपताके हूं फट् ।

ध्यान

भयङ्कराकृति धरां मुण्डमाला विभूषिताम् ।
रक्त चञ्चल नेत्राब्जां ललज्जिह्वांच भीषणाम् ॥
शवोपरि समासीनां नर मांसास्थि भूषणाम् ।
ध्यायेन्नीलां ज्ञानदात्रीं सर्वसिद्धि प्रदायिनीम् ॥

## ११– घना

मंत्रः–

ॐ क्लीं ॐ घनालये घनालये ह्लीं हूं फट् ।

### ध्यान

चतुर्भुजां त्रिनयनां कृष्णवर्णां च भीषणाम् ।
सद्यः कर्तित बाहूनां दधानां क्षुद्र घण्टिकाम् ॥
हस्तेषु खेटकं खड्गं पाशं मुद्गरं तथा ।
धारयन्तीं घनां ध्यायेत् रक्ताप्लाविताधराम् ॥

## १२– वलाका

मंत्रः–

ॐ क्रीं हूं ह्रीं वलाका कालि अत्यद्भुत पराक्रमे अभीष्ट सिद्धिं मे देहि हूं फट् स्वाहा ।

### ध्यान

नित्यां वलाकां ध्याये त्रिनेत्रां श्मशानवासिनीं ।
भीमाकृतिं श्यामवर्णां दधानां हस्त किंकिणीम् ॥
विकीर्ण केशैः राजन्तीं धारयन्तीं च बाहुषु ।
खड्गं मुण्डं दक्षे वामे चषकं मुद्रां तर्जनीम् ॥

## १३– मात्रा

मंत्रः–

ॐ क्रीं ह्रीं हूं ऐं १० महामात्रे सिद्धिं मे देहि सत्वरं हूं फट् स्वाहा ।

### ध्यान

शव वक्षसि भ्राजन्तीं भीषणाकार धारिणीम् ।
त्रिनेत्रैः शोभितां दिव्यां चतुर्भिर्बाहुभिस्तथा ।।
कपालं कर्त्रिकां चैव तीक्ष्णां खड्गं शिरस्तथा ।
धारयन्तीं भजे मात्रां भक्ताभीष्ट प्रदायिनीम् ।।

### १४– मुद्रा

मंत्रः–

ॐ क्रीं ह्रीं हूं प्रीं फ्रें मुद्राम्बा मुद्रा सिद्धि मे देहि श्री जगन्मुद्रा स्वरूपिणी हूं फट् स्वाहा ।

### ध्यान

ध्यायामि मुद्रां नित्यां वै मुण्डमालाविभूषिताम् ।
रुधिरेणाधरोष्ठां च प्लावयन्तीं भयङ्करीम् ।।
चतुर्भुजे कपालं च छुरिकां खड्ग-खेटकैः ।
दधानां जयदां देवीं जनानामभय-प्रदाम् ।।

### १५– मिता

मंत्रः–

ॐ क्रीं हूं ह्रीं ऐं मिते परामिते पराक्रमाय ॐ क्रीं हूं ह्रीं ऐं सोऽहं हूं फट् स्वाहा ।

### ध्यान

भीमां विकीर्णा केशां च ध्यायेन्नित्यां मितां शुभाम् ।
कृष्णवर्णां रक्तवस्त्रां शवासीनां भयानकाम् ।।
मुण्डमाला धरां दिव्यां धारयन्तीं चतुर्भुजैः ।
चन्द्रहासं मस्तकं च वरं चैवाभयं तथा ।।

## श्री १००८ श्री स्वामी जी कृत अन्य रचनायें

| | | |
|---|---|---|
| १. | श्री बगलामुखी रहस्यम् | १०-०० |
| २. | पञ्चोपनिषद् (प्रकाश भाष्य) | २-२५ |
| ३. | प्रश्नोपनिषद् (प्रकाश भाष्य) | १-०० |
| ४. | सौन्दर्य लहरी (डिण्डिम भाष्य) | ७-०० |
| ५. | शिव सूत्रं भक्ति सूत्रञ्च | ०-५० |
| ६. | नारदीय शिक्षा (संस्कृत टीका) | १-५० |
| ७. | घेरण्ड संहिता (भाषानुवाद सहित) | २-०० |
| ८. | प्रत्यभिज्ञा हृदयम् (भाषानुवाद सहित) | १-५० |
| ९. | ईश्वर-गीता (भाषानुवाद सहित) | १-५० |
| १०. | वैदिक उपदेश | ५-०० |
| ११. | पुरश्चरण पद्धति | १-५० |
| १२. | अथर्ववेदाङ्ग ज्योतिष (भाषानुवाद सहित) | १-०० |
| १३. | वेदान्त प्रबोध (सानुवाद) | २-०० |
| १४. | सौन्दर्य-लहरी (पद्यानुवाद सहित) | १-०० |
| १५. | लेख-सग्रह | ४-०० |
| १६. | सिद्धान्त-रहस्य | २-०० |
| १७. | त्रिपुर-महिम्न स्तोत्र (भाषानुवाद) | ३-०० |
| १८. | तान्त्रिक पञ्चाङ्ग | ४-०० |
| १९. | पञ्चस्तवी | ०-५० |
| २०. | महात्रिपुर सुन्दरी पूजा पद्धति | ३-०० |
| २१. | श्री चिद्विलास (श्री विद्या रहस्य) | १-०० |
| २२. | श्री पुरश्चरण | १-०० |


## श्री पीताम्बरा पीठ संस्कृत परिषद

दतिया (म. प्र.)